तरुण छत्तीसगढ़

e-Paper- tarunchhattisgarhkorba.com

कोरबा एवं रायपुर से एक साथ प्रकाशित डाक पंजीयन क्रमांक- जी2-112/सी.जी/बीएलपी/003/2024-2026

सुनालिया ज्वेलर्स

हीरा, स्वर्ण, हॉलमार्क ज्वेलरी, रजत, राशि नग के विक्रेता

मो. 94255-32524,94241-43922

पावर हाउस रोड, कोरबा

वर्ष 37 अंक 09 | कोरबा, बुधवार , दिनांक 08 अक्टूबर 2025 डाक 09 अक्टूबर 2025 | पृष्ठ : 8 मूल्य 2.00 रुपए

विविधा

श्री सी. पी. राधाकृष्णन ने नई दिल्ली में भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद से उनके आवास पर मुलाकात की।

देश-विदेश

कफ सीरप से मौत के मामले में सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दायर, सीबीइआई जांच की मांग

फीचर पेज

आलिया भट्ट से निकिता दत्ता तक, बॉलीवुड की योग देवियां जो फिटनेस में भरती हैं प्राण

हम सिर्फ आसमान के नहीं, राष्ट्र के सम्मान के भी रक्षक हैं: वायुसेना प्रमुख

गाजियाबाद, 08 अक्टूबर [एजेंसी]।

गाजियाबाद स्थित हिंडन एयरबेस पर वायुसेना का 93वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस भव्य समारोह में वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह ने कहा कि भारतीय वायुसेना आज तकनीक, कौशल और क्षमता तीनों में अग्रणी है। उन्होंने कहा, मुझे गर्व है कि मैं ऐसी वायुसेना का हिस्सा हूं जो न केवल अत्याधुनिक तकनीक से लैस है बल्कि साहस और समर्पण में भी अतुलनीय है। हमारे वायु वीरों ने हर युग में इतिहास रचा है। 1948, 1971, 1999 के युद्ध हों या फिर बालाकोट एयर स्ट्राइक और हालिया ऑपरेशन सिंदूर, हर बार भारतीय वायुसेना ने देश की रक्षा और सम्मान की नई मिसाल कायम की है। यहां सीडीएस, वायुसेना प्रमुख, थलसेनाध्यक्ष व नौसेना की मौजूदगी में हेरिटेज विमानों द्वारा शानदार प्रदर्शन किया गया। तीनों सेनाओं के मार्चिंग दस्ते ने अपना प्रदर्शन किया। वायुसेना सेना के परेड दस्ते ने कदम ताल करते हुए सबका ध्यान आकर्षित किया। वहीं इस दौरान अपने संबोधन में एयर चीफ मार्शल सिंह ने कहा, हम न केवल आसमान के रक्षक हैं, बल्कि राष्ट्र के सम्मान के संरक्षक भी हैं। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय वायुसेना की निर्णायक कार्रवाई ने भारत की रणनीतिक स्थिति को और मजबूत किया। यह ऑपरेशन इस बात का प्रमाण है कि समर्पण, नियमित अभ्यास और प्रशिक्षण के जरिए कितनी बड़ी उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं। वायुसेना प्रमुख ने कहा कि हर स्तर पर नेतृत्व अग्रिम मोर्चे से किया जा रहा है, और यही भारतीय वायुसेना की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा, हम सब मिलकर इस वायुसेना को बनाते हैं। हर वायु योद्धा का योगदान अमूल्य है। चाहे शांति का समय हो या युद्ध का, हर एक का कार्य उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने यहां ऑपरेशन सिंदूर व अन्य ऑपरेशन में शामिल रहे एयर वॉरियर्स को सम्मानित किया।

इसके साथ ही उन्होंने समस्त एयर वॉरियर्स को संदेश दिया कि निरंतर प्रशिक्षण और आत्म अनुशासन से ही वायुसेना की शक्ति बनी रहती है। उन्होंने कहा, यह आवश्यक है कि हम नियमित प्रशिक्षण से खुद को हर कार्य के लिए सक्षम बनाएं। हर वायु योद्धा को यह संकल्प लेना चाहिए कि चाहे परिस्थितियां कैसी भी हों, मैं कभी कमजोर नहीं पड़ूंगा और इस श्रृंखला को टूटने नहीं दूंगा। एकजुट होकर हम हर चुनौती का सामना कर सकते हैं। भविष्य की तैयारियों पर बल देते हुए वायुसेना प्रमुख ने कहा कि सतर्कता और निरंतर अभ्यास ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने कहा, हमें उभरती चुनौतियों के लिए तैयार रहना होगा। हमारे प्रशिक्षण और रणनीतियां समय के साथ बदलती तकनीक और परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए।

वायुसेना प्रमुख ने कहा कि भारतीय वायुसेना ने बीते वर्ष के दौरान न केवल राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा में अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया, बल्कि मानवीय राहत कार्यों में भी अद्वितीय भूमिका निभाई है। वायुसेना हमारे देश की पहली प्रतिक्रिया देने वाली शक्ति रही है। जब भी देश में कोई आपदा आई, चाहे वह असम में कोयला खदान हादसा हो, मेघालय या सलेम (तमिलनाडु) में सुरंग बचाव अभियान, मणिपुर और सिक्किम में भूस्खलन या बाढ़ की स्थिति हो, हमारे एयर वॉरियर्स ने हर बार तत्परता से राहत और बचाव कार्यों में भाग लिया।

एनडीए में सीट बंटवारे का फॉर्मूला अब तक तय नहीं

चिराग बोले- पापा कहते थे, कदम-कदम पर लड़ना सीखो

पटना, 08 अक्टूबर [एजेंसी]।

बिहार विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद भी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में सीट बंटवारे का फॉर्मूला अब तक तय नहीं हुआ है। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के प्रमुख व केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान को 35 सीटों से कम मंजूर नहीं है। इधर, भाजपा 28 देने तक ही देने के लिए तैयार है। बिहार चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान ने चिराग पासवान से बातचीत की। उन्हें समझाने की कोशिश लेकिन बात नहीं बन पाई। बुधवार को चिराग पासवान ने सीट शेयरिंग के सवाल पर कहा कि अभी बातचीत चल रही है। बात फाइनल होने पर आपको जानकारी दे दी जाएगी। इन सब के बीच चिराग पासवान का एक पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल होने लगा। उन्होंने अपने पिता व पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान की तस्वीर को शेयर करते हुए उन्हें याद किया। कहा कि पापा हमेशा कहा करते थे। जुर्म करो मत, जुर्म सहो मत। जीना है तो मरना सीखो। कदम-कदम पर लड़ना सीखो। अब चिराग पासवान के इस पोस्ट के बाद सियासी गलियारे में चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया।

इससे पहले चिराग पासवान ने एक और पोस्ट लिखा। उन्होंने कहा कि पापा आपकी पुण्यतिथि पर आपको मेरा नमन। मैं विश्वास दिलाता हूं कि आपके दिखाए मार्ग और आपके विजन बिहार फ़र्स्ट, बिहारी फर्स्ट को साकार करने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध हूं। बिहार के समग्र और सर्वांगीण विकास का जो सपना आपने देखा था, अब समय आ गया है उसे धरातल पर उतारने का। आपने मेरे कंधों पर जो जिम्मेदारी सौंपी थी, उसे निभाना मेरे जीवन का उद्देश्य और कर्तव्य है। बिहार में लोकतंत्र का महापर्व शुरू होने जा रहा है। आगामी चुनाव आपके संकल्प को पूरा करने का अवसर है।

2 मजदूरों की मौत, लिफ्ट में आई खराबी, धड़ाम से गिरा

जांजगीर 08 अक्टूबर। जिले में स्थित आरकेएम पावर प्लांट मंगलवार देर शाम बड़ा हादसा हो गया। यहां एक लिफ्ट के गिरने से दो मजदूरों की मौके पर मौत हो गई, जबकि सात अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। कई घायलों को तत्काल फोर्टिस अस्पताल (रायगढ़) ले जाया गया। वहीं कई लोगों को जिंदल अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है। लिफ्ट से कुछ मजदूर दूसरी मंजिल पर जा रहे थे। लिफ्ट को कुल 75 मीटर की ऊंचाई तक जाना था, लेकिन यह 40 मीटर की ऊंचाई पर पहुंचते ही तकनीकी खराबी के चलते नीचे आ गिरी।

इसमें कुल 9 लोग सवार थे। हादसे में मौके पर ही दो मजदूरों ने दम तोड़ दिया, जबकि 7 अन्य घायलों को तत्काल फोर्टिस अस्पताल (रायगढ़) ले जाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। घटना के बाद प्लांट परिसर में अफरा-तफरी मच गई। प्रशासन और पुलिस की टीम मौके पर पहुंचकर जांच में जुट गई है।

पिकनिक मनाने गए एक ही परिवार के 7 लोग बहे, 4 लापता

नई दिल्ली। कर्नाटक के तुमकुरु जिले में दुखद घटना घटित हुई। जहां पिकनिक मनाने गए एक ही परिवार के 7 लोग पानी में बह गए। दो लोगों के शव बरामद हुए हैं। एक को बचा लिया गया है। एक बच्ची और एक बच्चे सहित बाकी चार लोगों की तलाश जारी है। करीब 15 लोग मार्कोनहल्ली बांध के पास पिकनिक मनाने गए थे। सभी पानी में उतरे थे। इसी दौरान अचानक पानी का बहाव तेज हो गया। जिसके कारण सात लोग पानी में बह गए। आनन-फानन में लोग बचाने के लिए दौड़े लेकिन तब तक वे बहते बहते दूर चले गए।

तेज रफ्तार स्कॉर्पियो तालाब में गिरने से चार की मौत

शादी से प्रयागराज लौट रहे थे गाड़ी सवार, पांच घायल

डिवाइडर लेन (स्पीड लेन) पर 110 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही स्कॉर्पियो अनियंत्रित होकर दूसरी से तीसरी लेन में पहुंची और हाईवे किनारे पानी से भरे तालाब में गिर गई।

फतेहपुर। कानपुर-प्रयागराज हाईवे पर कल्यानपुर थाना क्षेत्र बड़ौरी टोल प्लाजा के पास स्कॉर्पियो अनियंत्रित होकर पानी भरे तालाब में जा गिरी। स्कॉर्पियो सवार चार लोगों की मौत हो गई, जबकि चालक सहित पांच लोग मामूली रूप से घायल हुए हैं। इनको इलाज के लिए पीएचसी गोपालगंज में भर्ती कराया गया है। दुर्घटना की सूचना पर एएसपी व सीओ मौके पर पहुंची। चालक को झपकी आना मना जा रहा है। जनपद प्रयागराज के खुल्दाबाद सब्जी मंडी निवासी गौतम पाल की बारात कानपुर गई थी। मोहल्ले के दोस्त किराए पर मोहल्ले के ही राहुल गुप्ता की स्कॉर्पियो किराए पर लेकर शादी समारोह में शामिल होने गए थे। बुधवार करीब चार बजे कानपुर से वापस प्रयागराज लौटते समय लगभग 5.30 बजे हाईवे पर बड़ौरी टोल प्लाजा के पास गाड़ी चालक को झपकी आ गई। इससे

कांग्रेस ने घोषित किया घासी राम माझी को नुआपाड़ा उपचुनाव का उम्मीदवार

भुवनेश्वर। ओडिशा के नुआपाड़ा विधानसभा उपचुनाव के लिए कांग्रेस ने औपचारिक घोषणा करते हुए घासी राम माझी को पार्टी का अधिकृत उम्मीदवार घोषित

किया है। माझी वर्तमान में नुआपाड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हैं। यह फैसला ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी (ओपीसीसी) के अध्यक्ष भक्त चरण दास और पार्टी की राजनीतिक मामलों की समिति द्वारा सर्वसम्मति से भेजे गए प्रस्ताव के आधार पर लिया गया। ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के संगठन महासचिव ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर इस नाम की पुष्टि की।

कॉकपिट से प्रधानमंत्री बोल रहा हूं...

भारत आने से पहले ब्रिटिश पीएम स्टार्मर ने की अनोखी अनाउंसमेंट, वीडियो वायरल

नई दिल्ली 8 अक्टूबर। ब्रिटिश पीएम कीर स्टार्मर आज यानी बुधवार को दो दिवसीय भारत की यात्रा पर पहुंचे हैं। आज सुबह वह मुंबई के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे, जहां पर सीएम देवेंद्र फडणवीस ने उनका स्वागत किया। दरअसल, ब्रिटेन के लगभग 130 शीर्ष सीईओ और वरिष्ठ सरकारी मंत्री एक व्यापार मिशन के तहत मुंबई पहुंचे हैं। ब्रिटिश के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया जिसमें वह विमान में घोषणा करते नजर आ रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर ब्रिटिश पीएम कीर स्टार्मर ने एक वीडियो साझा किया है। इस वीडियो में वह लंदन से मुंबई जा रहे ब्रिटिश एयरवेज के चार्टर्ड विमान में उड़ान के दौरान एक घोषणा कर रहे थे। गौरतलब है कि ब्रिटिश पीएम के साथ व्यापार, संस्कृति और अन्य क्षेत्रों के 100 से अधिक लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल भी आया है।

ध्यान दिया जाना चाहिए कि ये यात्रा ऐसे समय में हो रही है, जब जुलाई के महीने में पीएम मोदी ने ब्रिटेन की यात्रा की थी। उस दौरान दोनों देशों के बीच एफटीए पर सहमति बनी थी। ज्ञात हो कि इस यात्रा का उद्देश्य विजन 2035 के अनुरूप भारत-यूके व्यापक रणनीतिक साझेदारी की प्रगति का जायजा लेना है। दोनों देशों के बीच भारत-यूके व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता बातचीत का प्रमुख केंद्रबिंदु रहने की उम्मीद है।

ईडी ने तकनीकी सहायता घोटाले पर कार्रवाई की, 15 स्थानों पर छापेमारी

दिल्ली 08 अक्टूबर। अधिकारियों ने बताया कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने तकनीकी सहायता घोटाले के सिलसिले में दिल्ली, नोएडा, गुरुग्राम, हरियाणा और मुंबई स्थित 15 परिसरों में तलाशी अभियान चलाया। दिल्ली पुलिस द्वारा करण वर्मा और अन्य के खिलाफ दर्ज की गई कई प्राथमिकियों के बाद धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत जाँच शुरू की गई। एजेंसी के अनुसार, आरोपी दिल्ली के रोहिणी, पश्चिम विहार और राजौरी गार्डन में कई अवैध कॉल सेंटर चला रहे थे। इन केंद्रों का इस्तेमाल प्रतिष्ठित कंपनियों के ग्राहक सहायता प्रतिनिधि बनकर अमेरिका में रहने वाले अनजान विदेशी नागरिकों को ठगने के लिए किया जाता था।

कथित तौर पर, घोटालेबाजों ने तथाकथित ब्लू स्क्रीन ऑफ़ डेथ तकनीक का इस्तेमाल किया - एक भ्रामक पॉप-अप विंडो जो असली विंडोज़ एरर स्क्रीन की नकल करने के लिए डिज़ाइन की गई थी। पीड़ितों को काल्पनिक तकनीकी समस्या के समाधान के लिए एक फर्जी हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करने के लिए प्रेरित किया जाता था। संपर्क स्थापित होने के बाद, पीड़ितों को फर्जी तकनीकी सहायता के लिए बड़ी रकम देने के लिए राजी किया जाता था।

11 दिन पहले ट्रांसफर, एक दिन पहले एफआईआर... आईपीएस पूरन कुमार की आत्महत्या के बाद सामने आया ये ट्विस्ट

रोहतक, 08 अक्टूबर [एजेंसी]।

चंडीगढ़ के सेक्टर 11 स्थित कोठी में सीनियर आईपीएस ऑफिसर वाई पूरन कुमार ने खुद को गोली मारकर मंगलवार को आत्महत्या कर ली। वाई पूरन कुमार हरियाणा पुलिस में 2001 बैच के आईपीएस अफसर थे।29 सितंबर को ही उनकी पोस्टिंग रोहतक रेंज आईजी से रोहतक के सुनारिया स्थित पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज (पीटीसी) में आईजी के तौर पर हुई थी। सूत्रों की मानें तो आईजी पूरन कुमार के खिलाफ अर्बन एस्टेट थाना में सोमवार को एक एफआईआर भी दर्ज हुई है, जिसे अब तक छिपाया भी जा रहा है, उसे ऑनलाइन भी नहीं किया गया है।

हालांकि, इस संबंध में अधिकारी कुछ भी बोलने से बच रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि इसे लेकर भी पूर्व आईजी काफी परेशान थे। चूंकि एक आईजी रैंक के अधिकारी पर अचानक एफआईआर करना कोई आसान काम नहीं रहा है।

लग्जरी गाड़ियों की तस्करी और फॉरेन एक्सचेंज घोटाले में 17 जगहों पर छापेमारी

कोच्चि। विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) 1999 के तहत प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कोच्चि जोनल ऑफिस ने बुधवार को केरल और तमिलनाडु के 17 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी की। यह कार्रवाई महंगी लग्जरी गाड़ियों की तस्करी और अवैध विदेशी मुद्रा लेनदेन से जुड़े एक बड़े रैकेट की जांच के सिलसिले में की गई। सूत्रों से मिली जानकारी के आधार पर ईडी ने यह छापेमारी शुरू की। जांच में पता चला है कि एक संगठित गिरोह लैंड क्रुजर, डिफेंडर, मसेराटी जैसी महंगी गाड़ियों को नेपाल और भूटान के रास्ते भारत में गैरकानूनी रूप से लाकर रजिस्ट्रेशन करवा रहा था।प्रारंभिक जांच से यह भी सामने आया है कि इस रैकेट का संचालन कोयंबटूर से हो रहा था। गिरोह ने गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन के लिए भारतीय सेना, अमेरिकी दूतावास और विदेश मंत्रालय के फर्जी दस्तावेजों का इस्तेमाल किया। ये वाहन अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और कुछ अन्य राज्यों के आरटीओ में फर्जी तरीके से रजिस्टर्ड किए गए थे।

दरभंगा में कार्यपालक अभियंता के घर पर ईडब्ल्यूओ छापा, भारी मात्रा में नकदी बरामद

दरभंगा 08 अक्टूबर। भवन निर्माण विभाग के विद्युत प्रमंडल कार्यालय के कार्यपालक अभियंता प्रणव कुमार के आवास पर आर्थिक अपराध की टीम छापेमारी कर रही है। लहे यह रियासराय थानाक्षेत्र के हाउसिंग कालानी स्थित किराए के आवास पर आर्थिक अपराध की टीम बुधवार की अहले सुबह पहुंची, जहां कार्यपालक अभियंता सहित तीन लोग पाए।टीम ने तीनों को हिरासत में लेकर पूरे कमरे को खंगाल रही है।

जहां से भारी मात्रा नकदी रुपये मिलने की बात कही जा रही है। फिलहाल, कमरे के अंदर किसी के आने-जाने पर रोक लगा दी गई है। बाहर में काफी संख्या में पुलिस बल को तैनात है। यह कार्यालय दरभंगा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर सहित 12 जिलों का है। इससे पूर्व इस कार्यालय के अंदर 21 अक्टूबर 2016 को निगरानी विभाग की टीम ने छापेमारी की थी। उस दौरान कार्यालय के प्रधान लिपिक नीलकमल मिश्र को अनुकंपा की नौकरी की फाइल बढ़ाने के नाम पर घूस की लेते दबोचा गया था।

हाल के दिनों में तीन अप्रैल 2024 को दरभंगा ग्रामीण के विद्युत विभाग के कार्यपालक अभियंता अजीत कुमार और लाइनमैन रिंकू कुमारी को 40 हजार रुपये रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया था। आटा चक्की के लिए बिजली कनेक्शन देने के नाम पर रिश्वत मांगने की शिकायत निगरानी विभाग से की गई थी।

जुबीन गर्ग मौत मामले में सिंगर का चचेरा भाई गिरफ्तार

नई दिल्ली। मशहूर सिंगर जुबीन गर्ग की मौत के मामले में जांच चल रही है। इस बीच खबर है कि उनके चचेरे भाई को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस के अनुसार, सिंगापुर यॉट पार्टी में जुबीन के साथ वह भी शामिल थे। दरअसल, सिंगर जुबीन गर्ग के चचेरे भाई संदीपन पुलिस सेवा में कार्यरत हैं। इस पूरे मामले में अभी तक कुल पांच गिरफ्तारी हुई है। जुबीन गर्ग 20 सितंबर से सिंगापुर में होने वाले तीन दिवसीय नॉर्थ ईस्ट इंडिया फेस्टिवल में शामिल होने के लिए वहां पहुंचे थे।

स्किन केयर व कास्मेटोलाजी क्लिनिक

चर्म , गुप्त, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ एवं सैक्स सलाहकार

डॉ.आर.के.अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.FDS
(Lond.)F.i.a.m.s.(Ind.)
Mob.9424170010

-: परामर्श का समय :-
सुबह 10.30 से 1.30
(शाम को बंद)

डॉ.शशि अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.(U.K)
Mob.9826389894

सुविधायें:- गंजापन, मस्से हटाना, दाद खाज खुजली, एक्जीमा, एलर्जी, सड़े नाखून, कुष्ठ रोग, काले दाग, मुंहासे, बाल झड़ना, सेक्स की कमी, शीघ्र पतन, धात, मानसिक रोगों का मशीनों व अत्याधुनिक दवाओं द्वारा शीघ्र ईलाज, फोटोथेरेपी, इलेक्ट्रीशिकेशन, क्रायोसर्जरी, सायकोथेरेपी का ईलाज।

मो. 9203907928,9826389894 (क्लीनिक)

विशेष : बुधवार को 20 मरीजों का फीस माफ...

पता : एचआईजी -4 नेहरू नगर , रिकाण्डो रोड घोड़ा चौक , बुधवारी बाजार के पास, कोरबा

इलेक्ट्रॉनिक्स, साड़ी और शू हाउस में लगी आग, व्यापारियों को लाखों का नुकसान

शिवरीनारायण, 08 अक्टूबर [एजेंसी]।

जिले में मंगलवार देर रात बड़ा हादसा हो गया। दिवाली पर्व और जीएसटी 2.0 के बाद बाजार में आई रौनक के बीच शिवरीनारायण के बॉम्बे मार्केट के व्यापारियों की खुशियां अचानक मातम में बदल गईं। देर रात अचानक दुकानों में आग लग गई। आग ने देखते ही देखते 4 बड़ी और कई छोटी दुकानों को अपनी चपेट में ले लिया। सूचना मिलते ही पुलिस और दमकल की टीम मौके पर पहुंची और आग बुझाने का प्रयास शुरू किया। हालांकि आग इतनी भीषण थी कि सुबह तक भी उसे पूरी तरह बुझाने का काम जारी है। जानकारी के मुताबिक, घटना मंगलवार देर रात करीब डेढ़ बजे की है।

शिवरीनारायण के बॉम्बे मार्केट स्थित चित्रा इलेक्ट्रॉनिक्स, कलकत्ता होजरी, बॉम्बे साड़ी और बॉम्बे शू हाउस में अचानक आग भड़क उठी। देखते ही देखते लपटों ने आसपास की तीन से चार छोटी दुकानों को भी अपनी चपेट में ले लिया, जिनमें जूते-चप्पल, चूड़ी और प्लास्टिक की दुकानें शामिल थीं।

जेसीआई कोरबा सेंट्रल की 2026 की कार्यकारिणी हेतु चुनाव तिथि घोषित

कोरबा। जेसीआई कोरबा सेंट्रल की प्री-इलेक्शन जनरल बॉडी मीटिंग आज कावेरी रेस्टोरेंट में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस बैठक में आगामी वर्ष 2026 के लिए संस्था की नई कार्यकारिणी के निर्वाचन की प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा की गई एवं नामांकन फॉर्म का विमोचन किया गया।

संस्था के सचिव सी.ए. अंकित अग्रवाल ने बताया कि परंपरानुसार संस्था के आई.पी.पी. जेसी उत्कर्ष अग्रवाल को मुख्य चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया और सहायक चुनाव अधिकारी के रूप में जेसी सन्नी मित्तल, अंकित टमकोरिया व आनंद अग्रवाल नियुक्त हुए। चुनाव तिथि 11 नवम्बर निर्धारित की गई है। अध्यक्ष पद हेतु नामांकन की अंतिम तिथि 25 अक्टूबर व उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, निदेशक सहित अन्य पदों हेतु नामांकन की अंतिम तिथि 7 नवम्बर तय की गई। मुख्य अतिथि पूर्व अध्यक्ष जेसी ईं राज अग्रवाल जी ने कहा कि जेसी आई कोरबा सेंट्रल सदैव अपने मूल्यों के साथ युवाओं को नेतृत्व का मंच प्रदान करते आई है तथा नेतृत्व में बढ़-चढ़ के आगे आने हेतु सभी को प्रेरित किया। इस दौरान पूर्व अध्यक्ष आनंद रायकवार, सजन अग्रवाल, आशीष टमकोरिया, अध्यक्ष सीए अभिषेक अग्रवाल, लीजेंड अध्यक्ष शिवशंकर अग्रवाल, जेसीरेट अध्यक्षा सीए आयुषी अग्रवाल सहित अन्य जेसी सदस्य उपस्थित रहे।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व सहायिका के रिक्त पदों पर भर्ती हेतु आवेदन आमंत्रित

कोरबा। एकीकृत बाल विकास परियोजना कोरबा शहरी में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका के 03-03 रिक्त पदों पर भर्ती हेतु आवेदन 08 अक्टूबर 2025 से मंगाया गया है। आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 22 अक्टूबर निर्धारित है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता हेतु शैक्षणिक योग्यता 12वीं एवं सहायिका पद के लिए शैक्षणिक योग्यता 8वीं निर्धारित है। आवेदिकाओं को संबंधित वार्ड की निवासी होना अनिवार्य है जिसके लिए आवेदन किया जा रहा है। आवेदन पत्र पर पद एवं केन्द्र का नाम का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक होगा। आवेदिकाओं की आयु 18 से 44 वर्ष के बीच होना आवश्यक है। इच्छुक आवेदिकाएं निर्धारित प्रारूप में अपना आवेदन सीधे अथवा साधारण/पंजीकृत डाक के माध्यम से परियोजना कार्यालय में प्रातः 10 से शाम 5 बजे तक कार्यालयीन दिवस में जमा कर सकते है। आवेदन की शर्ते तथा प्रारूप परियोजना कार्यालय कोरबा, नगर निगम के सूचना पटल एवं सभी संबंधित वार्डो के आंगनबाड़ी के सूचना पटल पर उपलब्ध है। वार्डवार कार्यकर्ता व सहायिका के रिक्त पदों की जानकारी एवं नियुक्ति के संबंध में अन्य आवश्यक जानकारी परियोजना कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

बिजली कर्मियों को दीपावली से पहले बोनस की उम्मीद

कोरबा । बिजली कर्मचारी जल्द से जल्द बोनस भुगतान की मांग कर रहे हैं। बिजली कर्मचारी संगठनों ने एसईसीएल, एनटीपीसी और बालको जैसे औद्योगिक संस्थानों की तरह कंपनी के कर्मचारियों को भी बोनस देने की मांग करी है।

बीएमएस से सम्बद्ध छत्तीसगढ़ बिजली कर्मचारी संघ महासंघ ने कंपनी के चेयरमैन को पत्र लिखकर बिजली कर्मचारियों को कम से कम 30 हजार रुपए बोनस भुगतान की मांग की है। बिजली कंपनी के कर्मचारियों को अब तक बोनस का भुगतान नहीं हुआ है। उम्मीद है कि दीपावली के पहले छत्तीसगढ़ बिजली कंपनी के कर्मचारियों को बोनस का भुगतान हो जाएगा। जिले में एसईसीएल, एनटीपीसी और बालको उपक्रम में कार्यरत कर्मचारियों को बोनस का भुगतान दशहरा उत्सव के पूर्व ही कर दिया गया है। लेकिन बिजली कंपनी के कर्मचारी बोनस पाने के मामले में इन औद्योगिक संस्थानों के कर्मचारियों से पीछे चल रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य बिजली कंपनी के कर्मचारियों को अभी तक बोनस का भुगतान नहीं हुआ है। प्रत्येक वर्ष बिजली कंपनी के कर्मचारियों को त्योहारी सीजन में बोनस राशि के रूप में एक्सग्रेशिया का भुगतान किया जाता है। हालांकि अभी तक बिजली कर्मचारियों को बोनस देने के संबंध में प्रबंधन की ओर से कोई निर्णय नहीं लिया गया है।

कंपनी के कर्मचारी संगठनों का कहना है कि प्रदेश व देश की बिजली जरूरत को पूरा करने में कंपनी के अधिकारी एवं कर्मचारियों का विशेष योगदान होता है। दीपावली पर्व नजदीक है इसे देखते हुए कर्मचारियों को बोनस भुगतान के संबंध में जल्द निर्णय लेना चाहिए। कर्मचारी संगठनों ने बोनस को लेकर मांग शुरू कर दी है। छत्तीसगढ़ राज्य बिजली कंपनी के उत्पादन वितरण और पारेषण कंपनी में लगभग 11 हजार से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं इसके अलावा कंपनी में बड़ी संख्या में संविदा और ठेका कर्मचारी भी नियोजित हैं। कर्मचारी संगठन ने ठेका कर्मचारियों को भी बोनस भुगतान की मांग को लेकर पत्र दिया है।

छत्तीसगढ़ राज्य बिजली कंपनी में एसईसीएल व एनटीपीसी की तरह कर्मचारियों को परफॉर्मेंस लिंक्ड रिवार्ड (पीएलआर) या परफॉर्मेंस रिलेटेड पे (पीआरपी) का भुगतान नहीं किया जाता। बिजली कंपनी में प्रत्येक वर्ष बोनस के तौर पर अनुग्रह राशि (एक्सग्रेशिया) का भुगतान किया जाता है। पिछले वर्ष दीपावली के समय एक्सग्रेशिया के रूप में प्रत्येक कर्मचारी को 12 हजार रुपए का भुगतान किया गया था। बिजली कर्मचारियों का कहना है कि उनको

उरगा-कुसमुंडा नई लाइन का खाली मालगाड़ी चलाकर किया गया परीक्षण

कोरबा । कोरबा जिले में उरगा से कुसमुंडा तक बनाई गई 12.637 किलोमीटर लंबी नई विद्युतीकृत ब्रॉडगेज रेल लाइन पर पहली बार 30 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से मालगाड़ी चलाकर रेल अधिकारियों ने इस लाइन का परीक्षण किया। इसके साथ ही कोल प्रेषण के शुरू होने का रास्ता साफ हो गया है। दक्षिण-पूर्व-मध्य रेलवे के बिलासपुर मंडल में उरगा से कुसमुंडा तक 12.637 किलोमीटर लंबी नई विद्युतीकृत ब्रॉडगेज रेल लाइन रेल खंड छत्तीसगढ़ ईस्ट-वेस्ट रेल कॉरिडोर (गेवरा रोड-पेंड्रा रोड) नई रेल परियोजना का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बतौर परीक्षण के लिए चलाई गई इस मालगाड़ी की गति सीमा 30 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित की गई थी। इस रेल लाइन पर अधिकतम गति सीमा 75 किलोमीटर तय की गई है, लेकिन इस गति से चलाने के लिए अनुमति अभी नहीं मिली है।

शहर की जर्जर सड़को पर सभापति का अल्टीमेटम 7 दिनों में सुधार नही हुआ तो होगा आंदोलन

कोरबा। शहर के मुख्य प्रवेश मार्ग गौमाता चौक, ईमलीछापर चौक तथा कटघोरा रोड की स्थिति अत्यंत जर्जर हो चुकी है। इन मार्गों पर दुर्घटना, वाहन चालकों के रोज़ाना गिरकर घायल होने की खबरें सोशल मीडिया में वायरल हो रही हैं। शहर के मुख्य एंट्री पॉइंट की दुर्दशा से सरकार की बदनामी हो रही है। उक्त तीनों प्रवेश मार्ग के सड़कों के निर्माण एवं रखरखाव के लिए जिम्मेदारी पी.डब्ल्यू.डी. विभाग की है।

नगर पालिक निगम कोरबा के सभापति नूतनसिंह ठाकुर ने कहा है कि शहर के मुख्य प्रवेश मार्गों की दुर्दशा एवं गड्ढों में गिरकर लोगों के घायल होने की घटनाओं को आंख मूंदकर नहीं देख सकते हैं। एक सप्ताह के भीतर इन प्रवेश मार्गों में स्थित जानलेवा गड्ढों की मरम्मत एवं नवनिर्माण के लिए उपाय करने का निवेदन किया अन्यथा सड़कों की दुर्दशा पर आक्रोशित आम जनता के साथ मिलकर आंदोलन किया जाएगा।

आयुक्त नगर पालिक निगम कोरबा को भी कोरबा जोन अंतर्गत डीडीएम चौक, ओवर ब्रिज के नीचे मैन रोड के गड्ढो को तत्काल सुधार कराने का निवेदन किया गया है। कोरबा जोन अधिकारी के लापरवाही से मामूली रुप से क्षतिग्रस्त सडको में बडे बडे गड्?डे बन गए है यदि प्रारंभिक स्तर पर इनकी मरम्मत कर दिया जाता तो मेन रोड की आज यह दुर्दशा नही होती। अधिकारी की लापरवाही एवं निष्क्रियता से अब लाखो रुपए खर्च कर इन सडको का निर्माण करना पडेगा।कोरबा जिले में खनिज न्यास मद से हर साल लगभग 600 करोड रुपए का राजस्व मिलने के कारण शासन स्तर पर नगर निगम को राशि नही मिलता है। जिले की आधी आबादी नगर निगम में निवासरत है लेकिन खनिज न्यास मद के अधिकांश राशि का उपयोग शहर के विकास में खर्च करने के बजाय दूरस्थ इलाको में खर्च किया जा रहा है। अनुपयोगी भवनो तथा योजनाओ में करोडो रुपए बर्बाद किया जा रहा है जबकि शहर के प्रवेश मार्गों की दुर्दशा से लोग रोजाना गड्?डो में गिरकर घायल हो रहे है। जिम्मेदार अधिकारियो के निकम्मेपन तथा लापरवाही से हर साल सडको की स्थिति दयनीय हो जाती है। कोरबा शहर के एंट्री पांईट की ऐसी दुर्दशा है तो शहर के भीतर की सुंदरता व्यर्थ है क्योकि कोरबा आने-जाने वाले अन्य जिले के निवासियो के मन मस्तिष्क में जानलेवा गड्ढे अमिट छाप छोड रहे है। गौमाता चौंक पर 3-4 बार स्थानीय लोगो ने चक्काजाम कर प्रदर्शन किया है, इमलीछापर में व्यापारियो ने कीचड में नहाकर विरोध प्रदर्शन किया इसके बाद भी इन सडको की दशा नही सुधर सकी। जानलेवा गड्ढो एवं रोजाना हो रही दुर्घटनाओ की खबर सोशल मिडिया में वायरल होकर प्रदेश में कोरबा शहर की छवि खराब कर रहे है प्रदेश सरकार की बदनामी हो रही है।

कलेक्टर एवं आयुक्त महोदय से मांग किया गया है कि सडको की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार अधिकारियो पर कड़ी कार्यवाही करें। खनिज न्यास मद से टास्क फोर्स का गठन करें जो सडके खराब होने की सुचना पर प्रारंभिक स्तर पर मुख्य सडको की मरम्मत करें इससे समस्यो से जनता को शीघ्र राहत मिलेगी तथा सडको की दुर्दशा विकराल होने पर निर्माण में होने वाले करोडो रुपए की बचत होगी।

लोक सेवको तथा जनप्रतिनिधियो के लिए आम जनता का हित सर्वोपरि है। कलेक्टर एवं आयुक्त नगर निगम को सभापति ने आम जनता की ओर से सूचना दिया गया है कि शहर के मुख्य प्रवेश मार्ग गौमाता चौक, इमलीछापर चौक तथा मेन रोड कोरबा की सडको की दयनीय स्थिति में 07 दिवस के भीतर सुधार कार्य नही किया गया वरना आम जनता के साथ मिलकर जनहित में आंदोलन करने मजबूर होंगे।

हसदेव बांगों जलाशय की मछली पालन नीति से स्थानीय मछुआरें हो रहे लाभांवित

कोरबा । छत्तीसगढ़ शासन की मछुआरों के हितार्थ जारी नवीन मछुआ नीति 2022 अनुसार राज्य के 1000 हेक्टेयर से अधिक के जलाशयों को मत्स्य पालन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य मत्स्य महासंघ के अधिपत्य में रखा गया है जिसे मत्स्य महासंघ द्वारा खुली निविदा आमंत्रित कर पंजीकृत मत्स्य सहकारी समिति/मछुआ समूह, पंजीकृत व्यवसायिक संस्था/ कंपनी/ फर्म/ समूह/ व्यक्ति को 10 वर्ष के लिए किया जाता है।

कोल इंडिया के सीवीओ त्रिपाठी ने किया दीपका क्षेत्र का दौरा

कोरबा। एसईसीएल दौरे के दूसरे दिन 07 अक्तूबर को कोल इंडिया लिमिटेड के मुख्य सतर्कता अधिकारी ब्रजेश कुमार त्रिपाठी ने दीपका क्षेत्र का दौरा किया।श्री त्रिपाठी ने क्षेत्र के प्रमुख विभागाध्यक्षों के साथ बैठक की और तत्पश्चात माइन व्यू पॉइंट का निरीक्षण किया, जहाँ उन्होंने क्षेत्र की विस्तृत माइन योजना के माध्यम से चल रहे खनन कार्यों एवं भावी योजनाओं की समीक्षा की।

एक पेड़ माँ के नाम एवं एक पेड़ सतर्कता के नाम अभियान के अंतर्गत, उन्होंने नए साइलो परिसर के निकट एक पौधा रोपित किया।

पौधरोपण के दौरान श्री त्रिपाठी ने दीपकद्य में पर्यावरण का काम संभाल रही पर्यावरण प्रबंधक सुश्री कीर्ति केजी से भी संवाद किया और उद्योग में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी एवं सशक्तिकरण की सराहना की।

खदान निरीक्षण के पश्चात् श्री त्रिपाठी ने दीपका, गेवरा, कुसमुण्डा एवं कोरबा क्षेत्रों के अधिकारियों के साथ एक संवाद सत्र में भाग लिया। उन्होंने कहा कि आज प्रत्येक कोल इंडियन देश की प्रगति का सशक्त आधार है। उन्होंने सभी से निडर होकर , भय त्याग करके काम करने को कहा । अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए श्री त्रिपाठी ने अपने प्रेरक नारे जो जीता वही कोल इंडियन को दोहराया और सभी को सतर्कता, उत्कृष्टता एवं ईमानदारी के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया।दौरे के दौरान एन. फ्रैंकलिन जयकुमार, निदेशक तकनीकी (संचालन), हिमांशु जैन, मुख्य सतर्कता अधिकारी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

घेराव के बाद 2 घंटे तक कार्यालय के अंदर बैठे भू विस्थापित

कोरबा। छत्तीसगढ़ किसान सभा और भू विस्थापित रोजगार एकता संघ द्वारा एसईसीएल के खदानों से प्रभावित भू विस्थापित किसानों की लंबित रोजगार प्रकरणों का तत्काल निराकरण,बसावट, एवं प्रभावित गांव में मूलभुत सुविधा उपलब्ध कराने के साथ 10 सूत्रीय मांग को लेकर कुसमुंडा महाप्रबंधक कार्यालय का घेराव 6 अक्टूबर को घोषणा अनुसार सुबह 10 बजे से 5 बजे तक कुसमुंडा कार्यालय का घेराव कर दिया जिससे मुख्य गेट से कोई कर्मचारी आना जाना नहीं कर पाए। इसके बाद नारेबाजी करते हुए रैली निकालकर कार्यालय के अंदर घुसे भूविस्थापित जिससे माहोल तनावपूर्ण हो गया उसके बाद एसईसीएल प्रबंधन ने वार्ता के लिए आंदोलनकारियों से वार्ता शुरू की

वार्ता में समस्याओं का समाधान नहीं होने कार्यालय के अंदर ही आंदोलनकारी बैठ गए जिसके बाद कुसमुंडा महाप्रबंधक ने 37 साल बाद एक लंबित रोजगार की स्वीकृति प्रदान होने की जानकारी दी एवं रुके हुए फाइलों को एसडीएम कार्यालय भेजने की सहमति दी साथ ही बिलासपुर में बैठक और रुके फाइल पर जल्द निराकरण के लिए बिलासपुर मुख्यालय के साथ संयुक्त बैठक कर निराकरण करने का लिखित आश्वासन दिया उसके बाद भू विस्थापनी का आंदोलन समाप्त हुआ ।

किसान सभा के प्रदेश संयुक्त सचिव प्रशांत झा ने कहा की भू विस्थापितों को जमीन अधिग्रहण के बाद रोजगार से वंचित नहीं किया जा सकता जिनकी भी जमीन अर्जन की गई है उन्हे रोजगार देना होगा। भू विस्थापितों की समस्याओं के निराकरण के लिए एसईसीएल के अधिकारियों द्वारा कोई ठोस पहल नहीं किया जा रहा है जिससे भू विस्थापितों में काफी आक्रोश है । एसईसीएल के अधिकारियों का ध्यान केवल भू विस्थापितों के अधिकारों को छीन कर आपस में लडवाकर केवल कोयला उत्पादन को बढ़ाने और उच्च अधिकारियों को खुश करने की है जिसमें जिला प्रशासन भी एसईसीएल के साथ खड़ी है लेकिन भू विस्थापित किसानों की एकजुटता के सामने कोई प्रबंधन टिकने वाली नहीं है आगे आंदोलन और तेज होगा।किसान सभा के नेता जवाहर सिंह कंवर,सुमेंद्र सिंह कंवर,दीपक साहू ने कहा कि विकास के नाम पर अपनी गांव और जमीन से बेदखल कर दीये गए विस्थापित परिवारों का जीवन स्तर सुधरने के बजाय और भी बदतर हो गई है। 40-50 वर्ष पहले कोयला उत्खनन करने के लिए किसानों की हजारों एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया गया था। विकास की जो नींव रखी गई है उसमें प्रभावित परिवारों की अनदेखी की गई है। खानापूर्ति के नाम पर कुछ लोगों को रोजगार और बसावट दिया गया जमीन किसानों का स्थाई रोजगार का जरिया होता है। सरकार ने जमीन लेकर किसानों की जिंदगी के एक हिस्सा को छीन लिया है। इसलिए जमीन के बदले सभी खातेदारों को स्थाई रोजगार देना होगा। भू विस्थापित किसानों के पास अब संघर्ष के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा है। उल्लेखनीय है कि 31अक्टूबर 2021 को लंबित प्रकरणों पर रोजगार देने की मांग को लेकर कुसमुंडा क्षेत्र में 12 घंटे खदान बंद करने के बाद एसईसीएल के महाप्रबंधक कार्यालय के समक्ष दस से ज्यादा गांवों के किसान 1435 दिनों से अनिश्चित कालीन धरना पर बैठे हैं। इस आंदोलन के समर्थन में छत्तीसगढ़ किसान सभा शुरू से ही उनके साथ खड़ी है।इस आंदोलन के कारण ही चालीस से अधिक पुराने रोजगार प्रकरणों में एसईसीएल को स्थाई रोजगार देना पड़ा है।भूविस्थापित रोजगार एकता संघ के नेता दामोदर श्याम, रेशम यादव ने कहा कि भू विस्थापितों को बिना किसी शर्त के जमीन के बदले रोजगार देना होगा और वे अपने इस अधिकार के लिए अंतिम सांस तक लड़ेंगे और भू विस्थापित संघ से जुड़े भू विस्थापितों ने कहा कि सरकार को विस्थापितों को ऐसा जीवन प्रदान करना चाहिए जिससे उनको लगे की उन्होंने अपनी जमीन नहीं खोया है लेकिन सरकार गरीबों को जमीन पर लाकर खड़ा कर देती है। गरीबों के पास संघर्ष के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा है। आगे अन्य क्षेत्रों से संपर्क कर आंदोलन का और विस्तार किया जाएगा।लगभग 9 घंटे तक घेराव प्रदर्शन के दौरान कार्यालय में माहोल तनावपूर्ण रहा। भू विस्थापितों द्वारा बिना कोई ठोस निर्णय के आंदोलन समापत करने से मना करने के बाद एक भू विस्थापित के रोजगार का एप्रूवल जारी करने का महाप्रबंधक ने जानकारी दी महाप्रबंधक ने बिलासपुर मुख्यालय में बैठक कर तत्काल रोजगार प्रकरणों के निराकरण का आश्वासन दिया जिसके बाद हड़ताल समाप्त हुआ किसान सभा ने एलान करते हुए कहा है कि भू विस्थापितों के समस्याओं पर सकारात्मक पहलकदमी नहीं होने पर 15 दिन बाद कोल परिवहन को बंद किया जाएगा।घेराव में प्रमुख रूप से राजेश्वरी कौशिक,बंधन बाई,तेरस,संजय यादव,दीना नाथ,हरिहर, चंद्रशेखर,होरी, रघुनंदन,मुनीराम, डुमन, राजकुमार,गणेश,विजय कंवर, नरेंद्र, हेमलाल, नारायण, उत्तम, फीरत, नंदकुमार, मिलन, विनोद ,शंकर,के साथ बड़ी संख्या में भू विस्थापित शामिल थे ।

कोरबा की बेटी ने बढ़ाया जिले का मान

कोरबा । **शासकीय ई. वी. पी.** जी. कॉलेज, कोरबा की पूर्व छात्रा एवं सक्रिय एनएसएस स्वयंसेविका सुश्री लखनी साहू को महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के कर-कमलों द्वारा एमवाई भारत - राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान, तथा शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में प्रदान किया गया। विशेष उल्लेखनीय है कि कोरबा जिले के इतिहास में यह पहला अवसर है,

25 वर्षों में रेशम विभाग की योजनाओं ने बदली ग्रामीण अर्थव्यवस्था की तस्वीर''

कोरबा। छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के 25 वर्षों ने जहां राज्य के हर क्षेत्र को प्रगति की नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया, वहीं रेशम विभाग ने भी निरंतर विकास की रेशमी राह पर चलते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त किया है। टसर और मलबरी रेशम उत्पादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के साथ-साथ हितग्राहियों एवं श्रमिकों के जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया गया है।

रेशम विभाग के सतत प्रयासों से छत्तीसगढ़ ''टसर उत्पादन में देश में दूसरे स्थान'' पर आ गया है। जिले के सभी पाँच विकासखंडों के 49 पालित टसर केन्द्रों में टसर उत्पादन की गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं। वर्ष 2000 में 1030 हेक्टेयर'' में टसर उत्पादन होता था, जो वर्ष ''2025 तक बढ़कर 1199 हेक्टेयर'' हो गया है। 'टसर ककून उत्पादन में ''2000 में 67.1 करोड़ नग से बढ़कर 2024-25 में 108.56 करोड़ नग व वर्ष 2025-26 में अब तक ''49.30 करोड़ नग' टसर का उत्पादन हुआ है।रेशम योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। वर्ष 2000 में 1756 हितग्राही लाभान्वित हुए थे। वर्ष 2024-25 तक यह संख्या बढ़कर ''2759'' तक पहुँच गई, जो ग्रामीण सहभागिता एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम है।मलबरी (शहतूत) रेशम उत्पादन में भी विभाग ने विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कृषकों को सीधे लाभान्वित किया है। जिले में 7 मलबरी रेशम केन्द्र संचालित है।

आरएसएस के पथ संचलन ने किया कोरबा को गौरवान्वित

कोरबा। शौर्य, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति का अद्भुत संगम मंगलवार को कोरबा की सड़कों पर देखने को मिला, जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भव्य पथ-संचलन पूरे जोश और गर्व के साथ निकला, सफेद शर्ट और खाकी पैंट में सजे अनुशासित स्वयंसेवकों के कदमताल से पूरा शहर गुंजायमान हो उठा, %भारत माता की जय% के नारों से गूंजते वातावरण में राष्ट्रप्रेम की अनूठी झलक देखने को मिली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष पर चित्रा टाकीज से होते हुए रानी रोड, अग्रसेन भवन, पुराना बस स्टैंड, मेन रोड होते हुए गायत्री स्कूल पुरानी बस्ती तक पथ संचलन हुआ। जगह-जगह स्वयं सेवकों का पुष्प वर्षा व ढोल-नगाड़ा से भव्य स्वागत हुआ। स्वयंसेवकों का भव्य पथ संचलन जब शहर की सड़कों से गुजरा, तो मानो पूरा नगर राष्ट्रभावना से सराबोर हो उठा. चारों ओर देशभक्ति के जयघोष गूंज उठे ।

संघ की स्थापना हिन्दू समाज को संगठित करने, जाति, प्रांत, भाषा और पंथ से ऊपर उठकर समरसता का भाव उत्पन्न करने के उद्देश्य की गयी। संघ ने दैनिक शाखा के माध्यम से व्यक्ति में चरित्र निर्माण, अनुशासन, सेवा, राष्ट्रभक्ति और त्याग की भावना को जागृत करता है।

कलेक्टर की अध्यक्षता में राजस्व अधिकारियों की हुई समीक्षा बैठक

कोरबा। कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक लेकर तहसीलवार राजस्व प्रकरणों के निराकरण की अद्यतन स्थिति की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने लंबित सभी राजस्व प्रकरणों के निराकरण में प्रगति लाने के निर्देश दिए। बैठक में अनुविभागीय अधिकारी कटघोरा श्री तन्मय खन्ना, अपर कलेक्टर श्री देवेंद्र पटेल, सभी एसडीएम, प्रभारी अधिकारी भू अभिलेख, अधीक्षक भू अभिलेख, सभी तहसीलदार और नायब तहसीलदार उपस्थित थे।

कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने तहसीलवार अविवादित/विवादित नामांतरण, खाता विभाजन, सीमांकन, नक्शा बटांकन, अभिलेख शुद्धता, ई-कोर्ट प्रकरण सहित सभी राजस्व प्रकरणों की समीक्षा की। अविवादित नामांतरण के आवेदनों की समीक्षा करते हुए उन्होंने लंबित प्रकरणों के निराकरण में सभी तहसीलदारों को विशेष प्रयास करने एवं गम्भीरता से प्रगति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी तहसीलदारों को 3- 5 वर्ष के अधिक समय से लंबित भू अर्जन सहित अन्य राजस्व प्रकरणों को शीघ्रता से निराकृत करने की बात कही। शून्य आदेश पत्रक वाले सभी प्रकरणों को भी यथाशीघ्र निराकृत करने हेतु निर्देशित किया त्रुटि सुधार के आवेदनों को भी गम्भीरता से निराकरण करने के लिए कहा। साथ ही नक्शा बटांकन कार्य में भी तत्परता से कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए प्रगति लाने के निर्देश दिए।कलेक्टर ने तहसीलदारों को कोटवारी भूमि, शासकीय पट्टे , भू अर्जन एवं खनिज प्रभावित क्षेत्रों की भूमि के खसरे में अहस्तांतरणीय दर्शाना सुनिश्चित करने की बात कही। जिससे उक्त भूमि की खरीदी बिक्री पर रोक लगाई जा सके। उन्होंने सभी विकासखण्डों में मसाहती ग्राम के सर्वे व नक्शा प्रकाशन की वर्तमान स्थिति के संबंध में जानकारी लेते हुए नक्शा प्रकाशन के कार्य मे तेजी लाने के लिए कहा। एग्रीस्टेक पोर्टल में पंजीयन हेतु शेष किसानों का पंजीयन भी जल्द से जल्द पूर्ण करने के लिए कहा। कलेक्टर श्री वसंत ने राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक में भू अर्जन, व्यपवर्तन, त्रुटि सुधार, वृक्ष कटाई, डिजीटल सिग्नेचर, किसान किताब, आधार सिडिंग, स्वामित्व योजना, वन अधिकार पट्टा वितरण सहित अन्य बिंदुओं पर चर्चा कर सभी प्रकरणों के निराकरण हेतु राजस्व अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

पीवीटीजी आवासों में पीएम सूर्यघर योजना के तहत सोलर पैनल लगवाने हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

कोरबा । कलेक्टर श्री अजीत वसंत की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समय सीमा की बैठक आयोजित हुई। उन्होंने विभागीय कामकाज की विस्तृत समीक्षा करते हुए शासकीय कार्यो के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने टीएल के विभागवार लम्बित प्रकरणों की जानकारी लेते हुए शीघ्र निराकरण हेतु अधिकारियों को निर्देशित किया।

समय सीमा की बैठक में कलेक्टर श्री वसंत ने सभी विभागीय अधिकारियों को ई- ऑफिस के माध्यम से ही फाइल आगे बढ़ाने के निर्देश दिए एवं सभी को ई-आफिस के कार्य प्रणाली में आने वाली तकनीकी त्रुटियों का भी ध्यान रखते हुए कार्य संपादित करने के लिए कहा। साथ ही बीईओ, बीएमओ, जनपदों जैसे ब्लॉक स्तर के कार्यालयों में भी ई- ऑफिस कार्यप्रणाली को जल्द से जल्द सक्रिय करने के निर्देश अधिकारियों को दिए एवं आवश्यकता अनुसार कर्मचारियों को एनआईसी के माध्यम से तकनीकी प्रशिक्षण दिलाने के लिए कहा । उन्होंने बंद हो चुकी शासकीय योजनाओं की बैंक खातों को शीघ्र ही बंद कराकर बचत राशि शासन के खाते में जमा कराने के निर्देश सभी विभागीय अधिकारियों को दिए। उन्होंने रेडक्रॉस को ब्लड डोनेशन वाहन उपलब्ध कराने की कार्यवाही भी यथाशीघ्र पूर्ण कराने के लिए कहा। कलेक्टर ने जिले में वयवन्दन कार्ड और आयुष्मान कार्ड निर्माण के अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए वंचित लोगों को शीघ्रता से लाभान्वित करने के लिए कहा। इस हेतु हितग्राहियों का पहचान कर डोर टू डोर जाकर उनका कार्ड बनवाने की बात कही। उन्होंने आत्मानंद विद्यालयों में अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति की कार्यवाही पूर्ण पारदर्शिता के साथ शीघ्रता से पूर्ण कराने हेतु निर्देशित किया। युकियुक्त करण के पश्चात नियुक्ति नही देने वाले शिक्षकों पर कार्यवाही करने की बात कही।

जिले में आवश्यकता वाले स्थानों में नए छात्रावासो निर्माण हेतु प्रस्ताव तैयार कर प्रस्तुत करने के लिए सहायक आयुक्त आदिम जाति विकास विभाग को निर्देश दिए। उन्होंने जिले के पीवीटीजी बाहुल्य क्षेत्रों के पीवीटीजी आवासों में पीएम सूर्यघर योजना के तहत सोलर पैनल लगवाने हेतु आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश कार्यपालन अभियंता विद्युत विभाग को दिए। आयुष विभाग को यथाशीघ्र ओपीडी के साथ साथ आईपीडी सेवा प्रारम्भ करने हेतु निर्देशित किया। इस हेतु आवश्यक तैयारियां सुनिश्चित करने की बात कही।

उप मुख्यमंत्री ने चार अटल परिसरों का किया लोकार्पण

जांजगीर-चांपा। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव ने आज जिले के चार नगरीय निकायों में 316.29 लाख रुपए की लागत से नवनिर्मित अटल परिसर एवं विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं 249 लाख रुपए की लागत से एसटीपी निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। उन्होंने आज नगर पंचायत पामगढ में 19.95 लाख रुपए की लागत से, नगर पंचायत राहौद के बुंदेला चौक में 19.95 लाख रुपए की लागत से, नगर पंचायत खरौद में 19.93 लाख रुपए की लागत से एवं नगर पंचायत नवागढ़ के हाट बाजार परिसर वार्ड क्रमांक 12 में 19.95 लाख रुपए की लागत से नव निर्मित अटल परिसर का विधिवत लोकार्पण किया।

इसके साथ ही नगर पंचायत राहौद के वार्ड क्रमांक 8 में सांस्कृतिक भवन लागत 11 लाख रुपए, देवांगन समाज धर्मशाला में अतिरिक्त कक्ष लागत 10 लाख रुपए, वार्ड क्रमांक 15 में सामुदायिक भवन लागत 15 लाख रुपए एवं वार्ड क्रमांक 10 में पकरिया पारा में स्कूल के पास सांस्कृतिक भवन लागत 10.42 लाख रुपए, नगर पंचायत खरौद में सी.सी. रोड निर्माण कार्य वार्ड क्रमांक 06 व 13 के पांच विभिन्न मार्गों पर 22.45 लाख रुपए की लागत से

पूर्ण, वार्ड क्रमांक 13 में पुलिया से मुक्तिधाम तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य 27.41 लाख रुपए, शबरी देवी शिक्षा समिति भवन निर्माण कार्य 9.99 लाख रुपए एवं वार्ड क्रमांक 07 में सामुदायिक भवन निर्माण कार्य 9.83 लाख रुपए, गांधी चौक, मुक्तिधाम, लक्ष्मणेश्वर मंदिर, शीतला मंदिर एवं कंपाटनी मंदिर परिसर में पेवर ब्लॉक कार्य 95.84 लाख रुपए एवं नवागढ़ नगर पंचायत के वार्ड क्रमांक 15 में सांस्कृतिक भवन निर्माण लागत 24.57 लाख रुपए के कार्य का भी लोकार्पण किया एवं 249 लाख रुपए की लागत से एसटीपी निर्माण कार्य का भूमि पूजन किया।

इस अवसर पर विधायक जांजगीर-चांपा ब्यास कश्यप, पूर्व नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल, पूर्व संसदीय सचिव अंबेश जांगड़े, पूर्व सांसद श्रीमती कमला देवी पाटले, पूर्व विधायक श्री चुन्नीलाल साहू, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती सत्यलता आनंद मिरी, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष नंदिनी राजवाड़े, नगर पंचायत पामगढ़ अध्यक्ष श्रीमती गौरी जांगड़े, नगर पंचायत रहौद अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा कश्यप, नगर पंचायत खरौद अध्यक्ष गोविंद यादव, नगर पंचायत नवागढ़ अध्यक्ष श्रीमती अर्चना देवांगन, कलेक्टर जन्मेजय महोबे, गुलाब सिंह चंदेल, अमर सुलतानिया, प्रशांत ठाकुर, इजी. रवि पांडेय सहित पार्षदगण, विभिन्न जनप्रतिनिधिगण, अधिकारी-कर्मचारी एवं नागरिक गण उपस्थित थे।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारत रत्न स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता हैं। उनके सम्मान में राज्य के सभी नगरीय निकायों में अटल परिसर का निर्माण किया जा रहा है। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी ने गांव, किसान और आम जनता के लिए ऐतिहासिक योजनाएं शुरू की। जिनमें प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से गांव गांव तक पहुंच और विकास संभव हो पाया और किसान क्रेडिट कार्ड योजना, जिससे ग्रामीण विकास और किसानों को शून्य ब्याज पर ऋण संभव हुआ। उन्होंने ही छत्तीसगढ़ राज्य के गठन की नींव रखी। आज छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया कहा जाता है, तो उसका श्रेय अटल जी की दूरदृष्टि को जाता है। उन्होंने कहा कि अटल परिसर, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की राष्ट्र सेवा, विकास के प्रति दृष्टिकोण और आदर्श मूल्यों को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम बनेगा। उन्होंने कहा, यह परिसर केवल एक स्मारक नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देने वाला केंद्र बनेगा।

बनारी के तालाब में दिखा मगरमच्छ, पिंजरे में मुर्गा रखकर पकड़ने की कवायद

जांजगीर-चांपा। जिला मुख्यालय से लगे ग्राम बनारी के अमुरी तालाब में एक बड़ा मगरमच्छ नजर आया। इसकी जानकारी मिलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। ड्रोन कैमरे से बनाया गया वीडियो भी सोशल मीडिया में वायरल होने लगा। सूचना पर प्रशासन के साथ वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और प्रशिक्षित टीम को बुलाकर पिंजरे में मुर्गा रखकर मगरमच्छ को पकड़ने की कवायद शुरू की गई। इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार 7 अक्टूबर को बनारी गांव के अर्मुरी तालाब में एक मगरमच्छ तैरते दिखा। आसपास के लोगों के माध्यम से बात पूरे गांव में फैल गई। इतने में गांव के ही कुछ युवाओं ने ड्रोन कैमरे से वीडियो भी बनाया। इधर इसकी सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। इस. दौरान कोटमीसोनार क्रोकोडायल पार्क से प्रशिक्षित लोगों की टीम बुलाई गई और तालाब के किनारे पिंजरे में मुर्गा रखकर मगरमच्छ को पकड़ने की कवायद शुरू की गई। बनारी के तालाब में मगरमच्छ दिखने की सूचना पर तत्काल पहुंचे है। कोटमीसोनार से प्रशिक्षितों की टीम बुलाई गई है। पिंजरे में मुर्गा रखकर पकड़ने का प्रयास किया जा रहा है। गांव में मुनादी करा दी गई है। टीम अलर्ट है।

-होरेशचंद शर्मा एसडीओ, फारेस्ट

देवरी पिकनिक स्पॉट पर बही युवती का चौथे दिन मिला शव

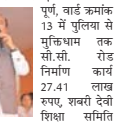

शनिवार को बहे थे हसदेव नदी में, दूसरे और तीसरे दिन मिली थी दो युवकों की लाश

जाजगीर-चांपा। देवरी चिचोली पिकनिक स्पॉट में हसदेव नदी के तेज बहाव में बही युवती की लाश चौथे दिन पीथमपुर के आगे मिली। घटना शनिवार को हुई थी। इसके बाद दूसरे और तीसरे दिन सर्चिग टीम ने एक-एक करके दोनों युवकों की लाश निकाली थी।

गौरतलब है कि शनिवार 4 अक्टूबर को बिलासपुर से दो युवक और दो युवतियों के साथ अकलतरा के अर्जुनी निवासी एक युवक पंतोरा चौकी अंतर्गत देवरी चिचोली पिकनिक स्पॉट पर घुमने आए थे।

इस दौरान शाम करीब 5 बजे नदी में नहाते वक्त तेज बहाव में पांचों वह गए। बताया जाता जाता है कि नदी के बहाव में बहते हुए अर्जुनी निवासी -लक्ष्मीशंकर किसी तरह अपने आप को संभाल लिया और वह मोनिका - सिन्हा को भी बाहर निकालने में सफल रहा, जबकि बिलासपुर निवासी स्वर्णरखा ठाकुर, अंकुर कुशवाहा और आशीष भोई नदी के तेज बहाव में बह गए। ऐसे में लक्ष्मीशंकर और मोनिका बस्ती की ओर गए और लोगों को इसकी जानकारी दी फिर पुलिस को सूचित किया गया। सूचना मिलते ही पंतोरा पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और रात में ही खोजबीन शुरू की गई। दूसरे दिन एसडीआरएफ की टीम पहुंची और मोटरबोट तथा ड्रोन कैमरे की मदद से खोजबीन शुरू की गई। दूसरे दिन रविवार को दोपहर के करीब 2 बजे घटना स्थल से 15 किमी दूर कुदरी में एक युवक की लाश मिली। जिसकी पहचान अंकुर कुशवाहा के रूप में की गई। तीसरे दिन सचिंग टीम सुबह से डटी रही और दोपहर बाद दूसरे युवक आशीष भोई की लाश मिली। इसके बाद स्वर्णरखा की तलाश चौथे दिन भी जारी रही। मोटरबोट और ड्रोन कैमरे के साथ सर्चिग टीम पीथमपुर के आगे पहुंची, जहां एक युवती का शव मिला। पुलिस ने उसकी पहचान स्वर्णरखा के रूप में हुई है।

युवती की मिली लाश-इसकी सूचना परिजनों को दी। तत्पश्चात पंचनामा की कार्रवाई की गई। एएसपी उमेश कश्यप ने पिकनिक या नहाने के दौरान नदियों में उतरते समय सावधानी बरतने की बात कही है।

शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता दूसरे दिन दुर्ग और रायपुर जोन के खिलाड़ियों का दबदबा

जांजगीर-चांपा। 25वीं राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता के दूसरे दिन रायपुर और दुर्ग जोन के खिलाड़ियों का दबदबा रहा। वहीं 100 से अधिक मुकाबले हुए है। राज्य स्तरीय इस प्रतियोगिता में 5 जोन के 4 सौ से अधिक खिलाड़ी अपना जौहर दिखा रहे है।

25वीं राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता के दूसरे दिन मंगलवार 7 अक्टूबर को विभिन्न जोनों के खिलाड़ियों ने अपने दमदार प्रदर्शन से दर्शकों का मन मोह लिया। इस प्रतियोगिता में राज्य के सभी 5 संभागों से लगभग 400 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। हाई स्कूल मैदान जांजगीर में 6 से 9 अक्टूबर तक यह राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। इसमें बालक व बालिका वर्ग के 14, 17 और 19 वर्षीय आयु वर्गों के मुकाबले खेले जा रहे हैं। दूसरे दिन के खेलों मैं दुर्ग और रायपुर जोन के पहलवानों का प्रदर्शन सबसे प्रभावशाली रहा। बालक वर्ग 17 वर्षीय के 30 मुकाबलों में दुर्ग जोन ने 9 और रायपुर जोन ने 8 मुकाबलों में जीत दर्ज की। वहीं बालिका वर्ग 17 वर्ष में रायपुर जोन ने 8 तथा दुर्ग जोन ने 7 मुकाबले अपने नाम स किए।बालिका 19 वर्षीय वर्ग में रायपुर जोन नेव शानदार प्रदर्शन करते हुए 9 मुकाबलों में जीत हासिल कर अपनी श्रेष्ठता बनाए रखी। मेजबान बिलासपुर जोन ने भी उम्दा खेल दिखाते हुए विभिन्न वर्गों मुकाबलों में जीत दर्ज की। सरगुजा और बस्तर जोन का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा, हालांकि बालिका 19 वर्षीय वर्ग में बस्तर जोन ने 7 मुकाबले जीतकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। खेल मैदान में खिलाड़ियों के उत्साह, प्रशिक्षकों की मार्गदर्शन और दर्शकों की तालियों ने माहौल को जीवंत बना दिया। प्रतियोगिता 9 अक्टूबर तक चलेगी। राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता में 5 जोन के खिलाड़ी पहुंचे है।

अब ग्रामीण खुद देख सकेंगे अपने गाँव का विकास

जांजगीर-चांपा। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के अंतर्गत पारदर्शिता और जनसहभागिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिले में एक नई डिजिटल पहल की शुरुआत की गई है। जिले की सभी ग्राम पंचायतों में 7 अक्टूबर 2025 को आयोजित रोजगार दिवस के अवसर पर ग्रामीणों को क्यूआर कोड प्रणाली की जानकारी दी गई।

इस पहल के तहत अब ग्रामीण अपने मोबाइल फोन से पंचायत भवन या अन्य सार्वजनिक स्थलों पर लगाए गए क्यूआर कोड को स्कैन कर पंचायत से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ तुरंत प्राप्त कर सकेंगे। इनमें पिछले तीन वर्षों के स्वीकृत कार्यों की सूची, व्यय राशि, प्रगतिरत कार्य, जॉब कार्ड धारकों की संख्या और कुल सृजित मानव दिवस जैसी जानकारी शामिल है। यह नवाचार कलेक्टर श्री जन्मेजय महोबे के मार्गदर्शन में शुरू किया गया है। जिले की सभी पंचायतों में पंचायत भवन सहित प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर क्यूआर कोड चस्पा कर दिए गए हैं। ग्रामीणों को भविष्य के विकास कार्यों की दिशा, परिसंपत्तियों के निर्माण में उनकी सहभागिता, पौधारोपण, जल संरक्षण, कृषि आधारित परिसंपत्तियों और जॉब कार्ड से जुड़ी जानकारी भी दी गई। विगत दिवस कलेक्टर जन्मेजय महोबे द्वारा हेडसपुर में निरीक्षण के दौरान ग्राम पंचायत भवन में पहुंच कर मनरेगा के क्यूआर कोड को अपने मोबाइल से स्कैन कर सभी जानकारी को मौके पर ही देखा गया था। मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत जांजगीर-चांपा गोकुल रावटे ने बताया कि सभी जनपद पंचायतों के अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे रोजगार दिवस एवं ग्राम सभा के अवसर पर क्यूआर कोड प्रणाली की व्यापक जानकारी ग्रामीणों तक पहुँच जाएँ और जन जागरूकता अभियान चलाएँ।

उन्होंने कहा कि यह पहल ग्रामीणों को योजनाओं की निगरानी में सक्रिय भागीदारी का अवसर देती है। अब कोई भी ग्रामीण जान सकेगा कि उसके गाँव में विकास कार्यों पर कितना और कहाँ खर्च हुआ है। इससे योजनाओं के प्रति जनता का भरोसा और मजबूत होगा। ग्राम पंचायत स्तर पर तकनीक के इस उपयोग से ग्रामीण समाज को एक नई शक्ति मिलेगी क्योंकि अब हर विकास कार्य का हिसाब हर नागरिक की नज़रों के सामने होगा।

एक माह बाद भी शुरू नहीं हो पाई ऑनलाइन टैक्स वसूली

जांजगीर। इस पोर्टल के माध्यम से संपत्तिकर प्रबंधन के लिए निकायों के कर्मचारियों के लिए एक ऑनलाइन मॉड्यूल भी विकसित किया गया है। इसमें ऑनलाइन और ऑफलाइन भुगतान प्राप्त करने, संपत्ति डेटा में संशोधन करने और अन्य प्रशासनिक कार्य करने की सुविधाएं दी गई हैं। लेकिन एक माह बीत जाने के बाद भी नगर पालिकाओं में इस सुविधा की शुरुआत नहीं हो पाई है। लोग आज भी मैनुअल तरीके से संपत्तिकर, जलकर और अन्य टैक्स जमा कर रहे हैं। इधर नगरीय प्रशासन विभाग ने नगर पालिका अकलतरा, चांपा और जांजगीर-नैला को पत्र जारी कर टैक्स वसूली ऑनलाइन माध्यम से शुरू करने के निर्देश दिए हैं।

पत्र में उल्लेख है कि निकायों के अधिकारियों और कर्मचारियों को लॉगइन आईडी और पासवर्ड उपलब्ध कराए गए हैं। साथ ही डेशबोर्ड के माध्यम से शासन और निकायों को टैक्स संग्रहण की सटीक और अपडेट जानकारी उपलब्ध होगी, जिससे कर वसूली का रियल टाइम मॉनिटरिंग संभव होगा। वित्तीय वर्ष 2025-26 से ऑफलाइन संपत्तिकर, समेकितकर और जलकर भुगतान को ऑनलाइन लेने के निर्देश दिए गए हैं।

सड़कें बदहाल: नपं अध्यक्ष ने कलेक्टर को लिखा पत्र

बलौदा। नगर पंचायत बलौदा की प्रमुख सड़कों की जर्जर और खस्ताहाल स्थिति को लेकर नगर पंचायत अध्यक्ष कविता डहरिया ने कलेक्टर को पत्र लिखकर तत्काल मरम्मत और नई सड़क निर्माण की मांग की है। पत्र में उन्होंने कहा है कि नगर के सभी मुख्य मार्ग दयनीय स्थिति में पहुंच चुके हैं। इससे न केवल नागरिकों को आवागमन में परेशानी हो रही है, बल्कि आए दिन दुर्घटनाएं भी हो रही हैं। गुरुघासीदास चौक से कोरबा रोड, पटवारी कार्यालय के सामने, और नगर पंचायत कार्यालय से थाना चौक तक की सड़कें पर गहरे गड्ढे बन गए हैं। जलभराव के कारण सड़कें फिसलन भरी हो गई हैं, जिससे स्कूल जाने वाले बच्चों, व्यापारियों, कर्मचारियों और आम नागरिकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

131 फीट ऊंचाई से गिरी लिफ्ट,3 मजदूरों की मौत

सक्ती। जिले के डभरा स्थित आरकेएम पावर प्लांट में मंगलवार देर रात बड़ा हादसा हो गया। मेंटेनेंस के दौरान मजदूरों को ले जा रही एक लिफ्ट करीब 40 मीटर की ऊंचाई से अचानक नीचे गिर गई। इस घटना में 3 मजदूरों की मौत हो गई, जबकि 7 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए।

10 मजदूर लिफ्ट में सवार होकर पांचवी मंजिल तक जा रहे थे। जिसकी ऊंचाई करीब 75 मीटर है, लेकिन 40 मीटर तक पहुंचने के बाद उसका बैलेंस बिगड़ गया और वह नीचे गिर गई। इस घटना के बाद प्लांट परिसर में अफरा-तफरी मच गई।

मामला डभरा थाना क्षेत्र का है। हादसे में दो मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि तीसरे ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। सभी घायल मजदूरों को निजी फोर्टिस अस्पताल में भर्ती कराया गया है।हादसे के बाद बड़ी संख्या में मजदूरों के परिजन और अन्य मजदूर प्लांट गेट के बाहर जमा हो गए और हंगामा करने लगे। सूचना मिलते ही डभरा पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी है।

हादसे के कारणों की पड़ताल की जा रही है। शुरुआती जानकारी के अनुसार, लिफ्ट में तकनीकी खराबी के कारण यह दुर्घटना हुई। हालांकि, प्लांट प्रबंधन और सुरक्षा विभाग की लापरवाही पर भी सवाल उठ रहे हैं।सक्ती एडिशनल एसपी हरीश यादव ने बताया कि लिफ्ट गिरने से तीन मजदूरों की मौत हुई है और कई अन्य घायल हैं। सभी मजदूर बॉयलर की मरम्मत के कार्य में लगे थे।हादसे के बाद प्लांट में काम कर रहे मजदूरों में आक्रोश फैल गया। स्थिति को देखते हुए डभरा पुलिस बल को मौके पर तैनात किया गया है। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है और पुलिस मौके पर मौजूद है।स्थानीय मजदूरों ने आरोप लगाया है कि पॉवर प्लांट प्रबंधन की गंभीर लापरवाही के कारण यह हादसा हुआ है।

शैलेश बनें मारवाड़ी ब्राम्हण सेवा संघ के अध्यक्ष

चांपा। स्थानीय मारवाड़ी ब्राम्हण समाज के नागरिकों की प्रतिनिधि पंजीकृत संस्था मारवाड़ी ब्राम्हण सेवा संघ की एक आवश्यक बैठक सोमवार 22 सितम्बर को स्टेशन रोड स्थित सुमन लॉज में सम्पन्न हुई जिसमें संघ की आगामी सत्र 2025-27 की नवीन कार्यकारिणी के अध्यक्ष का चुनाव सर्वसम्मति से किया गया। समाज के वरिष्ठ पत्रकार शैलेश शर्मा को संघ का नवीन अध्यक्ष चुना गया है। वे संघ के निवृत्तमान अध्यक्ष सुभाष शर्मा का स्थान लेंगे। मारवाड़ी ब्राम्हण सेवा संघ की सम्पन्न बैठक में प्रमुख रूप से सत्यवीर शर्मा, राजेश तिवारी, अजय शर्मा, रितेश शर्मा, सुभाष शर्मा, विवेक शर्मा, शंकर शर्मा, विनोद शर्मा, सतीश शर्मा, रमेश शर्मा, उदय शर्मा, लक्ष्मीकांत शर्मा, गोवर्धन शर्मा आदि मौजूद थे। सभी ने सर्वसम्मति से निर्णय कर समाज के वरिष्ठ पत्रकार शैलेश शर्मा को अध्यक्ष चुनते हुए उन्हें अपनी कार्यकारिणी चयन का अधिकार प्रदान किया। नवीन अध्यक्ष शैलेश शर्मा ने संघ के सचिव पद पर उदय शर्मा (टेंट) तथा कोषाध्यक्ष पद पर रमेश शर्मा की नियुक्ति करते हुए कहा कि शेष पदाधिकारियों का चयन समाज के सभी लोगों से चर्चा कर किया जायेगा। उन्होंने बताया कि आगामी अन्नकूट महोत्सव को सफल बनाने के लिए तैयारियां आरंभ कर दी गई है।

वार्ड ब्वॉय व आया भर्ती के लिए प्रवेश पत्र जारी

जांजगीर। वार्ड ब्वॉय और आया भर्ती परीक्षा के लिए प्रवेश पत्र सोमवार को जारी कर दिए गए हैं। व्यापमं की ओर से यह परीक्षा 12 अक्टूबर को सुबह 11 बजे से आयोजित की जाएगी। हालांकि, परीक्षा केंद्र में अभ्यर्थियों को 10:30 तक पहुंचना जरूरी है।

47 छात्र-छात्राओं व शिक्षक शिक्षिकाओं विद्यालय प्रबंधन का आठ दिवसीय कार्यक्रम

जांजगीर-चांपा।विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 4/10/25 से दिनांक 10/10/25 तक अष्टदिवसीय शैक्षणिक भ्रमण की योजना बनाई गई है जिसमें जांजगीर स्थित जय भारत इंग्लिश मीडियम स्कूल के 47 छात्र-छात्राओं व शिक्षक शिक्षिकाओं व विद्यालय प्रबंधन ने राष्ट्रपति भवन का दिनांक 4/10/25 को शैक्षणिक भ्रमण किया। जिनमें टीम लीडर विद्यालय के सीईओ हर्षित गट्टानी सहित 47 छात्र-छात्राओं, तीन शिक्षक, दो शिक्षिकाओं ने राष्ट्रपति भवन का शैक्षिक दौरा कर विभिन्न जानकारियां हासिल की।

छात्रों को सिक्योरिटी ऑफिसर ने स्वर्णिम इतिहास से जुड़े कई महत्वपूर्ण दस्तावेज और स्वतंत्रता संग्राम की यात्रा से अवगत कराया। छात्रों ने अमृत उद्यान, म्यूजियम और ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। इसी कड़ी में सहस्त्रबाहु और अवलोकितेश्वर भगवान बुद्ध की 1000 भुजाओं वाली मूर्ति को देखने के साथ-साथ राष्ट्रपति भवन की विस्तृत जानकारी, सम्मेलन स्थल, जिसे तुंग भद्रा (लॉन्ग ड्राइंग रूम) के नाम से जाना जाता है, अवगत कराया गया। उसे फिरोजा हरे रंग से सजाया गया है तथा आधुनिक साज सज्जा और एलईडी स्क्रीन से सुसज्जित किया गया है जिसे देख सभी छात्र-छात्राएं स्तंभित रह गए और बताया गया कि अशोक मंडप का उपयोग विदेशी देशों के मिशन प्रमुखों द्वारा अपने परिचय पत्र प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है, भारत के राष्ट्रपति द्वारा आयोजित राजकीय भोज के आरंभ से पहले आने वाले तथा भारतीय प्रतिनिधि मंडलों के लिए औपचारिक परिचय स्थल के रूप में किया जाता है और संग्रहालय भ्रमण के दौरान.. चाँद से लाया गया पत्थर, देखा गया।

एपीजे कलाम की रचना- राष्ट्रपति भवन संग्रहालय, राष्ट्रपति भवन के भीतर स्थित एक भूमिगत, तकनीकी रूप से उन्नत संग्रहालय है, जो ऐतिहासिक अस्तबल और गैरेज में स्थित है। यह भारत की लोकतांत्रिक विरासत को प्रदर्शित करता है, जिसमें राष्ट्रपतियों को मिले उपहार, पूर्व नेताओं से संबंधित कलाकृतियाँ, संविधान निर्माण जैसी महत्वपूर्ण घटनाएँ और स्वयं भवन का इतिहास शामिल है। संग्रहालय एक आकर्षक ऐतिहासिक अनुभव प्रदान करने के लिए इंटरैक्टिव डिस्प्ले, वर्चुअल रियलिटी, होलोग्राफिक प्रोजेक्शन और ध्वनि-प्रकाश शो का उपयोग करता है। राष्ट्रपति भवन में कुल 340 कमरे हैं। 12 कमरे नदियों के नाम पर रखे गए हैं जिन्हें रामनाथ कोविंद ने रखा है जिनमें से... ब्रह्मपुत्र (24 कैरेट सोने के पेंटिंग से बनी है। जिसमें अंतर राज्य के मानचित्र पर पता लगाया गया है...)

सिवाय राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार और दादा साहब फाल्के पुरस्कार के। वहां आईएएस, आईपीएस की शपथ ग्रहण समारोह होता है और रात्रि भोजन की व्यवस्था भी रहती है। जिसे ब्रिटिश टाइम सेक् स्टेट बॉल रूम श्बोला जाता है इस प्रकार की सभी महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल की गई। छात्र-छात्राओं ने एक विशेष जुनून व तन्मयता के साथ राष्ट्रपति भवन में प्रवेश किया व भवन के नियम व कानून का वहन करते हुए अनुशासित वातावरण में भ्रमण किया गया। यह एक अद्भुत, अविस्मरणीय यात्रा रहा। यह जानकारियां हासिल कर टीम अपने उद्देश्य में कामयाब हुई।

तत्पश्चात टीम ने मनाली के लिए प्रस्थान किया। शैक्षणिक भ्रमण राष्ट्रपति भवन से शुरुआत कर मनाली कुल्लू शिमला की भ्रमण द्वारा अष्ट दिवसीय योजना के साथ शुरुआत की गई है जिसमें पहला उद्देश्य राष्ट्रपति भवन का दौरा पूर्ण हुआ। मनाली पहुंच कर अटल टर्नल में सभी लोगों ने हैवी स्नो फॉल का भरपूर आनंद लिया। मॉल रोड से होते हुए हिडिंबा देवी टैपल में दर्शन किए। अगले दिन कुल्लू से शिमला के लिए प्रस्थान किए वहां का नजारा काफी अच्छा था बच्चों ने खूब आनंद उठाया। इस तरह का भ्रमण विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक विकास का द्वार प्रशस्त करती है यह जिले का दूसरा विद्यालय है, जिसे राष्ट्रपति भवन का भ्रमण करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है। यह भ्रमण विद्यालय प्राचार्या श्रीमती गुरमीत कौर धनजल मैम के मार्गदर्शन में संचालित किया गया।

राहौद में कांग्रेस जिलाध्यक्ष चुनाव संबंधी बैठक आज

राहौद। संगठन सृजन कार्यक्रम के तहत अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा नियुक्ति पर्वेक्षक का दौरा कार्यक्रम जिलाध्यक्ष चुनाव संबंधित वरिष्ठ नेताओ पदाधिकारीओ, कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत चर्चा के संबंध में ब्लाक स्तरीय बैठक आयोजित किया जा रहा है। प्रदेश प्रभारी विवेक बंसल एआईसीसी प्रर्वेक्षक सत्यनारायण शर्मा पूर्व मंत्री छत्तीसगढ़, जनक राम ध्रुव विधायक बिंद्रावन विधानसभा, इंग्रीड मैक्लूड राज्य सभा सांसद, पामगढ़ विधायक शेषराज हरवंश उपस्थिति रहेंगे। कांग्रेस जनों को ब्लाक अध्यक्ष नवल सिंह ठाकुर व नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रहलाद देवांगन ने अनिवार्य रूप से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित प्रदान केरने अपील की है। बैठक 8 अक्टूबर को नगर के देवांगन धर्मशाला में आयोजित होगी।

मेगा हेल्थ कैम्प में 100 से ज्यादा लाभान्वित

चांपा। नगर के गौरव पथ स्थित कृष्णा हॉस्पिटल में एक दिवसीय नि:शुल्क स्वास्थ्य तथा आयुष्मान व वंदना कार्ड पंजीयन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अस्थि, जनरल सर्जरी, स्त्री रोग व मौसमी बीमारियों से संबंधित 100 से भी ज्यादा मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें जरूरी परामर्श दिया गया। साथ ही आयुष्मान कार्ड एवं वंदना कार्ड बनाने पंजीयन भी किया गया।

केन्द्र शासन के स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान के तहत मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के निर्देशानुसार पिछले दिनों गौरव पथ स्थित कृष्णा हॉस्पिटल में एक दिवसीय नि:शुल्क स्वास्थ्य तथा आयुष्मान व वंदना कार्ड पंजीयन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ करते हुए चिकित्सक डॉ. लक्ष्मीकांत सोनी ने चिकित्सालय में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी प्रदान की। सुबह 10 से दोपहर 1 बजे तक चले शिविर में अस्थि, जनरल सर्जरी, खी रोग व मौसमी बीमारियों से संबंधित 100 से भी ज्यादा मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें जरूरी परामर्श दिया गया। शिविर के दौरान आयुष्मान कार्ड एवं वंदना कार्ड बनाने पंजीयन भी किया गया। शिविर में चिकित्सालय के संचालक डॉ. लक्ष्मीकांत सोनी के अलावा समस्त स्टॉफ का सहयोग सराहनीय रहा।

शरद पूर्णिमा: जगन्नाथ मठ मंदिर में आरती, खीर बांटी

चांपा। शरद पूर्णिमा पर चांपा नगर में भक्ति और श्रद्धा का संगम देखने को मिला। सोमवार की रात में नगर के श्री जगन्नाथ मठ मंदिर सहित विभिन्न मठों, मंदिरों और धार्मिक संस्थानों में गोपाल जी की भव्य आरती संपन्न हुई। मंदिरों को दीपों और रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया था। वहीं श्रद्धालुओं की भीड़ आरती में शामिल होने उमड़ पड़ी। पूजा-अर्चना के बाद गोपाल जी को अमृतमयी खीर का भोग लगाया। मान्यता है कि शरद पूर्णिमा की रात को चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है, इसलिए इस रात में बनाई गई खीर पवित्र और औषधीय गुणों से युक्त मानी जाती है। इसी परंपरा के तहत मंदिरों में भोग लगाकर श्रद्धालुओं के बीच खीर का प्रसाद वितरण किया गया।

9 जुआरियों के कब्जे से 13 हजार की बनाई जब्ती

जांजगीर-चांपा। पामगढ़ पुलिस ने दबिश देकर 9 जुआरियों के कब्जे से 13 हजार जब्त किया गया है। मुखबिर की सूचना पर थाना पामगढ़ पुलिस द्वारा पामगढ़ क्षेत्र के ग्राम कोसीर में छापामार कार्रवाई की गई।

न्यायालय तहसीलदार कोरबा
जिला- कोरबा (छ.ग.)

// ईश्तहार//

रा.प्र.क्र.-202509050600094
श्रेणी /अ-6 अ वर्ष /2024-25
प.ह.नं.-21, ग्राम-दादरखुर्द

सर्वसाधारण आम जनता ग्राम चाकामार को सूचित किया जाता है कि आवेदक खीखराम पिता रामसाय उरांव, जाति-उरांव, निवासी-उरांव बस्ती मानिकपुर कोरबा, तहसील व जिला कोरबा छ.ग. द्वारा आवेदक की साम्मिलात भूमि ग्राम दादर, प.ह.नं.21, तहसील व जिला कोरबा में ख.नं.1632 रकबा 0.1200 हे., ख.नं.1635 रकबा 0.010 हे. स्थित है। उक्त भूमि आवेदक एवं अन्य खातेदारों के नाम पर फौती नामांतरण के माध्यम से दर्ज किया गया है। मसाहती खसरा नं. 357, 566/2 का नया ख.नं. 1632 रकबा 0.1200 हे., ख.नं. 1635 रकबा 0.010 हे. बना है जबकि आवेदक का कब्जा ख.नं. 864 में है। ख.नं. 1632 रकबा 0.1200 हे. ख.नं. 1635 रकबा 0.010 हे. को विलुप्त करते हुए खसरा नं. 864 रकबा 0.250 हे. में से रकबा 0.32 डिसमिल में आवेदक एवं अन्य खातेदार के नाम से दुरुस्त किये जाने बाबत् आवेदन पत्र मय दस्तावेज इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह अपना दावा/आपत्ति इस न्यायालय में नियत तिथि दिनांक 10.10.2025 तक स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। समयावधि बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 15.09.2023 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय के सील मुद्रा से जारी।

सील

तहसीलदार
कोरबा (छ.ग.)

कार्यालय कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, खण्ड-कोरबा (छ.ग.)
I.T.I. Chowk, Rampur, Korba (C.G.)
Contact No. : 07759-228663 (O), Toll Free No. 18002330008, E-mail:eekor-phe-cg@nic.in

शुद्धि पत्र क्र. 01

इस कार्यालय का निविदा क्र. 09 एवं 10 सिस्टम क्र. 176892 एवं 176896 दिनांक 30.10.2025 है, जिसे 30.09.2025 पढ़ा जावे।

कार्यपालन अभियंता सह
सदस्य सचिव डी.डब्ल्यू.एस.एम.
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, खण्ड-कोरबा (छ.ग.)

जी/252603971/2

अनमोल वचन......

समय सीमा पर काम खत्म कर लेना काफी नहीं है, मैं समय सीमा से पहले काम खत्म होने की अपेक्षा करता हूं - धीरूभाई अंबानी

बिहार से शुरुआत हो

कई चरणों में मतदान आम चलन बना हुआ है। मगर साथ ही यह धारणा भी मजबूत हुई है कि इस तरह चुनाव को अत्यधिक खर्चीला बनाया गया है, जिससे कम संसाधन वाले दलों के लिए प्रतिकूल स्थितियां बनी हैं। बिहार के राजनीतिक दलों में बनी यह सहमति महत्त्वपूर्ण है कि विधानसभा चुनाव के लिए मतदान एक या अधिक से अधिक दो चरणों में कराया जाना चाहिए। निर्वाचन आयुक्तों के साथ बैठक में इन दलों ने यह राय दो-टूक लहजे में बताई। उनका यह तर्क गौरतलब है कि राज्य में ना तो कानून-व्यवस्था की कोई समस्या है और ना ही अब पहले जैसे नक्सल ग्रस्त इलाके हैं, जिन्हें तर्क बना कर अनेक चरणों में मतदान कराने की शुरुआत की गई थी। हालांकि 1990 के दशक में जब यह शुरुआत हुई, तब भी इसके पीछे की मंशा पर सवाल उठे थे, लेकिन तब प्रभु वर्ग में बिहार और पश्चिम बंगाल को लेकर एक खास तरह का प्रतिक्रिया भाव था, जिससे आयोग इस योजना को अमली जामा पहना सका।

कई चरणों में मतदान धीरे-धीरे देश के अनेक हिस्सों में आम चलन बन गया। मगर साथ ही यह धारणा भी मजबूत हुई है कि इस तरह चुनाव को अत्यधिक खर्चीला बनाया गया है, जिससे कम संसाधन वाले दलों के लिए प्रतिकूल स्थितियां बनी हैं। जबकि यह सत्ताधारी दलों के अनुकूल रहा है। अच्छी बात है कि केंद्र में सत्ताधारी गठबंधन में शामिल दलों की बिहार की ईकाइयों ने भी निर्वाचन आयोग के सामने कहा कि एक या दो चरणों में चुनाव करवा कर दलों एवं उम्मीदवारों को अतिरिक्त खर्च के बोझ से बचाया जा सकता है। खर्च के अलावा हाल में एक दूसरी समस्या भी खड़ी हुई है।

इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों के रख-रखाव और उस दौरान कथित हेरफेर की शिकायतों का फैलना अब हर चुनाव की कहानी बन गया है। इस संबंध में मतदान से लेकर मतगणना के दिन तक सोशल मीडिया पर तरह-तरह की चर्चाएं छायी रहती हैं। इसका भी समाधान मतदान के बाद यथाशीघ्र गणना ही है। वैसे भी वोट डालने के बाद हफ्तों या कई बार महीने भर से भी ज्यादा तक परिणाम का इंतजार करना विसंगति भरा अहसास देता है। इसलिए बिहार के दलों ने जो कहा है, निर्वाचन आयोग को अवश्य ही उसके अनुरूप चुनाव कार्यक्रम घोषित करना चाहिए। इससे एक नई शुरुआत होगी, जिसे देश भर में अपनाया जा सकेगा।

राशिफल

मेष राशिः आज आपका दिन उत्तम रहेगा। कुछ लोग आपको कंफ्यूज करने की कोशिश करेंगे। दूसरों की बातों में न आकर अपने निर्णय को ही सर्वोपरि रखें, इससे आपके कार्य बड़ी ही आसानी से पूरे होंगे। ऑफिस में अपने काम पर ध्यान देने से आप सम्मान के पात्र बने रहेंगे।

वृष राशिः आज आपका दिन लाभदायक रहेगा। आप अपने काम पर पूरा फोकस बनाये रखें, जल्द ही भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा। बिजी शेड्यूल से थोड़ा समय बच्चों के लिए निकालेंगे, बच्चे अपने मन की बात आपसे शेयर करेंगे। लवमेट एक-दूसरे पर विश्वास बनाए रखें, रिश्ते में मजबूती बनी रहेगी।

मिथुन राशिः आज आपका दिन अच्छा रहेगा। अपनी बातों से किसी को प्रभावित कर देंगे। समाज में किये गए सराहनीय काम को देखकर लोग आपसे कुछ अच्छा सीखेंगे, जिससे आपको गर्व होगा। शिक्षण संस्थान से जुड़े लोगों को ज्यादा लाभ होगा।

कर्क राशिः आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहेगा। आपका कोई काम जो काफी दिनों से रुका था, आज पूरा हो जाएगा। साथ ही आप काम करने के नए तरीकों पर विचार करेंगे। विद्यार्थियों द्वारा की गई मेहनत का शुभ परिणाम मिलेगा। जल्दबाजी में कोई भी निर्णय न लें, इससे बना बनाया काम बिगड़ सकता है। मित्रों की सलाह भी ले सकते हैं।

सिंह राशिः आज आपका दिन अच्छा रहेगा। मानवहित में किये गये कार्यों के कारण आपको सम्मान मिलेगा। गैर-जरूरी खर्चों पर रोक लगाकर आप बचत पर ध्यान देंगे। व्यवसायिक गतिविधियां मन मुताबिक चलेंगी। काम करने के तरीकों में बदलाव लाएंगे। आत्मविश्वास बनाए रखें। अवसर मिलने पर उसका फायदा उठाएं। काम पर ध्यान बनाए रखें।

कन्या राशिः आज आपका दिन अनुकूल रहेगा। सरकारी नौकरी करने वाले अपने काम पर ज्यादा ध्यान दें। किसी से बहस की स्थिति बन सकती है, ऐसे में मौन रहना बेहतर होगा। पब्लिक प्लेस पर छवि खराब न होने दें। लवमेट के रिश्ते में मधुरता बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला राशिः आज आपका दिन उत्तम रहेगा। आपके काम करने के तरीकों से लोग प्रभावित होंगे और आपका अनुसरण करेंगे। आप जिम्मेदारियों को बखूबी निभाएंगे। बातचीत के दौरान अपनी निजी बातें शेयर न करें। जिस काम की शुरुआत करेंगे, वह समय पर पूरा होगा।

वृश्चिक राशिः आज आपका दिन खुशहाल रहेगा। मित्रों से मन की बात शेयर करने से सुकून मिलेगा। आपको नई जानकारियां भी हासिल होंगी। रिश्तेदार से शुभ संदेश मिलेगा, जिससे खुशी दोगुनी होगी। बिजनेस में खास एग्रीमेंट होगा, लेकिन कॉम्पटीशन के दौर में कार्य करने के तरीकों में बदलाव जरूरी है।

धनु राशिः आज आपका दिन सामान्य रहेगा। निजी कामों पर बाहरी लोगों का दखल न होने दें। भावनाओं में आकर कोई फैसला न लें। ज्यादा काम के कारण थकान हो सकती है।छोटी-छोटी परेशानियां जल्द दूर होंगी। परिवार में सुखद माहौल रहेगा।

मकर राशिः आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। शाम का समय माता-पिता के साथ महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श करेंगे, जिससे अच्छा समाधान मिलेगा। किसी काम की शुरुआत करने से पहले शुभ मुहूर्त देखना बेहतर होगा। समाज में किये गए कार्यों से मान-सम्मान बढ़ेगा।

कुम्भ राशिः आज का दिन परिवार के लिए नई खुशियां लेकर आया है। किसी अनुभवी से मिली सलाह फायदेमंद साबित होगी। काम को लेकर आपके सपने काफी हद तक पूरे होंगे।

मीन राशिः आज का समय आपके लिए अच्छा है। पारिवारिक समस्या हल होगी और रुके काम में गति आएगी। सकारात्मक लोगों की सलाह फायदेमंद होगी। मेहनत का उचित फल जल्द मिलेगा। अफवाहों पर ध्यान न दें। ऑफिसियल यात्रा संभव है, जो शुभ होगी। जीवनसाथी के साथ डिनर प्लान करेंगे।

राहुल गांधी अपना काम कर रहे हैं

//अजीत द्विवेदी//

देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस के असली सर्वोच्च नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी क्या कुछ ऐसा कर रहे हैं, जो उनको नहीं करना चाहिए। यह बड़ा सवाल है क्योंकि वे जो कुछ भी करते हैं उस पर सत्तारूढ़ भाजपा की ओर से सवाल उठाया जाता है और सोशल मीडिया में सक्रिय भाजपा के इकोसिस्टम व कथित पत्रकारों की ओर से भी सवाल उठाया जाता है। वे युवाओं की बात करते हैं तो कहा जाता है कि युवाओं को उकसा रहे हैं।

वे लद्दाख के आंदोलन का समर्थन करते हैं तो कहा जाता है कि देश तोड़ने वालों के साथ हैं। विदेश में जाकर भाषण देते हैं और मौजूदा सरकार की कमियां गिनाते हैं तो उन पर विदेश में जाकर देश विरोधी काम करने का आरोप लगाया जाता है। वे 'वोट चोरी' के आरोप लगाते हैं और मतदाता सूची में गड़बड़ी का मुद्दा उठाते हैं तो कहा जाता है कि वे संस्थाओं को कमजोर करने का काम कर रहे हैं। वे क्रोनी कैपिटलिज्म का मुद्दा उठाते हैं तो कहा जाता है कि वे देश में आर्थिक तरक्की नहीं चाहते हैं और देश को पिछड़ा बनाए रखना चाहते हैं इसलिए उद्योगपतियों पर सवाल उठा रहे हैं। आदि, आदि।

वास्तविकता यह है कि इनमें से कोई भी काम ऐसा नहीं है, जो मुख्य विपक्षी पार्टी का नेता होने और लोकसभा में नेता विपक्ष होने के नाते उनको नहीं करना चाहिए। वे वही काम कर रहे हैं, जो करने की जिम्मेदारी उनको देश के नागरिकों ने दी है। ध्यान रहे देश के मतदाता सिर्फ सरकार नहीं चुनते हैं, बल्कि विपक्ष भी चुनते हैं। उन्होंने 2014 और 2019 में कमजोर विपक्ष चुना और मजबूत सरकार चुनी। लेकिन 2024 में कमजोर सरकार और मजबूत विपक्ष चुना। देश के सौ करोड़ मतदाताओं के जनादेश से ही नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं तो राहुल गांधी नेता प्रतिपक्ष बने हैं। जैसे प्रधानमंत्री जनता की ओर से दी गई जिम्मेदारी निभा रहे हैं वैसे ही राहुल गांधी भी मतदाताओं द्वारा की गई जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

हां, यह जरूर है कि वे इस जिम्मेदारी को और बेहतर ढंग से निभा सकते थे। उनके पास अब 21 साल का राजनीतिक और विधायी कामकाज का अनुभव है। इसमें से 10 साल उनकी पार्टी सरकार में रही तो निश्चित रूप से सरकार के कामकाज भी उनकी भूमिका रही। सो, वे सरकारी कामकाज के तौर तरीकों से परिचित हैं तो 11 साल की विपक्ष की राजनीति करके वे विपक्ष की भूमिका से भी बखूबी परिचित हैं। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को एक मजबूत विपक्ष के तौर पर काम करते देखा है। उन्हें यह जरूर सोचना चाहिए कि क्या वे उस तरह से विपक्ष की भूमिका निभा रहे हैं, जैसे भाजपा ने 2004 से 2014 के बीच निभाई थी। विपक्ष की भूमिका से आशय संसद के अंदर के कामकाज से नहीं है। वहां तो कांग्रेस और उसकी सहयोगी पार्टियां भी वैसे ही संसद स्थगित कर रही हैं, हंगामे और नारेबाजी कर रही हैं, जैसे भाजपा करती थी। लेकिन संसद के बाहर और मीडिया स्पेस में जिस तरह से भाजपा ने काम किया वह विपक्ष की टेक्स्टबुक भूमिका थी। कांग्रेस के सरकार में होने के बावजूद भाजपा ने कानून व्यवस्था से लेकर भ्रष्टाचार और महंगाई तक अपना नैरेटिव बनाया और कांग्रेस सारे समय उसका जवाब देती रही।

इसके उलट आज जब राहुल गांधी और कांग्रेस विपक्ष में हैं तब भी भाजपा और सरकार ही नैरेटिव बना रहे हैं और कांग्रेस उनका जवाब दे रही है। यानी विपक्ष में होकर भी कांग्रेस रिसीविंग मोड में है। यह भाजपा के नैरेटिव की ताकत है, उसकी होशियारी, अति सक्रियता और संसाधनों की बहुतायत है या कांग्रेस की कमजोरी है यह अलग बहस का विषय है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि पिछले 11 साल में एकाध मौकों को छोड़ दें तो कांग्रेस कभी भी सरकार को घेरने, उसे बैकफुट पर लाने और उसको जवाबदेह बनाने वाले नैरेटिव के सेंटर में नहीं रही। ज्यादातर मौकों पर अराजनीतिक समूहों ने सरकार को जवाबदेह बनाया। कांग्रेस को इस पर विचार करने की जरुरत है कि आखिर वह क्यों बहुत प्रभावी विपक्ष की भूमिका नहीं निभा पा रही है। उसे इस पर भी सोचना चाहिए कि भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कैसे लगातार एंटी इन्कम्बैंसी को कम करने या बढ़ने नहीं देने के लिए काम कर रहे हैं।

बहरहाल, विषयांतर हो रहा है लेकिन मूल बात यह है कि राहुल गांधी वही काम कर रहे हैं, जो देश के नेता प्रतिपक्ष के नाते उनको करना चाहिए। राहुल गांधी अगर चुनाव आयोग पर सवाल उठा रहे हैं और उसकी निष्ठा संदिग्ध बता रहे हैं तो वे ऐसा करने वाले पहले नेता प्रतिपक्ष नहीं हैं। जब भाजपा विपक्ष में थी तो उसके नेता भी चुनाव आयोग पर, चुनाव प्रक्रिया पर और ईवीएम पर सवाल उठाते रहे हैं। लालकृष्ण आडवाणी ने ईवीएम पर सवाल उठाए थे और उनके करीबी जीवीएल नरसिंहराव ने इस पर किताब लिखी थी। बाद में जीवीएल को राज्यसभा भेजा गया था। उससे भी बहुत पहले जब बैलेट से चुनाव होता था आडवाणी और दूसरे विपक्षी नेताओं ने आरोप लगाया था इंदिरा गांधी ने बैलेट पर ठप्पा लगाने वाली स्याही रूस से मंगाई है, जो मिट जाती है। सो, आज राहुल गांधी कह रहे हैं कि चुनाव आयोग मतदाता सूची में और मतदान प्रक्रिया में गड़बड़ कर रहा है तो यह विपक्ष के नेता का स्वाभाविक आरोप है।

ऐसे ही राहुल गांधी जब 'जेन जी' यानी 13 साल से लेकर 28 साल तक के युवाओं की बात करते हैं और कहते हैं कि उनको 'वोट चोरी' की असलियत का यकीन हो गया तो वे बरदाश्त नहीं करेंगे। इस पर भाजपा कह रही है कि राहुल गांधी युवाओं को नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसी तख्तापलट के लिए उकसा रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि पहले विपक्षी नेताओं ने इस तरह की बात नहीं की है या तख्तापलट की अपील नहीं की है। तमाम समाजवादी नेता आज भी राममनोहर लोहिया की इस बात को दोहराते हैं कि, 'जिंदा कौमें पांच साल तक इंतजार नहीं करतीं'। यहां तो लोहिया साफ साफ लोगों को बगावत के लिए उकसाते दिख रहे हैं लेकिन उनके इस बयान को स्वाभाविक लोकतांत्रिक भावना के तौर पर देखा गया। ऐसे ही जयप्रकाश नारायण ने जब सेना और पुलिस से अपील की थी कि वे सरकार के साथ असहयोग करें तो तब की कांग्रेस सरकार ने यही कहा था कि वे सेना और पुलिस को बगावत के लिए उकसा रहे हैं। लेकिन तब से लेकर आज तक यही माना जाता है कि जेपी लोकतंत्र की रक्षा कर रहे थे। सो, अगर डॉक्टर लोहिया और जेपी गलत नहीं थे तो राहुल कैसे गलत हैं।

जहां तक विदेश जाकर सरकार के खिलाफ बोलने का सवाल है तो इसका भी लंबा इतिहास रहा है। खुद प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने विदेशी धरती पर जाकर अपने से पहले वाली सरकारों के कामकाज की खूब आलोचना की। एक बार तो वे भवावेश में यहां तक कह गए थे कि 2014 से पहले लोगों को शर्म आती थी कि कहां से भारत में पैदा हो गए। यह बात मोदी ने विदेश में ही कही थी। उससे बहुत पहले जब संविधान के प्रावधानों का इस्तेमाल करके इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी लगाई थी तब सुब्रह्मण्यम स्वामी भी विदेश जाकर भारत सरकार के खिलाफ समर्थन जुटा रहे थे तो जेल में बंद जॉर्ज फर्नांडीज की पत्नी लैला कबीर भी विदेश जाकर उनकी रिहाई का आंदोलन चला रही थीं। सो, विदेश जाकर अपने देश की सरकार के कामकाज की आलोचना करना देश का अपमान नहीं होता है।

अब रही बात जन आंदोलनों का समर्थन करने की तो यह सबसे हैरान करने वाली बात है कि आंदोलनों से बनी और दशकों तक लगातार विपक्ष में रह कर आंदोलन खड़ा करने वाली भारतीय जनसंघ और भाजपा के नेता कैसे आंदोलन के समर्थन को देश विरोध बता सकते हैं। राहुल ने किसान आंदोलन का समर्थन किया या सीएए के खिलाफ हुए आंदोलन का समर्थन किया या लद्दाख के आंदोलन का समर्थन कर रहे हैं तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। ये सभी लोकतांत्रिक आंदोलन थे, जो इस देश के नागरिकों ने अपने अधिकार के लिए चलाए थे।

यह सरकार का जिम्मा होता है कि वह आंदोलन करने वालों से बात करे, उनकी मांगें सुने और उसका समाधान करे। विपक्ष तो ऐसे आंदोलन का समर्थन करेगा ही। अफसोस की बात है कि खुद कांग्रेस और राहुल गांधी कोई आंदोलन खड़ा नहीं कर पा रहे हैं। विपक्ष में रहते हुए भाजपा ने और उससे पहले भारतीय जनसंघ ने अनेक आंदोलन खड़े किए। जेपी का आंदोलन भी उनमें से एक था। याद करें आजादी के बाद इस देश में कितने आंदोलन हुए। भाषा के आंदोलन, मंदिर का आंदोलन, सत्ता बदलने का आंदोलन, नए राज्यों का आंदोलन, क्या उस समय की सरकारों ने इन आंदोलनों में शामिल नेताओं व नागरिकों को देशद्रोही माना!

हम युद्ध में लड़े नहीं पर शामिल है

//श्रुति व्यास//

दो साल हो गए है। एक ऐसे युद्ध के, जिसके हम सब, पूरी दुनिया किसी न किसी रूप में गवाह बनी हैं। इसे सभी ने हथियार उठाकर नहीं, बल्कि स्क्रीन उठाए देखा है। हथेली में थमी उस चमकदार स्क्रीन पर हमने सब होते देखा। भय और भयावहता को लाइव फीड की तरह देखा। फिर धीरे-धीरे देखने की आदत ही बना ली! सात अक्तूबर के दिन जब हमास ने हमला किया तो वह अक्लपनीय था। सब हतप्रभ। कुछ ही घंटों मे 1,200 से अधिक इजराइली मारे गए, ज़्यादातर मासूम नागरिक। घरों में, सड़कों पर, कीबुत्ज़ में, जीवन का उत्सव मनाने वाले एक संगीत समारोह में सभी तरफ।

तब दुनिया ने देखा – हमास के लड़ाकों द्वारा युवा महिलाओं को बंदी बनाते हुए। उनमें से एक को निर्वस्त्र कर, बेइज़्ज़ती करते हुए ग़ाज़ा की गलियों में ट्रक पर घुमाया गया। उसके परिवार को खबर तक नहीं थी कि वह मर चुकी है, जबकि दुनिया देख चुकी थी। हमने टीवी पर उस पिता को देखा जो कैमरे के सामने टूट रहा था, अपनी अगवा की गई बेटी के लिए विनती करता हुआ – उसका दुख दुनिया भर में प्रसारित हुआ, और हम सब बस देखते रहे। थोड़े दिन इजराइल का जवाबी हमला तर्कसंगत लगा। एक देश की संप्रभुता, आतंक-विरोध और न्याय की भाषा में ढला हुआ। बेंजामिन नेतन्याहू के इजराइल ने वही अमेरिकी मिसाल दोहराई अगर अमेरिका 9/11 के बाद अल-कायदा को मिटाने के लिए युद्ध कर सकता है, तो इजराइलनभी हमास को ÷नष्ट÷ करने के लिए कर सकता है। लेकिन इस भाषा के नीचे राजनीति की सुविधा छिपी थी। नेतन्याहू, जो घरेलू भ्रष्टाचार मामलों और विरोध प्रदर्शनों से घिरे थे, उन्हें युद्ध में राहत मिली – एक संकट जो विरोध को निगल गया, एक भय जो जनता को एक साथ बाँध गया।और इसके साथ ही शुरू हुआ दूसरा नरसंहार। इजराइली रॉकेटों ने ग़ाज़ा की बस्तियाँ समतल कर दीं। पूरे-पूरे परिवार एक ही वार में मिट गए। अस्पताल ईंधन के अभाव में अंधेरे में डूब गए। बच्चे तख्तों पर रखकर निकाले गए, राहत-काफ़िले सीमाओं पर रोके गए, शरणार्थी नंगे पाँव मलबे पर चलने लगे। यूनिसेफ़ के अनुसार युद्ध शुरू होने के बाद से ग़ाज़ा में 19 हज़ार से अधिक बच्चे मारे गए या लापता हुए हैं। और फिर आई मानव-निर्मित अकाल की त्रासदी। भूखे बच्चे, लापता माता-पिता, और एक ऐसी दुनिया जो न पहुँच सकी, न बोल सकी।

हमने वह दृश्य भी देखा जब अल-जज़ीरा के पत्रकार वायल दहदूह मलबे के बीच खड़े होकर रिपोर्टिंग करते हैं – उसी आवाज़ में जिसमें वे अपनी पत्नी और चार बच्चों की मौत की ख़बर बताते हैं।

कुछ दिन पहले, एक और पिता की तस्वीर देखी – अपनी एकमात्र बेटी नूर के लिए विलाप करता हुआ। छह वर्षों के इंतज़ार के बाद मिली वह बच्ची, जिसे उसने मलबे के नीचे खो दिया। माँ, चेहरे पर धूल और अविश्वास लिए, उस खंडहर पर खड़ी थी जिसने उसका पूरा संसार निगल लिया था। बचावकर्मी नंगे हाथों से मलबा खोद रहे थे, जब तक कि उन्हें वह छोटी सी निस्पंद देह नहीं मिली – जीवन रहित, पर माता-पिता अब भी साँस माँग रहे थे जहाँ अब साँस बाकी नहीं थी।दो साल बीत गए, और हर तस्वीर एक-सी हो गई – भयावह, परिचित, निर्दय। इजराइल में ख़ाली कुर्सियाँ, शब्बात डिनर पर गुम लोग, वे परिवार जो हर सुबह अनुपस्थिति के साथ जागते हैं। ग़ाज़ा में तंबू, मलबा, बेनाम कब्रें, धूल से ढके चेहरे। दोनों ओर से हर तस्वीर एक ही प्रश्न पूछती है – यह युद्ध अब क्या हासिल करना चाहता है?लेकिन जबकि यह सवाल अब भी अनुत्तरित है, राजनीति की मशीनरी चलती रहती है। शांति की बातचीतें फिर शुरू होती हैं – हर बार की तरह, जल्दबाज़ी में, औपचारिकता की तरह। क्योंकि हम पहले भी यहाँ आ चुके हैं – बार-बार।अक्तूबर 2023 के बाद से इजराइल और हमास के बीच सात युद्धविराम किए गए या प्रयास हुए। पहला, नवंबर में, सात दिनों की संधि थी – 100 से अधिक इजराइली बंधक और 240 फ़िलिस्तीनी कैदी छोड़े गए। फिर जैसे हर बार होता है, समझौते की स्याही सूखने से पहले ही बमबारी शुरू हो गई। बाद के सभी प्रयास – मिस्र, क़तर और अमेरिका की मध्यस्थता में – कुछ दिनों में ढह गए। हर बार वही हेडलाइनें, वही उम्मीदें, वही वादे, और फिर वही विस्फोट। हर विराम अस्थायी रहा, हर ख़ामोशी नाजुक। और हर बार, कीमत चुकाई नागरिकों ने – विस्थापितों ने, भूखों ने, शोकाकुलों ने – उस उम्मीद की, जो हर बार टूट जाती है।अब फिर, जैसे नियति है, इजराइली सरकार और सेना अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ग़ाज़ा शांति योजना के पहले चरण की तैयारी में हैं – एक ऐसी योजना जो रविवार की डेडलाइन में इतिहास को समेट लेना चाहती है। हमास ने भी बयान दिया है – बचे हुए 47 बंधकों की रिहाई के साथ युद्धविराम और ग़ाज़ा से अपने शासन का हटना। लेकिन जैसे ही यह घोषणाएँ आईं, उसी पल ग़ाज़ा सिटी से फिर तस्वीरें आईं – ओमर अल-मुख़्तार स्ट्रीट पर धमाके, धुआँ, भागती भीड़, और ट्रंप के रोकने के अनुरोध के बाद भी जारी बमबारी।

और दुनिया एक बार फिर देखती रही – थकी हुई, असमंजस में, और इस बार भी सहभागी की तरह – जबकि शांति बोली जाती रही, पर कभी जीने नहीं दी गई।अगर इतिहास बोल सकता, तो शायद आह भरता। वह याद दिलाता कि युद्ध कभी वैसे ख़त्म नहीं होते जैसे उनके कर्ता चाहते हैं। अमेरिका का वॉर ऑन टेरर इराक को राख बना गया, अफ़ग़ानिस्तान को उसी तालिबान के हवाले छोड़ गया जिससे वह लड़ा था। रूस-यूक्रेन युद्ध अब स्थायी घाव बन चुका है। हर युद्ध दृढ़ विश्वास से शुरू होता है और थकान में ख़त्म होता है; हर नेता जीत का दावा करता है, जबकि नागरिक उसकी क़ीमत चुकाते हैं। यह युद्ध भी अलग नहीं था। इजराइल ने सुरक्षा के नाम पर मलबा पाया, हमास ने अपने ही लोगों की लाशों पर नायकत्व गढ़ा, और दुनिया ने एक और पीढ़ी का दुख कमाया।

भला 40 हज़ार मौतों को कौन-सी तर्कसंगति सही ठहरा सकती है? जिनमें आधे बच्चे हैं। कौन-सी नीति उन बंधकों को लौटाएगी जो कभी लौटे नहीं, या उन शहरों को जो धूल बन गए। क्या संप्रभुता बचाई गई, या मानवता गंवाई गई। युद्ध का गणित हमेशा निर्मम होता है – सरकारें सीमाएँ गिनती हैं, शव नहीं। पर जिन्होंने अपने बच्चे, अपने माता-पिता, अपने प्रेमी खोए हैं, उनके लिए कोई झंडा उस रिक्तता को नहीं भर सकता।

अगर युद्ध शांति लाने के लिए होते, तो दुनिया आज इतनी टूटी, बिखरी हुई क्यों है। अगर प्रतिशोध व्यवस्था लौटाने के लिए था, तो इसने केवल क्रोध क्यों बढ़ाया। सच यही है – इस युद्ध में कोई नहीं जीता। न इजराइल, न हमास, न वह दुनिया जो खुद को शांति का मध्यस्थ कहती है। हम सब हार गए – विनाश के इस तमाशे से सुन्न, जिसे हम न रोक सके, न आँख फेर सके। ग़ाज़ा की त्रासदी, हर पिछले युद्ध की तरह, केवल इसलिए भयावह नहीं कि यह हुआ; बल्कि इसलिए है कि हमने इसे होने दिया, तब तक, जब तक अर्थ ही लहूलुहान नहीं हो गया। और अब फिर वही प्रश्न लौटता है। क्या हम सब इस युद्ध का हिस्सा नहीं बन चुके हैं। सीधे नहीं, पर चुपचाप देखकर, स्क्रॉल करते हुए, इसे स्पेक्टेकल की तरह स्वीकार करते हुए। ग़ाज़ा की भयावहता सिर्फ़ रॉकेटों और बमों से नहीं हुई – यह चुप्पी से हुई। तीन दशक पहले रवांडा में, दस लाख लोग मारे गए थे जबकि दुनिया देखती रही। तब यह चुप्पी दूरी और अंधकार से जन्मी थी – हम नहीं जानते वाले बहाने से। लेकिन ग़ाज़ा में हमने सब जाना, सब देखा – घर गिरते हुए, बच्चे भूख से मरते हुए, शहर धूल में बदलते हुए।

तस्वीरों की दुनिया

तमिलनाडु में 27वीं राष्ट्रीय तेल रिसाव आपदा आकस्मिक योजना (एनओएसडीसीपी) के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास (एनटीपीओएलआरईएक्स-एक्स) के 10वें संस्करण की बैठकें।

भारत के उपराष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति श्री सी. पी. राधाकृष्णन ने नई दिल्ली में भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद से उनके आवास पर मुलाकात की।

केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह नई दिल्ली के विज्ञान भवन में रक्षा आमंत्रण संवाद के दौरान स्टार्टअप्स के साथ बातचीत करते हुए।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह के साथ नई दिल्ली के कृषि भवन में जम्मू और कश्मीर के लिए पीएम-किसान की किस्त जारी करने में वर्चुअल रूप से भाग लिया।

केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह नई दिल्ली में राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर संबोधित करते हुए।

राज्यपाल रमेन डेका ने गौरेला-मरवाही-पेंड्रा जिला प्रवास के दौरान आज कलेक्ट्रेट परिसर में अपनी मां स्वर्गीय श्रीमती चंपावती डेका के नाम पर कदम्ब पौधा का रोपण किया।

यूनुस शासन का बड़ा फैसला

बांग्लादेश में शेख हसीना की अवामी लीग के खिलाफ औपचारिक जांच शुरू

नईदिल्ली, 08 अक्टूबर (एजेंसी)।

बांग्लादेश के अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय (आईसीटी) की जांच एजेंसी ने शेख हसीना की अवामी लीग के खिलाफ मानवता के खिलाफ अपराधों के आरोपों के संबंध में एक औपचारिक जांच शुरू की।विश्लेषकों का मानना है कि ये घटनाएं यूनुस शासन द्वारा की जा रही एक बड़ी राजनीतिक प्रतिशोध का हिस्सा हैं, क्योंकि अगस्त 2024 में प्रधानमंत्री शेख हसीना और उनके पार्टी सदस्यों के खिलाफ तुच्छ आधार पर कई मामले दर्ज किए गए थे।न्यायालय के मुख्य अभियोजक मोहम्मद ताजुल इस्लाम ने बताया कि एक जांच अधिकारी पहले ही नियुक्त किया जा चुका है। बांग्लादेश के प्रमुख बांग्ला दैनिक समकाल ने अवामी लीग के खिलाफ औपचारिक जांच की शुरुआत का संकेत दिया। नेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक मूवमेंट (एनडीएम) ने पहले ही अवामी लीग के खिलाफ मानवता के खिलाफ अपराधों के लिए एक शिकायत दर्ज की है। उन्होंने कहा कि एक प्रारंभिक जांच शुरू कर रहे हैं ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या अवामी लीग को एक आपराधिक संगठन के रूप में जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। जब पूरी जांच शुरू होगी, तो मामले की प्रगति का आकलन कर सकेंगे।ताजुल ने कहा कि इस महीने में जांच में महत्वपूर्ण प्रगति हो सकती है। कई मामलों की सुनवाई चल रही है, जिनमें से कई समाप्ति के करीब हैं। कई प्रमुख मामलों में चार्जशीट प्रस्तुत की जाएगी और औपचारिक आरोप भी दायर होंगे।

बिलासपुर बस हादसे में 18 की मौत, कई लोग दबे

पीएम मोदी और सीएम सुक्खू ने जताया दुख

बिलासपुर, 08 अक्टूबर (एजेंसी)।

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में मंगलवार को दर्दनाक हादसा हुआ है। बिलासपुर के झंडूता विधानसभा क्षेत्र में बस पर पहाड़ से मलबा गिर गया। हादसे में 18 लोगों की मौत हो गई। कई लोगों के दबे होने की आशंका है। यह हादसा भड्डू पुल के पास हुआ है। बस की छतरी चीर पहाड़ से मलबा गिरकर अंदर घुस गया। बस से अभी तक कुल 18 शव निकाले गए हैं। सभी शवों को बरठी हॉस्पिटल पहुंचाया गया है। बस का नाम आयुष है और यह बरठी भड्डू मार्ग पर झंडूता विधानसभा क्षेत्र में चलती है। बिलासपुर बस हादसे पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने दुख जताया है। उन्होंने अपने एक्स पर लिखा कि बस दुर्घटना में लोगों की मौत का समाचार अत्यंत दुखद है। अपने प्रियजनों को खोने वाले परिवारों के प्रति मैं संवेदना व्यक्त करती हूं और घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं। पीएम मोदी ने कहा कि बिलासपुर में हुए हादसे में हुई जान-माल की हानि से दुखी हूं। इस कठिन समय में मेरी संवेदनाएं प्रभावित लोगों और उनके परिवारों के साथ हैं। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से प्रत्येक मृतक के परिजनों को 2 लाख रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी। घायलों को 50 हजार रुपये दिए जाएंगे। हिमाचल प्रदेश के डिप्टी सीएम मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि बस हादसे में 15 लोगों की जान चली गई है। 18 लोगों को बाहर निकाला था, जिनमें से तीन को अस्पताल भेजा गया है। बताया जा रहा है कि बस में करीब 25-30 लोग सवार थे।हादसे में सगे भाई बहन बच गए द्य अपने रिश्तेदार के यहां से फंक्शन से अपने घर फगोण आ रहे थे। हादसे पर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने गहरा

शोक व्यक्त किया है। उन्होंने मृतकों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इस कठिन समय में प्रभावित परिवारों के साथ पूरी मजबूती से खड़ी है और उन्हें हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी। मुख्यमंत्री निरंतर जिला प्रशासन के संपर्क में हैं और उन्होंने राहत एवं बचाव कार्यों में और अधिक तेजी लाने के निर्देश दिए हैं।

उन्होंने यह भी सुनिश्चित करने को कहा है कि घायलों को तुरंत उपचार हेतु अस्पताल पहुंचाया जाए और उनके इलाज की पूरी व्यवस्था की जाए। मुख्यमंत्री शिमला से पूरे हालात की लगातार निगरानी कर रहे हैं।दुर्घटना पर भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिंदल, पूर्व केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर, पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर, प्रो प्रेम कुमार धूमल, शांता कुमार, सांसद सुरेश कश्यप, कंगना रनौत, राजीव भारद्वाज, हर्ष महाजन, इंदु गोस्वामी, महामंत्री सिकंदर कुमार, संजीव कटवाल, पायल, संगठन महामंत्री सिद्धार्थन, रणधीर शर्मा, त्रिलोक जमवाल, सुरेश चंदेल, राकेश जमवाल, विपिन परमार, कर्ण नंदा, स्वदेश ठाकुर ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने मृतकों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है।पूर्व मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने भूस्खलन की चपेट में आने की दुखद घटना पर दुख जताते हुए इस हादसे में जान गंवाने वाले लोगों श्रद्धांजलि देते हुए परिजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्ति की हैं। साथ ही प्रशासन से राहत और बचाव कार्य में तेजी लाने का आग्रह किया है जिससे फंसे हुए लोगों को सकुशल निकाला जा सके।

जयपुर-अजमेर हाईवे पर गैस सिलिंडर से भरे ट्रक में धमाका, मची अफरा-तफरी

जयपुर। राजस्थान के जयपुर-अजमेर हाईवे पर मंगलवार देर रात बड़ा हादसा हो गया। मौजमाबाद इलाके के सावरदा पुलिया के पास एक गाड़ी ने गैस सिलिंडर से लदे ट्रक को पीछे से टक्कर मार दी, जिसके बाद जोरदार धमाके के साथ आग लग गई। आग लगते ही पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। हाईवे पर वाहनों की आवाजाही रोक दी गई और दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंच गईं। सूत्रों के मुताबिक, हादसे के वक्त ट्रक में एलपीजी सिलिंडर भरे हुए थे।राजस्थान के उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा तुरंत मौके पर पहुंचे और राहत कार्य की निगरानी की। उन्होंने बताया, हादसे में शामिल वाहन के ड्राइवर की पहचान अभी नहीं हो पाई है। ट्रक के ड्राइवर और कंडक्टर को अस्पताल भेजा गया है। आग पर काबू पा लिया गया है और प्रशासन लगातार निगरानी कर रहा है। फिलहाल, किसी के हताहत होने की खबर नहीं है लेकिन सड़क के दोनों ओर ट्रैफिक को रोक दिया गया है। दमकल विभाग की टीम और प्रशासन पूरी सतर्कता के साथ काम कर रहे हैं। जयपुर रेंज के आईजी राहुल प्रकाश ने बताया कि यह हादसा उस जगह हुआ जहां सड़क किनारे ढाबा है और कई ट्रक चालक वहीं रुकते हैं।

कफ सीरप से मौत के मामले में सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दायर, CBI जांच की मांग

भोपाल, 08 अक्टूबर (एजेंसी)।

मध्य प्रदेश और राजस्थान में जहरीले कफ सीरप के सेवन से बच्चों की मौत के मामले में सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दायर की गई है। इस याचिका में औषधि सुरक्षा तंत्र में सुधार और जांच की मांग की गई है। अधिवक्ता विशाल तिवारी द्वारा दायर इस याचिका में अदालत की निगरानी में जांच कराने का अनुरोध किया गया है। इसके साथ ही, शीर्ष कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में राष्ट्रीय न्यायिक आयोग या विशेषज्ञ समिति के गठन की भी मांग की गई है। याचिका में यह भी कहा गया है कि विभिन्न राज्यों में जहरीले कफ सीरप के कारण हुई बच्चों की मौत से संबंधित सभी लंबित प्राथमिकी और जांच को सीबीआइ को सौंपा जाए। इसमें निष्पक्षता और एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए सेवानिवृत्त न्यायाधीश की निगरानी में जांच का अनुरोध किया गया है। याचिका में यह भी उल्लेख किया गया है कि राज्य-स्तरीय जांचों के कारण जवाबदेही घट गई है, जिससे खतरनाक औषधियां बाजार में पहुंच रही हैं। याचिका में अदालत से केंद्र सरकार को राष्ट्रीय स्तर पर एक न्यायिक या विशेषज्ञ निकाय गठित करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है ताकि उन नियामक कमियों की पहचान की जा सके जिनके कारण घटिया दवाइयां बाजार में पहुंचीं।इसमें अदालत से यह भी आग्रह किया गया है कि आगे किसी भी बिक्री या निर्यात की अनुमति देने से पहले सभी संदिग्ध उत्पादों का एनएबीएल-मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं के माध्यम से विषाक्तता परीक्षण अनिवार्य किया जाए।

श्रीगंगानगर में मतांतरण के आरोप में पादरी का पुत्र गिरफ्तार, पिता है फरार

श्रीगंगानगर। राजस्थान के श्रीगंगानगर में एक पादरी और उसके पुत्र पर बीमारी ठीक करने के बहाने मतांतरण कराने का आरोप लगा है। दोनों पिता-पुत्र अन्य धर्मों के प्रति अपशब्दों का प्रयोग करते हैं।पुलिस ने इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कर पुत्र को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि पिता फरार है। श्रीगंगानगर जिले के हिंदुमल कोट क्षेत्र में पिता-पुत्र ने गरीब और दलित लोगों को पैसे और बीमारी ठीक करने का लालच देकर मतांतरण कराने का प्रयास किया। खाटनवाला गांव के निवासी सतनाम सिंह ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, जिसमें उन्होंने बताया कि वह लंबे समय से बीमार हैं। पादरी बन्नू सिंह ने उन्हें ईसाई धर्म अपनाने का सुझाव दिया, यह कहते हुए कि इससे उनकी बीमारी ठीक हो जाएगी।

अफगानिस्तान में विदेशी सैन्य ढांचा स्थापित करने के प्रयासों का भारत ने भी किया विरोध, बैठक में चीन और पाक भी शामिल

नईदिल्ली, 08 अक्टूबर (एजेंसी)।

भारत मंगलवार को रूस, चीन और सात अन्य देशों में शामिल हो गया, जिन्होंने अफगानिस्तान में विदेशी सैन्य ढांचे की स्थापना के प्रयासों का विरोध किया है। इन देशों का यह रुख अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस बयान के बाद आया, जिसमें उन्होंने अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज तालिबान से रणनीतिक रूप से अहम बगराम एयरबेस अमेरिका को सौंपने का आग्रह किया था।रूस की राजधानी मास्को में मास्को फार्मेट वार्ता हुई। बैठक में हिस्सा लेने वाले देशों ने अफगानिस्तान के विकास पर गहन चर्चा की।

बयान के अनुसार, इन देशों ने अफगानिस्तान और पड़ोसी देशों में सैन्य ढांचे की स्थापना के प्रयासों को अस्वीकार्य करार दिया और कहा कि यह क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के हित में नहीं है। तालिबान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी ने पहली बार मास्को फार्मेट वार्ता में भाग लिया। कुछ सप्ताह पहले ही ट्रंप ने कहा था कि तालिबान को बगराम एयरबेस अमेरिका को सौंप देना चाहिए, क्योंकि यह वाशिंगटन द्वारा स्थापित किया गया था। मास्को वार्ता में भारत, रूस और चीन के अलावा ईरान, कजाखस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान शामिल हुए। मास्को में भारतीय दूतावास ने बताया कि राजदूत विनय कुमार के नेतृत्व में बैठक में शामिल हुए भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने एक स्वतंत्र, शांतिपूर्ण और स्थिर अफगानिस्तान और अफगान लोगों की सामाजिक-आर्थिक विकास और समृद्धि का समर्थन किया।

पाकिस्तान को एआईएम-120 एयर-टू-एयर मिसाइलें बेच सकता है अमेरिका, खरीदारों की सूची में किया शामिल

नई दिल्ली 08 अक्टूबर। पाकिस्तान को अमेरिका से एआईएम-120 उन्नत मध्यम दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलें मिल सकती हैं। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार हाल ही में अमेरिका के युद्ध विभाग द्वारा अधिसूचित हथियार अनुबंध में पाकिस्तान को एआईएम-120 एएमआरएएम खरीदारों की सूची में शामिल किया गया है। अमेरिका के रक्षा विभाग का ही नया नाम युद्ध विभाग है। अधिसूचना में कहा गया है, आर्डर पर काम मई 2030 के अंत तक पूरा होने की उम्मीद है। हालांकि यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि पाकिस्तान को कितनी नई एएमआरएएम मिसाइलें दी जाएंगी, लेकिन इस घटनाक्रम से पाकिस्तानी वायुसेना के एफ-16 बेड़े में संभावित अपग्रेशन के बारे में अटकलें शुरू हो गई हैं।एएमआरएएम का उपयोग विशेष रूप से एफ-16 लड़ाकू विमानों में किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान के चीफ आफ एयर स्टाफ एयर चीफ मार्शल जहीर अहमद बाबर ने जुलाई में अमेरिकी विदेश विभाग का दौरा किया था।

सोनीपत में 11 साल से रुके सेक्टरों का विकास कार्य शुरू महिलाओं ने बुलडोजर के सामने लेट कर किया विरोध

राई, 08 अक्टूबर (एजेंसी)।

गांव नांगल कलां के पास कई सेक्टरों को विकसित करने का काम 11 साल से अटका पड़ा था। काफी किसान टीडीआई बिल्डर पर वादा खिलाफी और अनुबंध की शर्तें पूरी नहीं करने का आरोप लगाकर कब्जा नहीं छोड़ रहे थे। मंगलवार को एसएमडीए के अधिकारी भारी पुलिस बल के साथ पहुंचे और पांच जगहों से कब्जे हटाकर सीवर लाइन बिछाने का काम शुरू करवाया। इस दौरान काफी महिलाएं बुलडोजर के सामने लेट व बैठ गईं। महिला पुलिस कर्मियों ने इन्हें हटाते हुए समझाकर निर्माणस्थल से दूर कर दिया। दोपहर एक बजे से देर शाम तक चली कार्रवाई में अधिकारियों ने सीवर लाइन बिछाने का काम शुरू करवाया।वर्ष 2014 में गांव नांगल कलां व उसके आसपास सेक्टर-58, 59, 60, 61, 63 और 64 को विकसित करने का लाइसेंस टीडीआइ इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड को सौंपा गया था। हजारों लोगों ने यहां पर प्लाट खरीदकर घर बना दिए, लेकिन इसके तहत 17 जगहों पर 30 मीटर व 45 मीटर चौड़ी सड़कों का निर्माण नहीं हो पाया। छह जनवरी, 2014 से सड़कों की जमीन एचएसवीपी को ट्रांसफर कर दी थी, लेकिन किसानों के विवाद के कारण कई जगह लिंक रोड और सीवर लाइनें बिछने का काम नहीं हो पाया।जुलाई

के अंत में जब टीडीआई ने सड़कों का निर्माण शुरू किया तो ग्रामीणों ने मशीनों से सड़कें खोदकर काम रुकवा दिया। किसान टीडीआई बिल्डर पर अनुबंध की शर्तों के अनुसार विकसित प्लाट नहीं देने और मुआवजा पूरा नहीं देने का आरोप लगा रहे हैं। 16 जुलाई को डीसी सुशील सारवान ने मौके का दौरा कर अधिकारियों व किसानों से विवाद का कारण पूछा। इसके बाद किसानों को वार्ता के लिए बुलाया गया, लेकिन अब विवाद का निपटारा नहीं हो सका। इस दौरान डीसी ने सोनीपत महानगर विकास प्राधिकरण को किसानों के कब्जे हटाकर सड़कों व सीवर लाइनों के निर्माण का काम शुरू कराने के आदेश दिए। एसएमडीए के मुख्य अभियंता योगेश मोहन मेहरा ने बताया कि मंगलवार को सीवर लाइन बिछाने का काम शुरू कराया गया। पांच जगहों से कब्जा हटवाकर लाइन बिछाई जाएगी। गांव नांगल कलां की जमीन पर बसे सेक्टरों के लिए हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण ने गांव अटेरना में 30 करोड़ से 15 एमएलडी का एसटीपी बनकर तैयार है, लेकिन सेक्टरों में कई जगह सीवर लाइनें न बिछ पाने से इस तक दूषित पानी नहीं पहुंच रहा। सीवर लाइन न बिछने से कई जगह सड़कें भी नहीं बन सकीं। अब इसका टेंडर जारी कर दिया है, अब जल्द ही सीवर लाइनें बिछने व सड़क बिछने का काम पूरी कर लिया जाएगा।मंगलवार को सबसे पहले सेक्टर-69 में कार्रवाई शुरू की गई तो लक्ष्मण, उसके बड़े भाई जयप्रकाश ने विरोध किया। दोनों ने कहा कि यह जमीन उसकी बहन सुनीता की है। इस पर कोर्ट में मामला विचाराधीन है। यहां पर महिलाएं बुलडोजर के सामने लेट व बैठ गईं। महिला पुलिस कर्मियों ने उन्हें वहां से हटाया। इसके बाद सेक्टर-61-62 की डिवाइडिंग रोड, पतला गांव की ओर जाने वाले पर रास्ते डिस्पोजल के पास और इसी रास्ते पर एक अन्य जगह पर पाम निर्माण शुरू कराया गया।इस दौरान डीटीपी अजमेर सिंह, एसएमडीए की डीटीपी नीलम, एसएमडीए के एसई कृष्ण कुमार धनखड़, कार्यकारी अभियंता अमित कौशिक, मोहम्मद आशिक, आलोक सिंह, जगदीश चंद शर्मा, कुंडली थाना प्रभारी सेठी मलिक अपने जवानों के साथ मौजूद रहे।

यूपी में 18 हजार वाहनों का चालान, मिशन शक्ति अभियान के तहत हटाए काली फिल्म और हूटर

लखनऊ। राज्य में महिलाओं व बेटियों की सुरक्षा व आत्मनिर्भरता को लेकर चलाए जा रहे मिशन शक्ति-5.0 अभियान के तहत 22 सितंबर से पहली अक्टूबर तक पुलिस ने 18,215 वाहनों के चालान किया है। 8.5 लाख वाहनों की जांच के बाद ही हजार से ज्यादा वाहनों के शीशों पर लगी काली फिल्में, 2817 हूटर और 1087 बत्तियां हटाई गईं।अभियान की नोडल अधिकारी एडीजी पद्मजा चौहान ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर 22 सितंबर से राज्य में शुरू किए गए मिशन शक्ति अभियान के तहत अपर पुलिस महानिदेशक, पुलिस महानिदेशक, उप महानिरीक्षकों, पुलिस आयुक्तों, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों, पुलिस अधीक्षकों सहित 24,457 पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों की टीमों ने 71,473 सार्वजनिक स्थलों पर फुट पेट्रोलिंग कर वाहनों की जांच कीसाथ ही महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष रूप से वाहन पर शासकीय और जाति सूचक शब्दों के इस्तेमाल को लेकर 14,504 वाहन चालकों के विरुद्ध कार्रवाई की गई है। अभियान के तहत 3,38,305 व्यक्तियों को चेतावनी दी गई।उन्होंने ने बताया कि वाहन नियमों का उल्लंघन करने पर 3,654 वाहनों को सीज किया गया है।

लॉटरी टिकटों की छपाई पर व्यापार कर को लेकर सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, टैक्स रखा बरकरार

नईदिल्ली, 08 अक्टूबर (एजेंसी)।

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को 25 साल पुराने एक मामले में निर्णय देते हुए एक कंपनी के लाटरी टिकटों की छपाई में उपयोग की जाने वाली स्याही और अन्य सामग्री पर व्यापार कर लगाने को सही ठहराया।जस्टिस जेबी पार्डीवाला और जस्टिस केवी विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि ये सामग्री उत्तर प्रदेश व्यापार कर अधिनियम, 1948 की धारा 2एफ के तहत कार्य अनुबंध के अंतर्गत आती हैं। गाजियाबाद स्थित प्रिंटिंग कंपनी मेसर्स एरिस्टो प्रिंटर्स प्राइवेट लि. ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के 2010 के फैसले के खिलाफ अपील की थी। हाई कोर्ट ने राजस्व विभाग को पुनरीक्षण याचिकाओं को स्वीकार करते हुए टैक्स की मांग को बहाल कर दिया था।

कंपनी ने अपने ग्राहकों द्वारा दिए गए कागज का उपयोग कर लाटरी टिकटों की छपाई की और इसके लिए स्याही, रसायनों और अन्य सामग्री की खरीद की।व्यापार कर अधिकारी ने 28 अक्टूबर, 1999 को कंपनी के कर निर्धारण वर्ष 1996-97 और 1997-98 के दौरान उपयोग की गई सामग्री पर कर लगाया। उपायुक्त (अपील) ने स्याही और रसायनों पर कर हटा दिया, लेकिन पैकिंग सामग्री पर कर को बरकरार रखा। न्यायाधिकरण ने 2002 में करदाता के पक्ष में फैसला सुनाया, लेकिन इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 2010 में इसे पलट दिया। शीर्ष अदालत ने उच्च न्यायालय के निर्णय को बरकरार रखते हुए कहा कि कर लगाने के लिए तीन शर्तें पूरी होनी चाहिए।

चमोली में भूस्खलन का अलर्ट, हेमकुंड साहिब व फूलों की घाटी नहीं भेजे गए यात्री

गोपेश्वर, 08 अक्टूबर (एजेंसी)।

चमोली जिले में चोटियों पर जारी बर्फबारी और जीएसआइ के भारी भूस्खलन के अलर्ट को देखते हुए मंगलवार को हेमकुंड साहिब व फूलों की घाटी की यात्रा के साथ ही उच्च हिमालयी क्षेत्रों में आवाजाही स्थगित रही। संतोषप, फूलों की घाटी, हेमकुंड सहित उच्च हिमालयी क्षेत्रों में जाने के लिए 1500 से अधिक लोग विभिन्न स्थानों पर इंतजार करते रहे।दिनभर पुलिस, प्रशासन, आपदा प्रबंधन की टीम सतर्क रही। भूस्खलन जोनों में पुलिस की देखरेख में वाहनों की आवाजाही कराई गई। लोगों ने भी नदी-नालों के किनारे जाने से परहेज किया। हालांकि, घांघरिया स्थित बेस कैंप से तड़के चार बजे हेमकुंड साहिब के लिए 30 से अधिक तीर्थयात्री रवाना हो गए थे, जो भारी बर्फबारी में फंस गए। पुलिस और एसडीआरएफ की टीम उन्हें सुरक्षित घांघरिया वापस लाई।पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात का सिलसिला शुरू होने से यात्रा का रोमांच बढ़ गया है, लेकिन कहीं-कहीं हालात निकट भी हो गए हैं। इस बीच सोमवार को भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) ने लिए गढ़वाल मंडल के तीन जिलों टिहरी, रुद्रप्रयाग और चमोली में भारी भूस्खलन की चेतावनी जारी कर दी। इसके दृष्टिगत चमोली जिले में प्रशासन सुबह होते ही अलर्ट मोड पर आ गया और हेमकुंड साहिब व फूलों की घाटी की यात्रा के साथ उच्च हिमालयी क्षेत्रों में आवाजाही पर रोक का आदेश जारी कर दिया, लेकिन तब तक घांघरिया से यात्रियों का एक दल हेमकुंड के लिए रवाना हो चुका था, जो कुछ दूर जाकर बर्फबारी में फंस गया। उसे सुरक्षित वापस लाने के लिए पुलिस और एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची।गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब मैनेजमेंट ट्रस्ट के सीईओ सरदार सेवा सिंह ने बताया कि हेमकुंड साहिब और लोकपाल लक्ष्मण मंदिर के कपाट 10 अक्टूबर को बंद होने हैं। इसके लिए जत्थों का पहुंचना जारी है। गोविंदघाट व घांघरिया में लगभग एक हजार तीर्थयात्री हेमकुंड जाने के लिए इंतजार कर रहे हैं।इनमें 500 से अधिक तीर्थयात्री मंगलवार को पहुंचे हैं। बुधवार को तीर्थ यात्रियों को हेमकुंड भेजा जाएगा। फूलों की घाटी जाने के लिए घांघरिया में 35 से अधिक पर्यटक भी मौजूद थे, जिन्हें रोका गया है।जीएसआइ की ओर से भूस्खलन की चेतावनी के दृष्टिगत मंगलवार को रुद्रप्रयाग जिले में आपदा प्रबंधन से जुड़े सभी विभाग हाई अलर्ट पर रहे। जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी एनएस रजवार ने बताया कि तहसील से लेकर ग्राम स्तर तक सभी विभागों को सतर्क रहने के निर्देश दिए गए थे। पुलिस, प्रशासन और राजस्व विभाग के अधिकारी-कर्मचारी लगातार निगरानी में जुटे रहे। हालांकि, इस दौरान किसी प्रकार की हानि नहीं हुई।

बिहार में इंटरमीडिएट की छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म, चार युवकों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

बांका। शंभुगंज थाना क्षेत्र के एक गांव की इंटरमीडिएट की छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पीड़िता ने सीमावर्ती किरणपुर निवासी चार युवकों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। उसने बताया कि वह अजगैबीनाथ धाम स्थित छात्रावास में रहकर पढ़ाई करती है और सोमवार को एक परिचित के साथ घर लौट रही थी। इसी दौरान बदुआ नदी के समीप तटबंध पर चार युवकों ने जबरन छेड़छाड़ की और विरोध करने पर दुष्कर्म किया। घटना के बाद पीड़िता ने डायल 112 पर पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और उसे थाने लाया गया। थानाध्यक्ष बबलू कुमार ने बताया कि प्राथमिक जांच में घटना की पुष्टि हुई है। चूंकि घटना स्थल भागलपुर जिले के बाथ थाना क्षेत्र में आता है, इसलिए मामले की जांच और आगे की कार्रवाई की जिम्मेदारी संबंधित थाना को सौंप दी गई है।

आलिया भट्ट से निकिता दत्ता तक, बॉलीवुड की योग देवियां जो फिटनेस में भरती हैं प्राण

बॉलीवुड की चकाचौंध भरी दुनिया में, जहाँ हर जगह परफेक्शन की मांग होती है और हर किरदार दृढ़ता की परीक्षा लेता है, कुछ अभिनेत्रियाँ ऐसी हैं जिन्होंने अपनी जगह जिम या रेड कार्पेट पर नहीं, बल्कि योगा मैट पर बनाई है। इन सितारों के लिए योग सिर्फ फिटनेस नहीं, बल्कि एक दर्शन है, जो उन्हें शरीर और आत्मा, दोनों रूपों में मजबूत और संतुलित रखता है। शिल्पा शेट्टी: पिछले दो दशकों से शिल्पा शेट्टी सौम्यता, वेलनेस और आंतरिक शांति की प्रतीक रही हैं। अपनी किताबों, डीवीडीज़ और डिजिटल फिटनेस प्लेटफॉर्म्स के जरिए उन्होंने योग को एक जीवनशैली का रूप दे दिया है। उनकी सुबहें सूर्य नमस्कार से शुरू होती हैं और दिन का अंत कृतज्ञता के साथ। यही दिनचर्या उन्हें शोबिज़ की भागदौड़ में भी शांत, संतुलित और दमकता हुआ बनाए रखती है। करीना कपूर खान: करीना कपूर खान की फिटनेस यात्रा उनकी फिल्मों जितनी ही प्रसिद्ध है। कभी साइज़ ज़ीरो ट्रेंड की पहचान रही करीना, अब माइंडफुल फिटनेस की मिसाल बन चुकी हैं। उनके लिए योग बाहरी रूप से सुंदर दिखने का नहीं, बल्कि मन, शरीर और सांस के संतुलन का माध्यम है।

निकिता दत्ता: नई पीढ़ी की अभिनेत्रियों में निकिता दत्ता अपनी शांत लेकिन दृढ़ योग साधना के लिए अलग पहचान रखती हैं। उनके सोशल मीडिया पर अक्सर शांत आसनों और मानसिक संतुलन पर उनके विचार दिखाई देते हैं। निकिता के लिए योग कोई प्रदर्शन नहीं, बल्कि आत्म-संवाद का एक पवित्र स्थान है, जहाँ वे बाहरी शोर से दूर होकर अपने भीतर की शांति से जुड़ती हैं। उनकी नियमितता और सहज ऊर्जा यह दर्शाती है कि कैसे योग का प्रभाव चमक-दमक से परे, जीवन को भीतर से निखारता है।

आलिया भट्ट: व्यस्त शूटिंग शेड्यूल और थका देने वाली दिनचर्या के बीच, आलिया भट्ट के लिए योग एक एंकर की तरह है। उन्हें एरियल योगा बेहद पसंद है, और वे अक्सर अपनी योग साधना की झलक सोशल मीडिया पर साझा करती हैं। आलिया की फिटनेस यात्रा उनकी जीवन दृष्टि को दर्शाती है, जिसमें लचीलापन, अनुशासन और संतुलन का समावेश है। मलाइका अरोड़ा: मलाइका अरोड़ा न केवल एक प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं, बल्कि प्रमाणित योग प्रशिक्षक भी हैं। उन्होंने अपना खुद का वेलनेस स्टूडियो स्थापित किया है और योग को शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के समग्र मार्ग के रूप में प्रचारित करती हैं। उनके लिए योग केवल शरीर को नहीं, बल्कि मन को भी स्वस्थ रखने का साधन है। चाहे शिल्पा की शांति हो या आलिया की अनुशासन भरी लचक, निकिता की आत्मिक गहराई हो या मलाइका का समर्पण, इन बॉलीवुड देवियों ने साबित कर दिया है कि असली सुंदरता और ताकत भीतर की संतुलन से आती है।

कृति सेनन की हल्दी रस्म में लहूलुहान होकर पहुंचे धनुष, तेरे इश्क में का टीजर कर देगा इमोशनल

फिल्मी दुनिया में जब भी कोई बड़ा नाम और नया प्रोजेक्ट सामने आता है, तो दर्शकों की उम्मीदें अपने आप बढ़ जाती हैं। खासतौर पर जब ये नाम आनंद एल रॉय का हो, जिन्होंने सिनेमा को रांझणा जैसी यादगार फिल्म दी। आनंद एल रॉय फिर से अपनी नई फिल्म के जरिए पर्दे पर जादू बिखेरने के लिए तैयार हैं। वह तेरे इश्क में नामक फिल्म लेकर आ रहे है। इस फिल्म में उन्होंने दो बड़े सितारों धनुष और कृति सेनन को कास्ट किया है। इस फिल्म को देखने के लिए दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। मेकर्स ने बुधवार को फिल्म का टीजर जारी किया। तेरे इश्क में में एक ऐसी प्रेम कहानी है जो आनंद एल रॉय की पिछली फिल्मों से थोड़ी अलग है। धनुष इस फिल्म में शंकर नाम के किरदार में नजर आएंगे, जो वायुसेना में अधिकारी हैं। उनकी भूमिका को देखकर लगता है कि फिल्म में देशभक्ति के साथ-साथ प्यार की एक नई कहानी पेश की जाएगी। वहीं कृति सेनन मुक्ति के रोल में दिखेंगी, जो इस कहानी का दूसरा बड़ा हिस्सा हैं। इस जोड़ी की केमिस्ट्री पर लोगों की नजरें टिकी हैं, क्योंकि दोनों ही कलाकार अपने दमदार अभिनय के लिए जाने जाते हैं। फिल्म का टीजर रोमांस और भावनाओं से भरपूर है। टीजर की शुरुआत में शादी का माहौल दिखाया जाता है, जिसमें कृति सेनन की हल्दी रस्म होती है। इस रस्म में मौजूद सभी लोग नाच-गाने कर रहे होते हैं और कृति को हल्दी लगाते हैं। इस बीच सामने से धनुष घायल अवस्था में चलते हुए आते हैं।

तरस नई आया फेम जैस्मिन सैंडलस का नया गाना पोल्स हुआ रिलीज

जैस्मिन सैंडलस, जो यार ना मिले (किक) और तरस नई आया (मुन्ज्या) जैसे चार्टबस्टर गानों की पॉवरहाउस आवाज़ हैं, उन्होंने अपना लेटेस्ट इंडिपेंडेंट सिंगल पोल्स रिलीज़ कर दिया है। यह ट्रैक आज ही लाइव हुआ है और फैंस व संगीत प्रेमियों से इसे ज़बरदस्त प्यार मिल रहा है। जैस्मिन ने कहा, पोल्स मेरे लिए एक बिल्कुल नई शुरुआत है, जैसे एक कलाकार के रूप में मेरा पुनर्जन्म हुआ हो। इसमें एक डेब्यू सॉन्ग जैसी ऊर्जा और ताज़गी है, भले ही मैंने 2008 में अपना पहला ट्रैक मुस्कान रिलीज़ किया था। वे बीते साल मेरे लिए प्रैक्टिस का समय थे, और पोल्स के साथ अब असली खेल शुरू हुआ है। यह गाना रचनात्मक उत्साह और खोज से भरी एक नई यात्रा की शुरुआत है। उन्होंने आगे कहा, पोल्स का डांस स्टाइल हिप हॉप है और मैंने हुक स्टेप सेट पर ही सीखा, यह बहुत ऑर्गेनिक और मज़ेदार प्रोसेस था। गाने के बोल श्लोक लाल, मैंडी गिल और हरजोत कौर ने खूबसूरती से लिखे हैं। म्यूज़िक वीडियो का कॉन्सेप्ट डायरेक्टर प्रीत सिंह का शानदार विचार था- इसे जेल के अंदर सेट करना और मेरा एक विद्रोही, बेफिक्र अपराधी का किरदार निभाना, जो सुरंग से भागती है, लेकिन आखिरकार पकड़ी जाती है। इस कहानी ने प्रोजेक्ट में बहुत गहराई और चंचलता जोड़ दी।

उन्होंने कहा, वीडियो की शूटिंग सिर्फ एक दिन में पूरी हुई और मैंने सेट पर हर डिटेल को समझा। प्रीत सिंह एक जीनियस डायरेक्टर हैं, जिन्होंने पूरे प्रोजेक्ट का नेतृत्व अद्भुत विज़न और सटीकता के साथ किया। ईमानदारी से कहूँ, तो मुझे अपने वीडियो में और डांस करना चाहिए पोल्स का हुक स्टेप इतना कैची और मज़ेदार है।

गाने के जॉनर के बारे में बात करते हुए जैस्मिन ने कहा, गाने का जॉनर बैले फंक है, जिसने बीट सुनते ही मेरा दिल जीत लिया। यह इस जॉनर में मेरा पहला पंजाबी गाना है। इस कोलेबरेशन के लिए, हमने नेपाल के सबसे बड़े प्रोड्यूसर, फोजल को खास तौर पर बुलाया था। सॉन्ग राइटिंग टीम अविश्वसनीय थी और उनका सपोर्ट अनमोल था।

उन्होंने आगे कहा, फाइनल मिक्स और मास्टरिंग अभिषेक खंडेलवाल, जो वाईआरएफ में म्यूज़िक हेड हैं, उन्होंने संभाला, जिससे साउंड क्वालिटी बेहतरीन रही। पोल्स मेरे लिए महज़ एक गाना नहीं है, बल्कि यह मेरी कलात्मक यात्रा का एक जीवंत नया अध्याय है। वीडियो के अनोखे कॉन्सेप्ट पर, जैस्मिन ने आगे कहा, यह डायरेक्टर का विज़न था कि एक जेल का सेटअप बनाया जाए, जहाँ मैं एक विद्रोही, बेफिक्र अपराधी का रोल निभाती हूँ, जो सुरंग से भागती है, लेकिन अंततः पकड़ी जाती है। शूटिंग में बहुत मज़ा आया, मैं सेट पर एक अच्छी स्टूडेंट थी और कहानी से जुड़ी हर छोटी डिटेल को फॉलो किया।

फिल्म प्रमोशन में क्लिकबेट सवालों के जवाब देकर वायरल होने की होड़ : वरुण धवन

अभिनेता वरुण धवन की फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी 2 अक्टूबर को रिलीज हो रही है। इस फिल्म की टीम इसके जोरदार प्रमोशन में जुटी है। वरुण धवन ने आईएएनएस से खास बातचीत में बताया कि फिल्म के प्रमोशन के दौरान आजकल एक्टर्स को जबरदस्ती के सवालों का जवाब देना पड़ता है। इनमें कुछ क्लिकबेट सवाल होते हैं, जो सिर्फ वायरल होने के लिए ही पूछे जाते हैं। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे आजकल फिल्म प्रमोशन और मार्केटिंग में पारंपरिक गर्मजोशी और मस्ती-मजाक की कमी हो रही है। जब वरुण धवन से पूछा गया कि क्या आजकल फिल्म प्रमोशन में प्रामाणिकता की कमी है, तो वरुण धवन ने आईएएनएस से कहा, पहले के इंटरव्यू में ईमानदारी और एक-दूसरे से जुड़ने का एहसास होता था। अब अक्सर ऐसा लगता है कि हम दर्शकों से जुड़ने के बजाए ऐसे सवालों के जवाब दे रहे हैं जो वायरल होने के लिए पूछे जाते हैं। हमें और भी गहरे और सार्थक इंटरव्यू और सवाल-जवाब की जरूरत है। उनके विचारों से सहमति जताते हुए जाह्नवी कपूर ने कहा, सोशल मीडिया के साथ सब कुछ बदल गया है। हम अभी भी मार्केटिंग के पुराने फार्मूले अपना रहे हैं, लेकिन दर्शक और भी ज्यादा स्मार्ट हो गए हैं। यहां तक कि इंटरव्यूज में भी वह उत्साह नहीं रहा, जैसे कोई बातचीत के बीच में ही माइक एडजस्ट कर देता हो। मुझे खुशी है कि आज हम इतने सारे इंटरव्यूज कर रहे हैं क्योंकि इससे हमें अपने दर्शकों और उनकी उम्मीदों से फिर से जुड़ने में मदद मिलती है। इससे पहले एक इंटरव्यू में जाह्नवी कपूर ने बताया था कि फिल्म के सेट पर मनीष पॉल बहुत ही एनर्जेटिक दिखाई देते थे।

करीना कपूर ने साझा की अवॉर्ड्स नाइट की पुरानी यादें, कहा: पहले का फैशन था बिना टेंशन वाला

बॉलीवुड अभिनेत्री करीना कपूर खान ने हाल ही में अवॉर्ड्स नाइट की पुरानी यादें साझा कीं। उन्होंने

इसकी एक तस्वीर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम के स्टोरी सेक्शन में फैंस के साथ शेयर की है। यह तस्वीर 42वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स की है, जिसमें वह बॉलीवुड अभिनेता अक्षय खन्ना के साथ पहली पंक्ति में बैठी दिखाई दे रही हैं। इस फोटो में वह सिंपल लुक में नजर आ रही हैं, जैसे वह किसी घर की पार्टी में गई हैं। इसे शेयर करते हुए उन्होंने लिखा, जब हम अपनी पोलो नेक और जैकेट पहनते थे और आराम से बैठकर अभिनेताओं को अपनी क्लैक लेडी (अवॉर्ड) का स्वागत करते देखते थे। उन्होंने इसके जरिए यह बताया कि तब के दौर में फैशन कितना सरल और सहज हुआ करता था। आज तो एक स्टार के लुक के लिए पूरी टीम होती है, क्या पहनना है और क्या नहीं, इसकी प्लानिंग कई दिनों पहले से ही की जाती है। तब महंगे स्टाइलिश और डिजाइनर आउटफिट्स का जमाना नहीं था। इसमें उन्होंने अपनी बहन करिश्मा कपूर की फिल्म का गाना आए हो मेरी जिंदगी में भी लगाया है। इस फोटो की खास बात यह है कि इसमें अमिताभ बच्चन और अभिषेक बच्चन भी उनके पीछे बैठे दिख रहे हैं। उन दोनों ने भी पारंपरिक भारतीय कपड़े पहने हुए हैं। करीना की इस पोस्ट ने फैंस को उन दिनों की याद दिला दी जब करीना कपूर और अक्षय खन्ना की जोड़ी हलचल फिल्म में दिखाई दी थी। यह फिल्म 2003 में रिलीज हुई थी। चर्क फंट की बात करें तो, करीना कपूर खान अब अपनी आने वाली फिल्म दायरा में शूटिंग में जुटी हैं।

शब्द सामर्थ्य -192

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. बात, घटना, मांजरा, मुकदमा (उर्दू) 3. अलावा, अतिरिक्त 6. प्रेम, इच्छा 7. मां का बच्चे के प्रति प्रेम 8. गलती, जुर्म, गुनाह, दोष 10. मग्न, लीन, खुश, प्रसन्न 12. धनुष, समादेश, फौजी टुकड़ी 13. एक कल्पित पत्थर जो लोहे को छूकर सोना बना देता है 16. हिम्मत, साहस, सामर्थ्य 17. बनावटी, अनुकृति, असली का विलोम 18. अबोध, नासमझ 20. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि 22. गहरा नीला, काला 23. व्याकुल, बेसब्र 24. मन, चित्त, आदरसूचक तथा सहमति सूचक एक शब्द।

ऊपर से नीचे

1. स्वामी, नाथ 2. बेबस, मजबूर, विवश 3. अन्याय, अत्याचार, जुल्म 4. मध्य एशिया का एक देश 5. पुस्तक 9. बहादुर, वीर 11. सैनिक विद्रोह 12. नीच, अधम 12 ए. प्रणाम, झुकना 13. भरण-पोषण करना, परवरिश करना, छोटा झूला, हिंडोला 14. प्रमाण, प्रमाणिक कथन 15. स्वाभाविक ढंक, योग्यता, लियाकत, सभ्यता और शिष्टता, शऊर (उ.) 19. बिजली, तड़ित 21. रात में दिखाई न पड़ने का नेत्र संबंधी रोग।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक191का हल

प	र्स	द		सिं	हा	स	न	
ख		म	ज	दू	र		का	म
वा	द	क		र		र्स	ब	ल
ड़		ल	ज्जा		म	स्का		य
	बा			बि	हा	र		
सु	धा	क	र		न			औ
रं		म		कि	ता	ब		स
ग		अ	र	सा		हु	ज्ज	त
	श	क्ल		न	मि	त		न

कहो न कहो की धुन पर मल्लिका शेरावत फैंस संग थिरकी

अभिनेत्री मल्लिका शेरावत ने हाल ही में एक कार्यक्रम में शिरकत की, जहां उनके सुपरहिट गाने कहो न कहो ने माहौल को जोशपूर्ण बना दिया। इस मौके पर मल्लिका के फैंस और होस्ट गाने को गाते और झूमते नजर आए। अभिनेत्री ने इस खास पल का वीडियो पोस्ट किया। मल्लिका ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें होस्ट पहले कहो न कहो गाना गाता है, जिसके साथ मल्लिका और उनके फैंस उत्साह के साथ थिरकने लगते हैं। होस्ट ने भीड़ को और जोश दिलाते हुए सभी को इस गाने को पूरे उत्साह के साथ गाने के लिए प्रेरित किया। माहौल इतना जीवंत था कि पूरा स्टेडियम एक साथ नाचता-गाता दिखाई दिया।

मल्लिका ने इस वीडियो के साथ कैप्शन में लिखा, जब मेरे फैंस मेरे साथ कहो ना कहो गाने पर झूमते हैं, तो बहुत अच्छा लगता है। वो जोश, वो प्यार, वो मस्ती पूरा स्टेडियम जैसे साथ नाच रहा हो। आपका प्यार ही है जो मुझे आगे बढ़ने की ताकत देता है, हमेशा।

कहो न कहो गाना साल 2004 में रिलीज हुई फिल्म मर्डर का है। इस गाने को आमिर जमाल ने गाया है, जबकि इसके बोल सैय्यद कादरी ने लिखे और संगीत अनु मलिक ने तैयार किया।

अनुराग बसु के निर्देशन में बनी इस फिल्म में मल्लिका शेरावत और इमरान हाशमी ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं। यह फिल्म इमरान हाशमी के करियर की पहली हिट फिल्म मानी जाती है, जिसने उन्हें रातोंरात स्टार बना दिया। फिल्म का निर्माण मुकेश भट्ट ने किया था, और यह उस समय की सुपरहिट थ्रिलर फिल्मों में से एक थी।

मल्लिका ने मर्डर, ख्वाहिशें, बचकर रहना रे बाबा, डर्टी पॉलिटिक्स, गुरु, वेलकम, प्यार के साइड इफेक्ट्स, डबल धमाल, और जीनत जैसी कई शानदार फिल्में दीं। इसी के साथ वह हॉलीवुड फिल्म द मिथ, पॉलिटिक्स ऑफ लव, और टाइम रेडर्स में भी नजर आ चुकी हैं। हाल ही में उन्हें राजकुमार राव और तृप्ति डिमरी के विक्की विद्या का वो वाला वीडियो में देखा गया था।

पीनट बटर हनी फ्लेवर्ड उत्पाद का राज्यपाल ने किया विमोचन

प्रोटीन वर्ल्ड की इस दुनिया में कोरिया का 'पीनट बटर' एक नायाब शुरुआत

कोरिया बैकुंठपुर। छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले ने एक बार फिर नवाचार की मिसाल पेश की है। कृषि विज्ञान केंद्र और जिला प्रशासन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया पीनट बटर-हनी फ्लेवर्ड उत्पाद कलेक्ट्रेट सभाकक्ष, बैकुंठपुर में राज्यपाल रमेन डेका के करकमलों से विमोचित हुआ।

राज्यपाल श्री डेका ने उत्पाद की गुणवत्ता, स्वाद और पैकेजिंग की सराहना करते हुए कहा कि यह उत्पाद कोरिया जिले की सृजनात्मक सोच और कृषि नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण है। शक्कर की जगह शहद का उपयोग इस पीनट बटर को और भी पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक बनाता है। कोरिया जैसे सुदूर अंचल से इस तरह की पहल का आरंभ सचमुच सराहनीय है।

राज्यपाल ने याद किया कि अपने पिछले कोरिया प्रवास के दौरान उन्होंने सोनहनी शहद उत्पाद का भी शुभारंभ किया था। उन्होंने कहा कि यह दूसरा उत्पाद सोनहनी की तरह ही किसानों के आत्मनिर्भर बनने की दिशा में बड़ा कदम है। राज्यपाल ने कहा कि इस पहल से किसानों को बेहतर बाजार मूल्य मिलेगा और स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। राज्यपाल रमेन डेका ने कहा कि प्रोटीन वर्ल्ड की इस दुनिया में

कोरिया का 'पीनट बटर' एक नायाब शुरुआत है। यह उत्पाद न केवल स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है, बल्कि 'वोकल फॉर लोकल' की भावना को भी सशक्त करता है। कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ग्रामीणों, किसानों की आर्थिक, सामाजिक इसिथति को मजबूत करने के लिए अनेक ठोस कदम उठाएं हैं। उन्होंने बताया कि इसी को ध्यान में रखते हुए पीनट बटर हनी फ्लेवर्ड का निर्माण कृषि विज्ञान केंद्र, कोरिया के तकनीकी सहयोग से किया गया है। इसका उद्देश्य किसानों को वैल्यू एडिशन के माध्यम से अधिक आमदनी दिलाना और स्थानीय संसाधनों से स्वदेशी स्वास्थ्यवर्धक उत्पाद तैयार करना है। श्रीमती त्रिपाठी ने कहा कोरिया की मिट्टी में मेहनत और नवाचार दोनों हैं। अब किसान केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि प्रसंस्करण और विपणन के माध्यम से भी आत्मनिर्भर बनेंगे। कृषि विज्ञान केन्द्र, बैकुंठपुर के वैज्ञानिक कमलेश सिंह ने बताया कि यह पिन्ट्स बटर शत प्रतिशत प्राकृतिक मूंगफली और शुद्ध शहद से तैयार किया गया है। इसमें कोई कृत्रिम रंग, फ्लेवर या प्रिज़र्वेटिव नहीं मिलाया गया है। 125 ग्राम की आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध यह उत्पाद पूरी तरह स्वदेशी और स्वास्थ्यवर्धक है।

उन्होंने पोषण सम्बन्धी मानक के बारे में बताया कि प्रति 100 ग्राम में करीब 600 किलो कैलोरी, 22-25 ग्राम प्रोटीन, 30-35 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 18-20 ग्राम प्राकृतिक शर्करा, 45-50 ग्राम हेल्दी फैट, 3-4 ग्राम फाइबर तथा कैल्शियम, आयरन और विटामिन ई से भरपूर है। कमलेश सिंह ने बताया कि जिले में पिछले वर्ष लगभग 933 हेक्टेयर में मूंगफली की फसल बोई गई थी, जबकि इस वर्ष यह क्षेत्रफल बढ़कर 1500 हेक्टेयर से अधिक हो गया है, जिसमें करीब 4000 किसानों ने भागीदारी की है। उन्होंने यह भी बताया कि जिले के 120 किसानों को 60 हेक्टेयर के उन्नत किस्म के मूंगफली बीज दिए हैं। प्रोटीन और हेल्दी फैट मसल ग्रोथ व रिकवरी में सहायक है खासकर फिटनेस प्रेमी एवं बॉडीबिल्डर के लिए। कुपोषण से ग्रसित बच्चे एवं महिलाएँ के लिए। यह उत्पाद ऊर्जा और पोषण का उत्कृष्ट स्रोत है। वृद्धजन के लिए विटामिन ई और अच्छे फैट से हृदय एवं हड्डियों की सेहत में लाभकारी है।

फ्रिज में जमी बर्फ से बर्फानी बाबा जैसा प्रतिरूप बनने के साथ आस्था जागी, पूजापाठ शुरू

कोरिया बैकुंठपुर। कोरिया जिले के बैकुंठपुर क्षेत्र में एक चमत्कारिक घटना ने लोगों की आस्था को और गहरा कर दिया है। स्थानीय निवासी सुशील सिंह के घर में अचानक बर्फ से बनी आकृति ने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। यह आकृति बिल्कुल बर्फानी बाबा अमरनाथ के रूप में जानी जाने वाली शिवलिंग जैसी प्रतीत हो रही है।

सुशील सिंह ने बताया कि यह आकृति उनके घर में रखे फ्रिज में बर्फ के टुकड़े से स्वत: ही बनी। प्रारंभ में उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब बर्फ का आकार शिवलिंग जैसा बनने लगा, तो परिवार ने इसे भोलेनाथ का आशीर्वाद माना। धीरे-धीरे आसपास के लोग भी इस अद्भुत दृश्य को देखने पहुंचे और हर-हर महादेव, बर्फानी बाबा की जय के जयकारों से पूरा माहौल भक्तिमय हो उठा। स्थानीय लोगों के अनुसार, यह दृश्य किसी चमत्कार से कम नहीं है। श्रद्धालुओं का कहना है कि ऐसे समय में जब लोगों का विश्वास और भक्ति कमजोर पड़ रही है, भगवान शंकर स्वयं किसी न किसी रूप में अपने भक्तों को दर्शन देते हैं। कई श्रद्धालु घरों से फूल, बेलपत्र, दूध और जल लेकर सुशील सिंह के घर पहुंच रहे हैं और बर्फ से बनी इस आकृति का पूजन-अर्चन कर रहे हैं। गांव के बुजुर्गों ने बताया कि उन्होंने पहले कभी ऐसी घटना नहीं देखी।

पीएम आवास एवं स्वच्छ भारत मिशन की समीक्षा बैठक सम्पन्न

एमसीबी। जनपद पंचायत मनेंद्रगढ़ के अमृत सदन सभाकक्ष में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंकिता सोम शर्मा की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) एवं स्वच्छ भारत मिशन की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई।बैठक में सीईओ ने कहा कि सभी अप्रारंभ और अपूर्ण आवासों को शीघ्र प्रारंभ कर निर्धारित समयसीमा में पूरा किया जाए। उन्होंने तकनीकी सहायकों को नियमित फील्ड विजिट कर प्रगति की सतत निगरानी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। 15 अक्टूबर तक निर्धारित लक्ष्यों और 1 नवंबर तक प्रदत्त लक्ष्यों की शत-प्रतिशत पूर्ति पर विशेष बल दिया गया।बैठक में मनरेगा योजना अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2026-27 के लेबर बजट तैयार करने, जल संरक्षण और संवर्धन कार्यों की समीक्षा की गई।

1 लाख 50 हजार रूपये कीमत का गांजा जप्त

सूरजपुर। डीआईजी व एसएसपी श्री प्रशांत कुमार ठाकुर के सख्त निर्देश पर थाना-चौकी की पुलिस के द्वारा लगातार अवैध कारोबार, सूखा नशा एवं मादक पदार्थ के विरूद्ध कार्यवाही की जा रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में 6.10.2025 को थाना भटगांव पुलिस को मुखबीर ने सूचना दिया कि अनीश गुप्ता निवासी बंशीपुर अपने घर-आंगन में मादक पदार्थ गांजा बिक्री हेतु छिपा कर रखा है। थाना भटगांव पुलिस ने सूचना की तस्दीक व कार्यवाही हेतु फौरन मौके पर पहुंची जहां अनीश गुप्ता पिता कपिल प्रसाद उम्र 39 वर्ष को दबिश देकर पकड़ा जिसके आंगन के कोने में जमीन के नीचे 2 डिब्बा में छुपाकर रखे 4 किलो 180 ग्राम गांजा जप्त किया गया जिसकी कीमत करीब 1 लाख 50 हजार रूपये है। मामले में गांजा जप्त कर धारा 20बी, 29 एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया।

राज्यपाल रमेन डेका से भाजपा प्रतिनिधि मंडल ने किया भेंट

कोरिया बैकुंठपुर। छत्तीसगढ़ प्रदेश के राज्यपाल रमेन डेका के एक दिवसीय कोरिया प्रवास के दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी के नेतृत्व मे प्रतिनिधि मंडल भेंट कर जिले के विभिन्न विकास कार्यों के लिए ज्ञापन सौंपा। जिसमे प्रमुख मांग शहर के मुख्य मार्ग को सड़क चौड़ीकरण सह डिवाइडर निर्माण, बैकुंठपुर मे एम्स अस्पताल एवं विधि महाविद्यालय खोले जाने हेतु मांग पत्र दिया गया। साथ जिले के विकास कार्यों के संबंध मे चर्चा किया गया। साथ ही भाजपा जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी के नेतृत्व मे राज्यपाल रमेन डेका को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, पूर्व जिलाध्यक्ष कृष्णबिहारी जायसवाल, जिला मंत्री एवं चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स के जिलाध्यक्ष शारदा गुप्ता, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी तीरथ राजवाड़े एवं मंडल अध्यक्ष अनिल खटिक मौजूद रहें।

फलेन्द्र सिंह की तृतीय पुण्यतिथि पर प्रतिमा का अनावरण, याद किये गए कार्य

कोरिया बैकुंठपुर। कुंडेली सरभोंका बाज़ार में सोमवार को स्वर्गीय फलेन्द्र सिंह जी की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर भव्य प्रतिमा अनावरण समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक, जनप्रतिनिधि एवं राजनीतिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। स्व. फलेन्द्र सिंह जी के अनुयायियों और परिजनों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके सामाजिक योगदान को स्मरण किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल उपस्थित रहे। उन्होंने स्व. फलेन्द्र सिंह जी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए कहा कि फलेन्द्र सिंह जी हमेशा समाज के गरीब, वंचित और पिछड़े तबकों के हक़ की आवाज़ उठाने वाले नेता थे। उनके आदर्श और संघर्ष आज भी समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। मंत्री जायसवाल ने कहा कि ऐसे कर्मठ और ईमानदार व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि देना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। कार्यक्रम में सांसद चिंतामणि महाराज , पूर्व गृह मंत्री रामसेवक पैकरा , कोरिया भाजपा जिला अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी , मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती चंपा देवी पावले, सहित पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी, कार्यकर्ता साथी एवं

गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में शामिल हुए। सभी ने फलेन्द्र सिंह जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी और उनके द्वारा किए गए जनहितैषी कार्यों को याद किया। सांसद चिंतामणि महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि स्व. फलेन्द्र सिंह जी ने सदैव जनता की भलाई के लिए कार्य किया। वे सदैव संगठन के सच्चे सिपाही रहे और समाज में एकता, भाईचारा और विकास की भावना को सशक्त बनाया। पूर्व गृह मंत्री रामसेवक पैकरा ने कहा कि फलेन्द्र सिंह जी का जीवन त्याग और सेवा का प्रतीक रहा है। उनके पदचिह्नों पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कोरिया भाजपा जिला अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी ने कहा कि पार्टी को ऐसे समर्पित कार्यकर्ता पर गर्व है, जिन्होंने अपने जीवन में सदैव संगठन को प्राथमिकता दी। इस अवसर पर वक्ताओं ने फलेन्द्र सिंह जी के जीवन की प्रेरणादायी घटनाओं को साझा किया और युवाओं से उनके आदर्शों को अपनाने की अपील की। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित जनसमूह ने दो मिनट का मौन रखकर स्वर्गीय फलेन्द्र सिंह जी की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। आयोजन स्थल पर पूरे क्षेत्र में श्रद्धा और सम्मान का वातावरण बना रहा। स्थानीय निवासियों ने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार, स्व. फलेन्द्र सिंह जी की तृतीय पुण्यतिथि का यह आयोजन न केवल श्रद्धांजलि कार्यक्रम रहा, बल्कि समाज और राजनीति में उनके योगदान को याद करने का एक सार्थक अवसर भी बना।

जिला अस्पताल में नवजात को लेकर दो परिवारों में भ्रम

सूरजपुर। जिला अस्पताल में सोमवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया जब एक नवजात को लेकर दो परिवारों के बीच भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, करीब दस दिन पहले अस्पताल में दो महिलाओं ने बच्चों को जन्म दिया था। आज जब एक दंपति अपने नवजात को लेकर अस्पताल से छुट्टी लेकर घर लौट रहा था, तभी दूसरे परिवार की महिला ने बच्चे को अपना बताते हुए अचानक छीना-झपटी शुरू कर दी और जोर-जोर से चिल्लाने लगी। घटना के दौरान अस्पताल परिसर में काफी भीड़ जमा हो गई। स्थिति को बिगड़ते देख अस्पताल स्टाफ और पुलिस सहायता केंद्र की टीम तुरंत मौके पर पहुंची और स्थिति को काबू में लिया।

सुरक्षित सफर के लिए पुलिस का अभियान

सूरजपुर। जिले की पुलिस ने 520 वाहन चालकों को शराब पीकर वाहन चलाते पकड़ा है। पुलिस की जागरूकता अभियान, नियम तोड़ने वालों पर सख्ती बरती जा रही है। डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर के निर्देश पर जिले की पुलिस ने ड्रंक एंड ड्राइव के खिलाफ स्पेशल ड्राईव चलाया। पिछले 2 माह अगस्त व सितम्बर 2025 के दौरान थाना-चौकी व यातायात की टीमों ने कई स्थानों पर प्रभावी चेकिंग प्वाईंट लगाकर करीब 15 हजार से अधिक वाहन चालकों की ब्रेथ एनालाइजर से जांच की। जांच में नशे का सेवन कर वाहन चलाने वाले 520 चालकों को पकड़ा गया और उनका डॉक्टरी मुलाहिजा कराकर माननीय न्यायालय में इस्तगाशा पेश किया गया जहां से 55 लाख रूपये का चालान हुआ है। पुलिस इन चालकों के ड्राईविंग लायसेंस को निलंबित करने के लिए आरटीओ को प्रतिवेदन भी भेज दिया है। पुलिस की यह कार्रवाई सड़क सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए की गई। मंगलवार को यातायात प्रभारी बृजकिशोर पाण्डेय ने बिना परमिट के बस चालन पर एक बस के विरूद्ध एमव्ही एक्ट की धारा 66/192 के तहत कार्यवाही कर इस्तगाशा न्यायालय में पेश किया है। सूरजपुर पुलिस ने वाहन चालकों से अपील किया है कि यातायात नियमों का पालन करें, शराब का सेवन कर वाहन न चलाए, वाहन चलाते समय मोबाईल का उपयोग न करें, अपने नाबालिक बच्चों को कभी भी वाहन न दे जब-तक वे 18 वर्ष के न हो जाये व परिवहन विभाग से वाहन चलाने का वैध लायसेंस न बना ले। दोपहिया में तीन सवारी न चले, बिना हेलमेट बाईक न चलाए, बिना सीट बेल्ट चार पहिया वाहन न चलाए, दुर्घटना से देर भली-जीवन अनमोल है। यातायात नियमों के प्रति लोगों को जागरूक करने व चेकिंग अभियान में जिले के सभी थाना-चौकी व यातायात पुलिस मजबूती के साथ लगी हुई है।

विज्ञान से बनेगी कोरिया की नई पहचान

कोरिया बैकुंठपुर। कोरिया जिले ने शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक कदम बढ़ाते हुए सम्भाग का पहला स्पेस एजुकेशन लैब स्थापित किया। छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका ने बैकुंठपुर स्थित शासकीय आदर्श कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में इस लैब का लोकार्पण किया।

यह अत्याधुनिक लैब भारतीय अंतरिक्ष यात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ल के नाम पर समर्पित की गई है। डीएमएफ के सहयोग से स्थापित यह प्रयोगशाला विद्यार्थियों में अंतरिक्ष, भौतिकी, भूगोल और प्रौद्योगिकी के प्रति रुचि बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होगी। शुभांशु शुक्ला आधुनिक भारत की सैन्य-वैज्ञानिक प्रतिभा और अंतरिक्ष महत्वाकांक्षा के प्रतीक हैं, जिनकी यात्रा युवाओं को रक्षा सेवा व साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग व गणित क्षेत्रों में करियर के लिए प्रेरित करती है। कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल ने विद्यालय की छात्राओं से लैब के तकनीकी पक्षों के बारे में जानकारी ली। कक्षा नवमीं की छात्रा अनुजा ने ऐरोहब मॉडल का प्रदर्शन किया, वहीं कक्षा बारहवीं की उन्नति ने वर्चुअल रियलिटी के उपयोग को समझाया। अन्य छात्राओं ने भी अंतरिक्ष से संबंधित उपकरणों और मॉडलों के कार्यों का जीवंत प्रदर्शन किया। राज्यपाल श्री डेका ने छात्राओं की सराहना करते हुए कहा आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान से होने वाले लाभ और उसके प्रभाव से कोई इंकार नहीं कर सकता। यह लैब न केवल अंतरिक्ष विज्ञान बल्कि अन्य विज्ञान विषयों में भी विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। उन्होंने इस पहल की प्रशंसा करते हुए जिला प्रशासन को बधाई दी और उन्होंने लैब के लिए ड्रोन, स्मार्ट बोर्ड एवं प्रोजेक्टर उपलब्ध कराने की सहमति दी। जिला कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी ने कहा यहां के विद्यार्थियों में परिश्रम, लगन और जुनून की कोई कमी नहीं है, उन्हें बस अवसर की आवश्यकता है। प्रशासन उनके शैक्षणिक विकास के लिए हर संभव प्रयास करेगा। राज्यपाल की उपस्थिति में आयोजित यह कार्यक्रम कोरिया जिले के लिए गौरव का क्षण रहा, जिससे न केवल शिक्षा की दिशा में नई ऊर्जा आएगी, बल्कि विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा और उत्साह भी बढ़ेगा।

जरिता लैथफलांग ने कोरिया जिले से वोट चोर गद्दी छोड़ो हस्ताक्षर अभियान का किया आगाज

कोरिया बैकुंठपुर। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सचिव एवं छत्तीसगढ़ प्रदेश की सह प्रभारी ज़रिता लैथफलांग ने कोरिया जिले से वोट चोर, गद्दी छोड़ो हस्ताक्षर अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने ग्राम सलका, सलबा एवं मनसुख में पहुँचकर आम जनता से संवाद किया और लोकतंत्र की रक्षा के लिए लोगों को जागरूक किया। सुश्री लैथफलांग ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार चुनाव आयोग को अपना हथियार बनाकर जनता के मताधिकार पर हमला कर रही है। मतदाता सूची से लाखों आम लोगों के नाम जानबूझकर हटाए जा रहे हैं ताकि वोट की चोरी कर सत्ता में बने रहा जा सके। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी इस तरह की जनविरोधी साजिशों को कभी सफल नहीं होने देगी और सदैव जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करती रहेगी। इस अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता, पूर्व विधायक अंबिका सिंह देव, कोषाध्यक्ष अशोक जायसवाल, महामंत्री बृजवासी तिवारी, ब्लॉक अध्यक्ष अजय सिंह, सत्य प्रकाश तिवारी, विकास श्रीवास्तव, धीरज सिंह, हुसैन खान, प्रभु दयाल इक्का, विनोद जायसवाल सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसजन एवं आम नागरिक उपस्थित रहे।

राज्यपाल रमेन डेका ने बैकुण्ठपुर आकांक्षी ब्लॉक में विकास योजनाओं की समीक्षा

स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी सेवाओं पर विशेष ध्यान, फील्ड निरीक्षण के निर्देश

कोरिया बैकुंठपुर। छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका ने कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में बैकुण्ठपुर आकांक्षी ब्लॉक में संचालित विभिन्न योजनाओं का व्यापक समीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया।

राज्यपाल ने आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम के तहत 40 संकेतकों के अनुसार कार्यों की समीक्षा की। स्वास्थ्य एवं पोषण 30 प्रतिशत, शिक्षा 30 प्रतिशत, कृषि एवं संबद्ध सेवाएँ 20 प्रतिशत, मूलभूत आधारभूत संरचना 15 प्रतिशत तथा सामाजिक विकास 5 प्रतिशत। श्री डेका ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि केवल बैठकों और रिपोर्ट पर निर्भर न रहें, बल्कि फील्ड में जाकर वस्तुस्थिति का निरीक्षण करें। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र विकास की सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकताएँ हैं। राज्यपाल ने कहा कि कुपोषण, महिला स्वास्थ्य और कैंसर जैसी बीमारियों की रोकथाम के लिए फील्ड स्तर पर लगातार काम करना होगा। उन्होंने निर्देश दिए कि आंगनवाड़ी और स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ, साफ पेयजल और शौचालय की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। कुपोषण, एनीमिया जैसी गम्भीर बीमारियों के रोकथाम के लिए लगातार गांवों का दौरा करें और समुचित समाधान करने के

निर्देश दिए। राज्यपाल ने ग्रामीणों को बंजर भूमि पर डबरी निर्माण, बागवानी और सब्जी की खेती के माध्यम से जीवन स्तर सुधारने और आर्थिक लाभ बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बच्चों के अध्ययन के लिए घरों में विशेष कक्ष तैयार करने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित करने की सलाह दी। श्री डेका ने कलेक्ट्रेट परिसर में फोटो प्रदर्शनी और आजीविका मिशन स्टाल का अवलोकन किया। उन्होंने स्थानीय उत्पादों के प्रचार के लिए तैयार किए गए 'कोरिया अमृत' लोगो का विमोचन किया। साथ ही रुद्राक्ष का पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी ने राज्यपाल को भरोसा दिलाया कि सभी निर्देशों का पूर्ण पालन किया जाएगा। राज्यपाल ने अधिकारियों से कहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास के क्षेत्र में लगातार मेहनत और सक्रिय निगरानी जारी रखी जाए। इस बैठक में पुलिस अधीक्षक रवि कुमार कुर्रे, राज्यपाल के एडीसी निशांत कुमार, उप सचिव श्रीमती निधि साहू, गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान के संचालक सौरभ सिंह ठाकुर, वन मण्डलाधिकारी चंद्रशेखर शंकर सिंह परदेशी, जिला पंचायत के सीईओ डॉ आशुतोष चतुर्वेदी, राज्यपाल के उप सचिव श्रीमती निधि साहू, अपर कलेक्टर सुरेन्द्र वैद्य, डी.डी. मण्डावी सहित जिलाधिकारी उपस्थित रहे।

सेंट्रल जेल से हत्या का आरोपी कैदी अस्पताल से फरार, पुलिस अलर्ट पर

अंबिकापुर। हत्या के मामले में सजा काट रहा एक कैदी सोमवार दोपहर पुलिस को चकमा देकर मेडिकल कॉलेज अस्पताल से फरार हो गया। यह घटना जेल प्रशासन और पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर रही है। जानकारी के अनुसार, कैदी मुकेश कांत की तबीयत बिगड़ने के चलते उसे सेंट्रल जेल अंबिकापुर से मेडिकल कॉलेज अस्पताल के जेल वार्ड में भर्ती कराया गया था। सोमवार सुबह उसने बाथरूम जाने का बहाना बनाया और इसी दौरान सुरक्षा कर्मियों की नजरों से बचते हुए वहां से भाग निकला। कैदी की फरारी की खबर मिलते ही पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। मणिपुर थाने में इसकी सूचना दी गई है और आसपास के क्षेत्रों में सघन तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि फरार कैदी को जल्द से जल्द पकड़ने के लिए विशेष टीम गठित कर दी गई है। फिलहाल मुकेश कांत की तलाश जारी है और मामले की गंभीरता को देखते हुए जेल प्रशासन से भी जवाब-तलब किया जा सकता है।

प्रतिमा स्थल पर टकराव को किया दूर, मुख्यमंत्री कल कटघोरा में!

कोरबा। जायसवाल और कंवर समाज को जमीन आवंटित करने को लेकर शुरू हुए विवाद ने कटघोरा में इस कदर टेंशन बढ़ाई कि अधिकारियों को माथापच्ची करने मजबूर होना पड़ा। मामला जिले से नियंत्रित नहीं हुआ तो एक धड़े ने रायपुर की दौड़ लगा दी। गतिरोध को टालने के लिए वैकल्पिक तरीका अपनाया गया है। सर्वमान्य हल निकालने और सामाजिक स्तर पर बडा संदेश देने के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का 9 अक्टूबर को कटघोरा दौरा प्रस्तावित है। प्रशासन के अधिकारियों ने आज कटघोरा में चकचकवा क्षेत्र पहुंचकर निरीक्षण किया और जरूरी निर्देश भी दिए।

कोरबा कलेक्टर अजीत वसंत, अपर कलेक्टर पटेल, एसडीएम कटघोरा तन्मय खन्ना, पोड़ी उपरोड़ा एसडीएम तुलाराम भारद्वाज, प्रभारी एसडीओपी डीके सिंह, तहसीलदार पोड़ी, तहसीलदार कटघोरा और नगर निरीक्षक धर्म नारायण तिवारी ने बुधवार को कटघोरा पहुंचकर चकचकवा बायपास तिराहे का निरीक्षण किया। जिस तरह की जानकारी मिली है उसमें बताया गया कि अंततः कंवर समाज को यह जमीन दी जानी तय की गई। एक प्रतिमा का अनावरण यहां पर मुख्यमंत्री के हाथों होना है। बताया गया कि कंवर समाज के लिए 25 वर्ष पहले सरकार ने कटघोरा में कोई एक जगह उसकी मांग पर जमीन देने की घोषणा की थी। समाज का दावा है कि वह जगह यही है। हालांकि इसे लेकर दावे दूसरे भी हैं। याद रहे मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने बीते वर्ष कटघोरा में जायसवाल समाज द्वारा आयोजित सहस्त्रबाहु जयंती के अवसर पर उनकी मांग को स्वीकार किया और सहस्त्रबाहु के नाम पर चौराहा पर प्रतिमा स्थापना की घोषणा की थी। जायसवाल समाज ने इसके लिए चकचकवा तिराहे पर दावा ठोका और कामकाज की कोशिश की। इसी को लेकर टकराव की स्थिति निर्मित हुई। इस मामले में विधायक कटघोरा प्रेमचंद पटेल सहित अपर कलेक्टर व अन्य अधिकारियों को हस्तक्षेप करना पड़ा। बाद में निर्माण कार्य रूकवा दिया गया। घटनाक्रम को लेकर कंवर समाज के कुछ लोगों ने रायपुर जाकर मुख्यमंत्री से भेंट की, जिसके बाद यथास्थिति का आश्वासन दिया गया।

सूत्रों ने बताया कि कटघोरा नगर में जटगा तिराहे पर जायसवाल समाज को जमीन देने और वहां भगवान सहस्त्रबाहु की प्रतिमा लगाने की बात हुई है और इसे मान लिया गया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव के 9 अक्टूबर को कटघोरा प्रवास को तय मानते हुए प्रशासनिक अधिकारियों ने आज फौरी तौर पर यहां का निरीक्षण किया। अन्य संबंधित अधिकारियों और कर्मियों को तैयारी में लगाया गया है।

घाटे का सौदा बन पीडीएस का चना

कोरबा। भले ही सरकारी स्तर पर सार्वजनिक उचित मूल्य की दुकानों के लिए चना वितरण के मामले में टेंडर की प्रक्रिया पूरी हो गई है लेकिन अभी भी आगे का काम होना बचा है। स्टॉक और डिलीवरी के चक्कर में कार्डधारकों को वितरण का काम अटका हुआ है। दूसरी और चना के प्रशंसक अलग-अलग कारण से इस बारे में लगातार पूछताछ करने में लगे हैं की मसला कब तक सुलझेगा। जानकार सूत्रों का कहना है कि पिछले वर्षों में दूसरे राज्यों की तरह छत्तीसगढ़ में भी मुफ्त की योजनाओं का संचालन सरकार की ओर से किया गया। समय के साथ खर्च बढ़ने के चक्कर में नई चुनौति आ खड़ी हुई। स्थिति ऐसी हो गई है कि सरकार को प्रति किलो चना खरीदने के लिए बड़ी राशि खर्च करनी पड़ रही है और उसका निशुल्क वितरण करने में पसीना छूट रहे हैं। कई स्तर से मिली जानकारी में पता चला है कि चना का उपयोग करने वालों की संख्या बहुत कम है जबकि या खाद्यान्न सीधे तौर पर पीडीएस दुकानों में ही बेच दिया जा रहा है या फिर खुले बाजार में। इस कारण से भी सरकार को योजना की उपयोगिता को लेकर मंथन करना पड़ रहा है।

कुआंभट्टा में सड़क किनारे की जमीन हथियाने की होड़, अधिकारी बने धृतराष्ट्र

कोरबा। शहर में सरकारी जमीनों पर कब्जा जमाने का सिलसिला लगातार बढ़ता जा रहा है। नगर निगम, सीएसईबी और राजस्व विभाग की खाली पड़ी जमीनों पर कब्जे की होड़ मची हुई है। अब यह अवैध कब्जे का खेल कोरबा के प्रमुख क्षेत्र कुआंभट्टा तक पहुँच गया है, जहां सड़क के दोनों ओर की जमीन पर लगातार अवैध निर्माण और अतिक्रमण किए जा रहे हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि या तो इन पर रोक लगाने वाला कोई अधिकृत अधिकारी नहीं है, या फिर संबंधित विभागों की इस दिशा में कोई रुचि नहीं रह गई है।छत्तीसगढ़ स्टेट पावर जनरेशन कंपनी ने अपनी जमीन की सुरक्षा के लिए एक हिस्से में विद्युत उपकेंद्र का निर्माण कराया था और बाकी भूमि के चारों ओर मारपीट वायर लगाकर सुरक्षा घेरे की व्यवस्था की थी। लेकिन अवैध कब्जाधारियों ने इस सुरक्षा घेरे को तोड़कर उसे नष्ट कर दिया और जमीन पर अतिक्रमण कर अपने ठेले, गुमटी और दुकानें स्थापित कर लीं।इस क्षेत्र की खाली जमीन पर अब गमले बेचने वाले, टायर मरम्मत की दुकानें, चखना प्वाइंट, चाय और नाश्ते की ठेलियां लगातार बढ़ती जा रही हैं। कुछ लोगों ने स्थायी निर्माण की तैयारी भी शुरू कर दी है। हालात ऐसे हैं कि रोजाना कोई न कोई नई दुकान या झोपदी बन रही है।

साठगांठ के आधार पर कुछ लोग जमीन का दावा कर रहे हैं, जबकि यह जमीन सरकारी रिकॉर्ड में स्पष्ट रूप से राजस्व या निगम की संपत्ति दर्ज है। बावजूद इसके, प्रशासनिक स्तर पर अब तक किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं की गई है।

लगातार अवैध निर्माणों के बावजूद किसी भी विभाग की ओर से न तो नोटिस जारी किया गया है, न तो कब्जे हटाने की कार्रवाई हुई है। यही कारण है कि अतिक्रमणकारियों का मनोबल और भी बढ़ गया है। यदि स्थिति पर जल्द नियंत्रण नहीं किया गया तो आने वाले समय में यह पूरा क्षेत्र अवैध बस्तियों और दुकानों में तब्दील हो सकता है।

मुख्यालय में होगी समस्याओं पर चर्चा

कोरबा। आज एसईसीएल के बिलासपुर मुख्यालय में बीकेकेएमएस और प्रबंधन के मध्य आईआर की वार्ता होगी। इसमें सभी एरिया के समस्याओं पर चर्चा की जाएगी। खासकर गेवरा क्षेत्र में पुराने हो चुके आवासों के छत के टुकड़े गिरने लगे हैं। इन आवासों के मरम्मतीकरण सहित कई मुद्दों को रखा जाएगा। इसके अलावा ओटी सहित पदोन्नित के मामले भी लंबित हैं। कुसमुंडा क्षेत्र में बाहर से आ रहे कामगारों को आवास नहीं मिल पा रहा है। यहां पर बाहर के कामगारों को किराए के मकानों में रहना पड़ रहा है। आवास बनाने की मांग लगातार की जाती रही है। कोरबा क्षेत्र में भी कई ऐसे आवास हैं जिसकी छतों को मरम्मत किया गया है। इसके बाद भी पानी टपकने से कामगार परेशान हैं। मानिकपुर में पेयजल की समस्या को भी उठाया जाएगा। पाइप लाइन बिछने के बाद भी अभी तक जल की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। बैठक में रंजय सिंह, अशोक सिंह, अमिया मिश्रा, हिरेंद्र चंद्रा, राम नारायण साहू, मदन सिंह, रमेश गुरुद्वान, मुकुल कर्ष, हमराज राव सहित अन्य क्षेत्रों के सदस्य मौजूद रहेंगे।

जिले में सक्रिय हाथियों की संख्या हुई शताधिक

कोरबा। जिले के कटघोरा व कोरबा वनमंडल में हाथी समस्या खत्म होने के बजाय और भी बढ़ता जा रहा है। पड़ोसी रायगढ़ जिले से हाथियों का एक और दल कोरबा वनमंडल के करतला रेंज में पहुंच गया है। हाथियों के इस दल को मिलाकर क्षेत्र में सक्रिय हाथियों की संख्या बढ़कर 52 हो गई है। 15 हाथी पहले से ही यहां के रामपुर सर्किल में घूम रहे थे। बीती रात 37 की संख्या में हाथी रेंज के नोनदरहा क्षेत्र में पहुंच गए हैं। हाथियों के इस दल ने यहां पहुंचते ही उत्पात मचाया और 15 से अधिक किसानों की धान के फसल को तहस-नहस कर दिया। अचानक पहुंचे हाथियों द्वारा फसल रौंदे जाने से ग्रामीणों में आक्रोश है। वहीं पीड़ित ग्रामीणों द्वारा सूचना दिए जाने पर वन विभग के अधिकारी व कर्मचारी मौके पर पहुंचकर हाथियों की निगरानी करने के साथ नुकसानी के आंकलन में भी जुट गए हैं।

उधर कटघोरा वनमंडल के पसान रेंज में 54 हाथी अभी भी सेमरहा सर्किल में डेरा डाले हुए हैं। हाथियों के इस दल ने भी क्षेत्र में उत्पात मचाते हुए बर्रा, सेमरहा तथा हरदेवा गांव में दो दर्जन से अधिक ग्रामीणों के धान के फसल को रौंद दिया है। हाथियों द्वारा लगातार क्षेत्र में उत्पात मचाया जा रहा है और धान की फसल को तहस-नहस किया जा रहा है जिससे ग्रामीण काफी परेशान हैं। उनके द्वारा लगातार हाथी समस्या के समाधान की मांग रखी जा रही है लेकिन न तो वन विभाग इस ओर ध्यान दे रहा है और न ही जिला प्रशासन। फलस्वरूप क्षेत्र के ग्रामीण हाथी समस्या से दो-चार होने को मजबूर हैं। करतला रेंज में बड़ी संख्या में हाथियों के एक और दल आने से जिले में सक्रिय हाथियों की संख्या शताधिक हो गई है।

सिविक सेंटर उद्यान का नवीकरण होगा जल्द

निगम और बालको ने लिया जायजा

कोरबा। अल्युमिनियम सिटी बालकोनगर के सिविक सेंटर स्थित उद्यान को बेहतर करने की योजना बनी है । नगर निगम और बाल को प्रबंधन की आपसी भागीदारी से इस काम को किया जाना है। अधिकारियों ने आज यहां पहुंचकर वस्तु स्थिति की जानकारी ली। ब्लूप्रिंट तैयार करने के साथ आगे का कार्य प्रारंभ कराया जाएगा।

नगर निगम कमिश्नर आशुतोष पांडेय, बालकों के प्रमुख अधिकारियों सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि आज पूर्वान्ह सिविक सेंटर के इस उद्यान में पहुंचे। कई दशक पुरानी सिविक सेंटर के इस उद्यान को अल्युमिनियम प्रबंधन के द्वारा विकसित किया गया और कुछ संसाधन स्थापित किए गए। कालांतर में इनका नामोनिशान मिट गया। मौजूदा स्थिति में यहां पर केवल हरियाली नजर आ रही है। सुबह शाम लोगों की उपस्थिति शारीरिक अभ्यास और फुर्सत के घंटे का उपयोग करने के लिए यहां पर दर्ज होती है। उद्यान को बेहतर करने के लिए विचार किया जा रहा है। अधिकारियों का दौरा इसी कड़ी में आज यहां पर हुआ। उन्होंने स्थिति का जायजा लेने के साथ उन पहलुओं पर विचार किया जिसके जरिए यहां आवश्यक संसाधन दिए जा सकते हैं और इसे और ज्यादा उपयोगी बनाया जा सकता है। हालांकि भारत अल्युमिनियम प्रबंधन के द्वारा अपने विभिन्न सेक्टर में कर्मचारी और नागरिकों की सुविधा के लिए इस तरह के केंद्र उपलब्ध कराए गए हैं। जबकि कुछ स्थानों पर नगर निगम की ओर से सुविधा दी गई है।

मानिकपुर खदान का निरीक्षण करेंगे सेफ्टी सदस्य

कोरबा। आज कंपनी सेफ्टी सदस्यों का कोरबा आगमन हो रहा है। वे मानिकपुर खदान में जाकर कोयला कामगारों से मुलाकात करते हुए खदान का निरीक्षण करेंगे। कंपनी सेफ्टी सदस्य धर्मा राव, कमलेश शर्मा सहित अन्य सदस्य लाइटिंग व्यवस्था का अवलोकन करेंगे। रात्रि में डंपर चलने के कारण दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। इसके अलावा मार्ग का भी अवलोकन किया जाएगा। मानिकपुर खदान के निरीक्षण के बाद भूमिगत खदान का निरीक्षण होगा।

रामपुर की जरूरत हो रही पूरी : विधायक

कोरबा। डिस्टिक मिनिरल फाऊंडेशन से पहली बार रामपुर विधानसभा क्षेत्र के लिए सैकड़ो करोड़ के विकास कार्य स्वीकृत किए गए हैं । क्षेत्र के विधायक फूल सिंह राठिया ने इस प्रयास के लिए जिला प्रशासन का आभार माना।

विधायक ने कहा की क्षेत्र में कई प्रकार की समस्याएं मौजूद हैं और समस्याएं भी हैं। अपने निर्वाचन के बाद लगातार इनका अध्ययन किया गया और निराकरण के लिए समुचित प्रयास किए गए। प्रशासन के अधिकारियों से मिलकर बताया गया कि समाधान के लिए क्या कुछ करना जरूरी होगा। कोरबा कलेक्टर ने हमारी बात को गंभीरता से लिया और व्यापक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ बुनियादी सुविधाओं और अन्य मामलों से जुड़े विकास कार्यों को करना स्वीकृत किया है। उनकी संवेदनशील पहल के लिए कलेक्टर अजित वसन्त के प्रति हमने कृतज्ञता ज्ञापित की है। निश्चित रूप से बहुत सारे काम विधानसभा क्षेत्र में होने से वर्षों से बनी हुई लोगों की शिकायतें दूर होगी और एक प्रकार से उनके लिए यह वर्ष 2025 का उपहार होगा।

दशहरा उत्सव पर आयोजन के लिए संघ ने की बैठक

कोरबा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर प्रत्येक मंडल में आयोजित होने वाले विजयादशमी उत्सव एवं पथ संचलन हेतु स्वयं सेवकों की आवश्यक अनौपचारिक बैठक आर्यन पब्लिक स्कूल परिसर हरदी बाजार में संपन्न हुई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पाली खंड के हरदी बाजार मंडल में 12 अक्टूबर को विजयादशमी उत्सव एवं पथ संचलन होना तय हुआ है। बैठक में विजयादशमी उत्सव की तैयारी की समीक्षा की गई। साथ ही सभी को उनके कार्यों का आबंटन किया गया। इस अवसर पर सनातन संघर्ष समिति के जिला संयोजक श्री अजय कुमार दुबे ने अधिकतम लोगों को गणवेश पूर्ण करने का आह्वान किया। साथ ही इस कार्य में और अधिक तेजी लाने की बात कही। उन्होंने सभी से आग्रह किया, कि सभी स्वयंसेवक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के इस पुनीत कार्य में तन मन धन से लग जावें। इस अवसर पर अजय कुमार दुबे के अलावा अमरनाथ कौशिक, शशि धर सोनी, बजरंग यादव, निलेंद राठौर, सुरेन्द्र राठौर, समुंद सिंह, कानहुचरण, सरोज श्रीवास, नरेन्द्र अहिर, पंकज ध्रुवा आदि उपस्थित थे।

अजा विभाग की बैठक 10 को

कोरबा। कांग्रेस के पर्यवेक्षक आरसी खुंटिया लगातार कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक ले रहे हैं। उनके द्वारा जिला ग्रामीण, शहर, महिला कांग्रेस, युवक कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा हुई है। अजा विभाग की बैठक 10 अक्टूबर को आयोजित की गई है जिसकी तैयारी अजा विभाग के जिलाध्यक्ष नारायण कुर्रे के द्वारा की जा रही है। पिछड़ा वर्ग कांग्रेस की बैठक भी 12 अक्टूबर को आयोजित है। जिलाध्यक्ष राजेश मानिकपुरी के द्वारा भी तैयारियां करते हुए अपने सदस्यों को बैठक में आने को कहा है। 9 अक्टूबर को दीपका ब्लॉक की बैठक होगी। इस बैठक की तैयारी दिलीप सिंह, विशाल शुक्ला, सद्दाम, अनिरुद्ध सिंह सहित अन्य कार्यकर्ताओं के द्वारा की जा रही है।

छत्तीसगढ़ रजत जयंती पर बालको ने लगाया स्वास्थ्य शिविर

कोरबा। जिले में संचालित वेदांता समूह की कंपनी भारत एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको) ने छत्तीसगढ़ राज्य के रजत जयंती (25 वर्ष) उत्सव के उपलक्ष्य में छत्तीसगढ़ शासन के सहयोग से स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया। इस पहल के अंतर्गत 300 से अधिक कर्मचारियों और व्यावसायिक साझेदारों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, जो बालको की कर्मचारी कल्याण, निवारक स्वास्थ्य देखभाल और कार्यस्थल सुरक्षा के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उक्त आयोजित स्वास्थ्य शिविर में रक्तचाप एवं शुगर की जांच, नेत्र परीक्षण, सामान्य शारीरिक परीक्षण और आवश्यक दवाओं का निःशुल्क वितरण जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं। इस पहल का उद्देश्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समय पर निदान और विशेषज्ञ चिकित्सकीय परामर्श प्रदान कर कर्मचारियों में दीर्घकालिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देना था। बालको के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक राजेश कुमार ने कहा कि बालको में हमारा मानना है कि हमारे कर्मचारियों का स्वास्थ्य और सुरक्षा हमारी सफलता की सबसे बड़ी ताकत है। कंपनी में हम निवारक स्वास्थ्य देखभाल पर विशेष बल देते हैं ताकि हमारे कर्मचारी और व्यावसायिक साझेदार गुणवत्तापूर्ण जांच और समय पर चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठा सकें। यह स्वास्थ्य शिविर हमारे कर्मचारी कल्याण के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण और सुरक्षा एवं स्वास्थ्य संस्कृति को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हुए कंपनी ने एक विशेष 'फर्स्ट एड सर्टिफिकेशन प्रोग्राम' का भी आयोजन किया, जिसमें 200 से अधिक कर्मचारियों और व्यावसायिक साझेदारों को जीवन रक्षक प्राथमिक चिकित्सा कौशल का प्रशिक्षण दिया गया। इस सत्र का उद्देश्य आपातकालीन स्थिति में त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया देने की क्षमता को विकसित करना था, जिससे कार्यस्थल और समाज में जागरूकता एवं जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा मिल सके। ये पहल बालको की समग्र स्वास्थ्य एवं जीवन सुरक्षा के प्रति दीर्घकालिक दृष्टि को प्रतिबिंबित करती हैं। इसमें नियमित स्वास्थ्य जागरूकता सत्र, समय-समय पर चिकित्सा जांच, रक्तदान शिविर, टीकाकरण अभियान और संगठन के सभी स्तरों पर सुरक्षा प्रशिक्षण शामिल हैं। इन निरंतर पहलों से बालको एक सुरक्षित, स्वस्थ और सहयोगपूर्ण कार्यसंस्कृति को सशक्त बनाने के अपने संकल्प को आगे बढ़ा रहा है।

गुजराती समाज ने धूमधाम से मनाया शरद पूर्णिमा उत्सव

कोरबा। श्री गुजराती समाज द्वारा जलाराम मंदिर परिसर स्थित समाज के भवन में 7 अक्टूबर को शरद पूर्णिमा उत्सव धूमधाम से मनाया गया। भगवान कृष्ण की पूजा-अर्चना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर समाज के युवक-युवतियों सहित महिलाओं ने गरबा का भी आनंद लिया। मनोरंजक कार्यक्रम के तहत हौजी में लोगों ने अपनी किस्मत आजमाई। समाज के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी सदस्यों को शरद पूर्णिमा की बधाई दी। अंत में खीर प्रसाद का सभी सदस्यों ने लुत्फ उठाया।

विधायक प्रतिनिधि का इस्तीफा

कोरबा। रामपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक फूलसिंह राठिया के प्रतिनिधि आशीष गांगुली ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। विधायक को लिखे इस्तीफे में उन्होंने अपने इस्तीफे का कारण पारिवारिक तथा समय के अभाव को बताया है तथा कहा है कि वे विधायक प्रतिनिधि के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पारिवारिक बंधनों के कारण ढंग से नहीं कर पा रहे थे।

नए जीएम मुखर्जी के आगमन का इंतजार

कोरबा। एसईसीएल गेवरा प्रोजेक्ट के जीएम श्री सिंधु का स्थानांतरण मुख्यालय हो गया है। उनके स्थान पर पार्थ मुखर्जी नए जीएम होंगे। उनके आगमन का इंतजार यहां के कोयला कामगार कर रहे हैं। क्योंकि गेवरा प्रोजेक्ट में अनेकों समस्याएं हैं। खासकर ओटी का मामला लंबित है। ओवरटाइम करने वाले कामगारों के वेतन स्लीप में ओटी करने का उल्लेख नहीं था। इसी तरह इस क्षेत्र के अनेकों समस्याएं हैं। यूनियन प्रतिनिधि शेख चांद मंसूरी, छतराम राठौर व कुलदीप कुमार का कहना है कि संयुक्त मोर्चा के द्वारा प्रबंधन को मांगपत्र सौंपा गया था। उन मांगों को भी अभी तक पूरा नहीं किया गया है। इन सभी मामलों को नए जीएम के सामने रखा जाएगा ताकि समस्याओं को दूर किया जा सके।

पक्षी का किया शिकार युवक अब जेल में

कोरबा। हर साल मई महीने में विदेशों से छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले के कनकी गांव में पहुंचने वाले प्रवासी पक्षी 'एशियन ओपन बिल स्टार्क' (घोंघिला पक्षी) इस बार मानव क्रूरता का शिकार हो गए। कनकेश्वर धाम के पास स्थित मंदिर मोहल्ला धनुहार पारा में एक युवक द्वारा इन संरक्षित पक्षियों का शिकार किए जाने का मामला सामने आया है।

जानकारी के अनुसार समार सिंह धनवार (20 वर्ष) नामक युवक ने 6 अक्टूबर की दोपहर करीब 2 बजे गुलेल से तीन एशियन ओपन बिल स्टार्क पक्षियों को मार गिराया। उसने इनमें से एक पक्षी को पकाकर खा लिया, जबकि दो पक्षियों को अपने घर में रखा हुआ था। मुखबिर से मिली सूचना पर वन विभाग की टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए युवक के घर पर छापा मारा। तलाशी के दौरान एक मृत पक्षी और एक घायल पक्षी जिसका बायां पैर टूटा हुआ था और वह खून से लथपथ था, को बरामद किया गया।इस मामले में करतला वन परिक्षेत्र अधिकारी रघुनाथ सिंह राठिया के नेतृत्व में टीम ने कार्यवाही करते हुए आरोपी के विरुद्ध वन्यप्राणी संरक्षण अधिनियम के तहत अपराध पंजीबद्ध किया। उप वनमंडलाधिकारी सूर्यकांत सोनी के निर्देश पर आरोपी को न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, जहां से उसे न्यायिक रिमांड में जेल भेज दिया गया है।

स्वामी कौशल किशोर मिश्र की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुभाष अग्रवाल द्वारा आकाश आफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित कर तिलक मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर, कोरबा से प्रकाशित, संपादक सुभाष अग्रवाल फोन: 221149, मो. : 9425224167 आर.एन.आई. पंजी. नं. 50254/89, ई-मेल tarunpresskrb@gmail.com